CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

3/80

72

संगीत मिलन

आम्नाय-ग्रन्थालय,
[illegible] वि. [illegible]
वाराणसी-5

यालय
राणसी-५
3/80

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1- पुस्तक का नाम - " संगीत मिलन "

2- लेखक का नाम -श्री मिलनदेव नाथ

3- लेखक की आयु - 6 अप्रैल 1953

4- लेखक का पता, तथा यदि उत्तर प्रदेश के निवासी है, तो इसके सम्बन्ध में स्वयम का प्रमाण-पत्र। - संलग्नक

5- पुस्त को विधा/ विषाय संस्कृति (संगीत)

6- प्रकाशन वर्ष क्रिमिशडे, 1989

7- प्रकाशक का नाम और पता- ब्रजवासी प्रकाशन, सी 1038/37 महानगर, लखनऊ

8- लेखक का प्रमाण-पत्र संलग्नक:

मै प्रमाणित करता/करती हूँ कि मेरे द्वारा रचित ~~संगीत मिलन~~ ~~प्रथम पुस्तक~~ का प्रथम संस्करण प्रथम बार सन 1989 में प्रकाशित हुआ था इस पुस्तक का साठ प्रतिशत भाग पुस्तक के रूप में इसके पूर्व कहीं प्रकाशित नही हुआ है।

मिलन देवनाथ

लेखक के हस्ताक्षर-

पत्र-व्यवहार का पता

सी 1036/37 महानगर, लखनऊ

दिनांक: 29.3.90

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

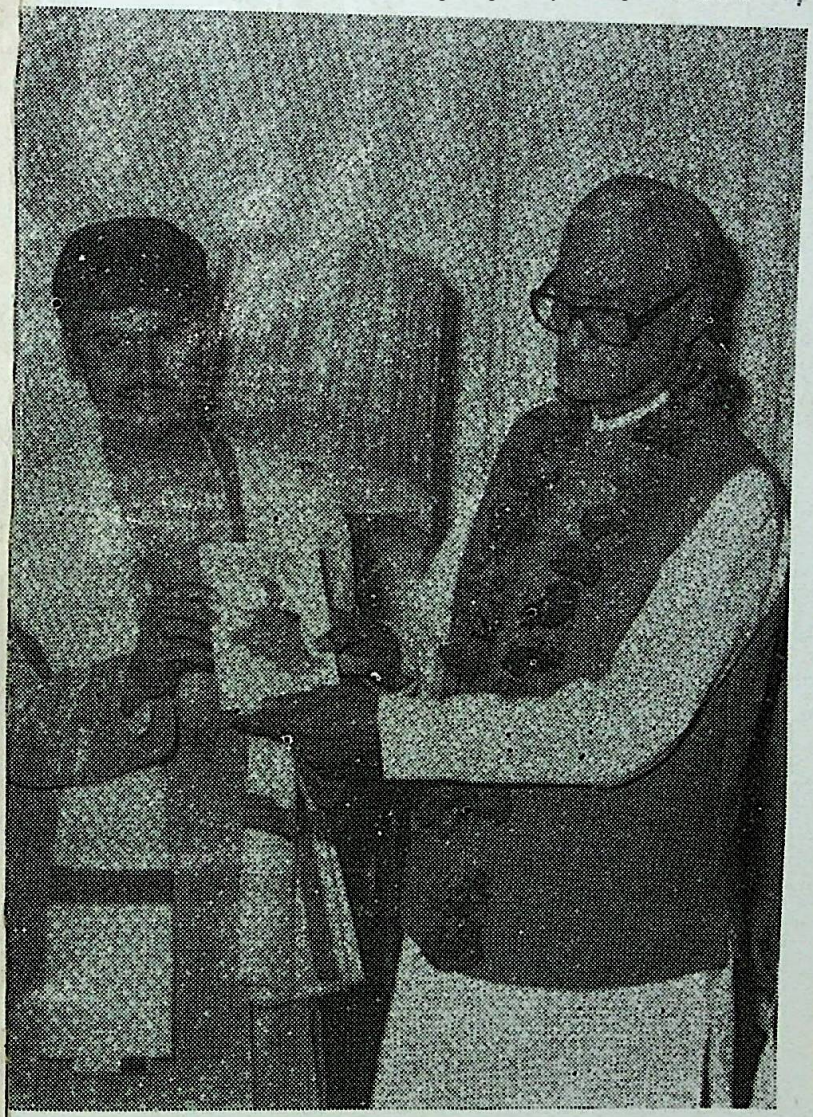

राजभवन (लखनऊ) में राज्यपाल श्री बी. सत्यनारायण रेड्डी 'संगीत मिलन' नामक पुस्तक का विमोचन करते हुये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री राज्यपाल
उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ

मार्च २१, १९९०.

प्राक्कथन

मानव-जीवन में संगीत का बड़ा महत्व है। संगीत मनोरंजन मात्र नहीं है। यह साधना है, अनुशासन है और ईश्वर प्राप्ति का एक मार्ग है।

प्राचीन काल में संगीत शिक्षण प्रशिक्षण के लिए गुरु-शिष्य परम्परा थी जो न्यूनाधिक रूप में आज भी विद्यमान है। इसी गुरु-शिष्य परम्परा प्रशिक्षण के अन्तर्गत लेखक श्री मिलन देबनाथ ने अपने गुरू उस्ताद नियाज़ अहमद-फैयाज़ अहमद जी से प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा अपनी स्वरचित बंदिशों तथा संगीत रचनाओं द्वारा एक महत्वपूर्ण पुस्तक "संगीत मिलन" लिखी है। इस पुस्तक में वे विषय सम्मिलित किये गये हैं जो संगीत की गायन अथवा वादन विधा के अनिवार्य अंग माने जाते हैं। इसके बिना संगीत का शास्त्रीय पक्ष उभर नहीं सकता।

मुझे आशा है कि संगीत में रुचि रखने वाले संगीत प्रेमियों विशेषतया छात्रों आदि के लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

श्री सत्यनारायण

(बी० सत्यनारायण रेड्डी)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

पं० गणेश प्रसाद मिश्र, प्रधानाचार्य, भातखण्डे संगीत महाविद्यालय, को मिलन देबनाथ अपनी पहली पुस्तक 'संगीत मिलन' भेंट करते हुये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पं० गणेश प्रसाद मिश्र
का० प्रधानाचार्य

दूरभाष : 242926 (का.)
240747 (आ.)
अर्धशा. पत्रसं. /बी.एम.सी.

भातखण्डे हिन्दुस्तानी
संगीत महाविद्यालय
लखनऊ

प्रस्तावना

श्री मिलन देबनाथ, भातखण्डे हिन्दुस्तानी संगीत महा विद्यालय, लखनऊ में निपुण (गायन) की विधिवत शिक्षा मुझसे प्राप्त की है। क्रियात्मक एवं शास्त्रीय दोनों ही पक्षों का इन्होंने भली-भांति साधना एवं अध्ययन किया है। "संगीत मिलन" पुस्तक इनका प्रथम सराहनीय प्रयास है जिसमें इन्होंने गुरु-शिष्य परम्परा पर प्रकाश डालते हुए प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिये अलंकारों के विविध प्रकार, तालें तथा दस आश्रय रागों के नये-नये स्वरमालिकाएं, लक्षणगीत एवं छोटे ख्याल को तान आलाप सहित समाविष्ट किया है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं श्री देबनाथ को इस पुस्तक की संरचना पर आशीर्वाद देते हुए आशा करता हूं कि भविष्य में अपनी लेखनी द्वारा नये विचार एवम् रचनाओं द्वारा संगीत जगत को नया प्रकाश देंगे।

गणेश प्रसाद मिश्र
जी० पी० मिश्र ३.१०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरु-शिष्य परम्परा शिक्षण पद्धति

संगीत मिलन

प्रथम भाग

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

ग्रंथकार

मिलन देबनाथ

प्रकाशक :

ब्रजवासी प्रकाशन

सी-१०३६/३७, महानगर, लखनऊ-६

प्रथम संस्करण

क्रिसमस डे १९८९

मूल्य

५५/-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राप्ति स्थान :

सी-१०३६/३७, महानगर
लखनऊ-२२६ ००६
फोन : ७२१४८

❀ सर्वाधिकार लेखकाधीन

❀ द्वितीय भाग मुद्रणाधीन

मुद्रक :

नेशनल आर्ट प्रेस
२०७, न्यू हैदराबाद, लखनऊ
फोन : ७०११८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, कमेटी
वाराणसी-5

PADMA SHREE USTAD
Nyaz Ahmed & Fyaz Ahmed

गुरू ही परम ब्रह्म जान ले मन ।
सब गुनियन में वे हैं गुनवान ।।
गुरू कृपा बिन कछु नहिं साधत ।
कहे गुनि मुनि वेद बखान ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सरस्वती वन्दना

स्थायी — रूपक

म – प	ग॒ रे	ध॒ म	(ग॒ रे॒ सा सा	ध॒ –	प –
शा ऽ र	दे ऽ	स ऽ	र ऽ स्व	ती ऽ	ऽ ऽ
×	२	३	×	२	३
प(नि॒)–	ध॒ ध॒	प म	म म प	ध॒ रे	ध॒ –
वि द्या ऽ	दा यि	नी ऽ	ज ग त	ज न	नी ऽ
सा ग॒ ध॒	रे॒ं रे॒ं	नि॒ –	(गं॒) – सां	ध॒ म	रेध॒ मसा
कृ ऽ पा	क रो	माँ ऽ	दी ऽ न	न प्र	तिऽ ऽऽ
सा – ध॒	प –	प ध॒	पम प ग॒	म –	रेग॒ रेसा
शा ऽ र	दे ऽ	स ऽ	रऽ ऽ स्व	ती ऽ	ऽऽ ऽऽ
×	२	३	×	२	३

अंतरा

ग) म॒ – म	नि॒) ध॒ –ध॒	सां) नि॒ नि॒	सां सां –	रे॒ं नि॒	सां सां
सं ऽ गी	ता ऽन॒	ज लि	क रूं ऽ	अ र	प ण
×	२	३	×	२	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प प ग॒	रें रें	नि॒ ध॒	सां – (ग॒)	रे॒ं रे॒ं	सां सां	
जा न त	ना ही	दू जे	स ऽ प्त	सु र	बि न	
प – नि॒	ध॒ –	प म	म म प	ग॒ रे	ग॒ –	
वं ऽ द	ना ऽ	क रूं	च र ण	तु म्हा	रे ऽ	
सा – रे॒	नि॒ सा	म –	म–प प) | ग॒म	ध॒– | ध॒-नि॒	म ध॒ | सां–	
ग॒ – रे॒ं	सां –	ध॒ पम	म – प	म ग॒	रे॒ सा	
दो ऽ माँ	शु ऽ	द्ध ऽऽ	भ ऽ क्ति	भा व	म ति	
×	२	३	×	२	३	

स्थायी :- शारदे सरस्वती विद्या दायिनी जगत जननी
कृपा करो माँ दीनन प्रति ॥

अंतरा :- संगीतांजलि करूं अरपण
जानत नाहीं दूजे सप्त सुर बिन
वन्दना करूं चरण तुम्हारे
सा – रे॒ नि॒ सा म –,म – प ग॒ म ध॒ –,ध॒–नि॒ मध॒सां–
दो माँ शुद्ध भक्ति भाव मति ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सूची-पत्र

१. समर्पण

२. प्रस्तावना

३. उस्ताद नियाज़ अहमद फैयाज़ अहमद घराना

४. शास्त्रीय संगीत

५. स्वर परिचय

६. कुछ निर्देश i–xix

७. गुरु शिष्य परम्परा—तब और अब xx–xxiv

८. अलंकार १-२०

९. कुछ तालें २०-२३

१०. अलंकारों से कुछ तालों का ज्ञान २४-३२

११. तीन स्वरों से अधिक से अधिक रचनाएं ३३-४२

१२. राग यमन में कुछ राग-भित्तिक स्वर संगतियां ४३-४९

१३. स्वरमालिकाएं ५०-६३

१४. दस थाटों के आधारित एक स्वरमालिका ६४

१५. दस विशेष स्वरमालिकाएं ६५-७४

१६. राग बिलावल ७५-७८

१७. राग अल्हैया बिलावल ७९-८४

१८. राग यमन ८५-९२

१९. राग यमन कल्याण ९२-९७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२०. राग खमाज ९७-१०२
२१. राग भैरव १०२-१०७
२२. राग काफी १०८-११३
२३. राग आसावरी ११३-११९
२४. राग भैरवी ११९-१२३
२५. राग मारवा १२४-१३०
२६. राग तोड़ी १३०-१३६
२७. राग पूर्वी १३६-१४१
२८. दस थाटों के आश्रित दस राग एक ही साथ १४२-१४५
२९. ध्रुपद–राग यमन १४५-१४६
३०. धमार–राग भैरवी १४७-१४८
३१. राग काफी (कोमल ग नि) १४८-१४९
३२. तिहाई कैसे करें १५०-१५४
३३. ध्रुपद तथा धमार की दुगुनादि निकालने की सबसे सहज तथा सरल विधि १५५-१५७
३४. ध्रुपद-धमार की दुगुनादि लयकारी तिहाई के साथ निकालने की विधि १५७.....
३५. कुछ पारिभाषिक ज्ञान .....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"संगीत मिलन"

परम पूजनीय संगीत - साधक पितृदेव श्री दुनी चाँद देबनाथ
एवं परम पूजनीय गुरुदेव सर्वश्री उस्ताद नैयाज़ अहमद-
फैयाज़ अहमद जी के चरण - कमलों में समर्पित।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रस्तावना

सृष्टि के प्रारम्भ से आज तक प्राकृतिक नियमानुसार "सृष्टि" संशोधित–परिवर्तित होकर चली आ रही है और सदा ही होती रहेगी।

संगीत इसी सृष्टि की एक ऐसी सुमधुर भाषा है जो प्राणी मात्र के संवेदनशील मन को विचलित तथा भाव - विभोर कर देती है। प्रकृति – नियमानुसार संगीत की इतिहास में भी संशोधित परिवर्तित रूप दृश्यमान है।

इसी "संशोधित–परिवर्तन" मंत्र से प्रभावित होकर मैंने परम पूजनीय गुरुदेव पद्म श्री उस्ताद नैयाज़ अहमद – फैयाज़ अहमद जी के आशीर्वाद से अपनी पुस्तक "संगीत–मिलन" में संगीत सम्बन्धित कुछ संशोधित रूप रखने की कोशिश की है।

मिलन देबनाथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उस्ताद नैयाज़ अहमद-फैयाज़ अहमद "घराना"

संगीत के विकसित क्रमविवर्तन प्रतिष्ठा में संगीत घरानों का विशेष महत्व रहा है। संगीत के विविध घरानों में "किराना घराना" का अवदान बहुत ही सराहनीय है जिसमें विश्वविख्यात संगीतज्ञ हुए हैं।

"किराना घराना" के प्रतिनिधि गायकों में इस घराने के वंशानुक्रमिक प्रतिनिधि गायक कलाकार पद्म श्री उस्ताद नैयाज़ अहमद फैयाज़ अहमद जी ने इस घराने की गायन शैली में शोध पूर्ण - संशोधित कलात्मक प्रयोग करके एक नवीनतम गायनशैली का सृजन किया है।

इसमें उन्होंने संगीत में अनावश्यक शोरगुल, भाग-दौड़ जल्दीबाज़ी के स्थान पर संगीतमय भावपूर्ण कलात्मक पक्ष को ही स्थान दिया है।

इस विशेष गायन शैली को "संगीत मिलन" में "उस्ताद नैयाज़ अहमद-फैयाज़ अहमद घराना" के नाम से मार्ग दर्शक के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूप में वरण किया गया है।

"उस्ताद नैयाज अहमद फैयाज-अहमद घराने" की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं :—

१. पूर्व स्वरिक मींड, उत्तर स्वरिक मींड, पूर्व स्वरिक कण, उत्तर स्वरिक कण की सहायता से आलाप, तान, गायन।

२. भाव प्रधान गायकी।

३. राग के न्यास स्वरों को नये-नये स्वर समूह द्वारा चैनदार मनोरंजक बढ़त।

४. बंदिशों को मध्यालय में सावलील ढंग से विशेष मात्रा पर विशेष जोर या वजन देकर लहर के साथ गाना।

५. तीन ताल में एक-तीन तथा एक-चार मात्राओं के ऊपर विशेष जोर देकर तबले के बोल को विशेष ढंग से बंदिशों में बजवाना।

६. रागों की शुद्धता तथा राग रूप पर विशेष ध्यान देना।

७. आलाप-तान गायन में षड़ज-मध्यम, षड़ज-पंचम तथा सागप संगतियों की अधिकाधिक प्रयोग।

८. वक्र गति के तानालाप द्वारा राग गायन।

९. भाव प्रधान बोल-आलाप।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०. आलाप गायन में, राग रूप तथा राग की शुद्धता को ध्यान में रखते हुए न्यास स्वरों को उसके आगे-पीछे वाले स्वरों की सहायता से आन्दोलित करना।

११. छोटा ख्याल के स्थान पर ताराना को मध्य-लय में गाना।

शास्त्रीय संगीत !!!

संगीत शिक्षक, संगीत प्रतिष्ठान तथा संगीत प्रेमियों द्वारा शास्त्रीय संगीत का प्रचार-प्रसार अत्यन्त प्रशंसनीय है—

किन्तु शास्त्रीय संगीत का वर्तमान स्तर.....???

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वर-परिचय

स्वर चिन्ह

शुद्ध अथवा प्राकृत स्वर :- सा रे ग म ...

कोमल स्वर :- रे ग ध नि

तीव्र स्वर :- मं

सप्तक चिन्ह

मध्य सप्तक :- सा रे ग म ...

मन्द्र सप्तक :- नि ध प ...

तार सप्तक :- सां रें गं ...

स्वर मान

एक मात्रा :- सा रे ग म

डेढ़ मात्रा :- सा -रे (यहां सा डेढ़ मात्रा है तथा रे आधी मात्रा है।)

दो मात्रा :- सा- रे- ग- ...

तीन मात्रा :- सा-- रे-- ग-- ...

आधी मात्रा :- रेम गप मध ...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

१/३ मात्रा :- सारेग रेगम ...

चौथाई मात्रा :- सारेगम रेगमप ...

अर्द्ध विराम :- सा, रेग रे, गम ...

ताल चिन्ह

सम :- ×

ताली :- २, ३, ४

खाली :- ०

विभाग :- ।

स्वर - सौन्दर्य

मींड :- मरे पग ...

करण :- सा रे ग म ...

खटका :- (सा) सारेनिसा ...

झटका :- सा नि रे सा रे ग ...

गीत उच्चारण :- श्या ऽ ऽ म ...

करण स्वरिक मींड :- सा रे) ग) म) रे ग ...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्व स्वरिक मींड :- सा (नि) रे (सा) ग (रे) ...

उत्तर स्वरिक मींड :- सा (रे) रे (ग) ग (म) ...

श्रीसीमा स्वरिक कण :- सा* = निसारेसानि ...

पूर्व कण स्वरिक मींड :- नि (सां) ध (रें) सां नि ...

अर्चित स्वरिक कण :- [रे] = रेऽऽ = रेगरे ...

ब्रज स्वरिक मींड :- ग = गऽऽऽ = मगमग ...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुछ निर्देश

****

संगीत के विद्यार्थियों और संगीत शिक्षकों के लिए।

१. प्रत्येक राग का स्वर विस्तार करते समय किसी भी ताल के बिलंबित अथवा मध्य लय में गाये जाने पर एक मात्रा की गति क्रमानुसार चार सेकेंड और एक सेकेंड के बराबर होगी।

यथा :– बिलंबित ख्याल के एक मात्रा चार सेकेंड तथा मध्यलय ख्याल की एक मात्रा एक सेकेंड के बराबर होगी।

२. प्रत्येक आलाप यथा सम्भव मींड प्रधान अंग से गाया जायेगा।

३. प्रत्येक आलाप के न्यास स्वर जिसमें न्यास करना आवश्यक है, जैसे सा—रे—ग—म—प— आदि, उस आलाप का पहला न्यास स्वर में कम से कम पाँच सेकेंड न्यास करना चाहिए। इसके बाद बाकी स्वरों में जिस स्वर के आगे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस प्रकार चिन्ह "—" दिया हुआ है डेढ़ से दो सेकेंड तक न्यास देते हुए आलाप गाना चाहिए।

४. प्रत्येक आलाप के स्वरों को (एकाधिक) जैसे :— "नि़ सा नी़ ऩ रे सा नी़ ला—" को गाने की गति डेढ़ से दो सेकेंड के (कभी कभी) बराबर होगी। अधिक समय एक सेकेंड के गति के बराबर में दो स्वर अथवा चार स्वरों को गाया जायेगा।

५. अच्छी प्रगति के लिए प्रत्येक ताल को विलंबित लय में एक-एक मात्रा को चार-चार सेकेंड बराबर के गति में तथा मध्य लय में एक-एक सेकेंड बराबर की गति में बोलकर नियमित अभ्यास करना चाहिए।

६. एक श्वांस में जितना अधिक सम्भव हो विद्यार्थियों को आलाप, तान तथा गाना गाकर अभ्यास करना चाहिए। ताकि स्वरों में अथवा गाने में आपस में बराबर संगति बनी रहे।

७. विद्यार्थियों को अधिक से अधिक प्रत्येक राग का आरोह-अवरोह, स्वरमालिका तथा लक्षण गीत नियमित अभ्यास करना चाहिए।

८. इस पुस्तक में दी गई सभी चीजें जैसे प्रत्येक राग का आरोह-अवरोह, स्वरमालिका, लक्षण गीत, बंदिशें, आलाप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तानों में दी गई इस प्रकार के चिन्ह जैसे – "," "—", आधी मात्रा की चिन्ह ("सा"), मींड सां ध, खटका(सां), कण सां, झटका नीसां', (तेज गति में झटके से गाना) इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए नियमित अभ्यास करना अति आवश्यक है।

९. इस पुस्तक में दी गई चीजें जैसे आरोह - अवरोह, स्वर-मालिका, लक्षण गीत, बंदिशें तथा रागों की शुद्धता को ध्यान में रखते हुए इन सभी चीजों में सौन्दर्य लाने के लिए विद्यार्थियों को अपनी कला से सजाने की पूरी अनुमति है।

१०. बंदिशों में "कण स्वरिक मींड" जैसे— नी ध) तथा "अगला कण स्वरिक मींड" जैसे राग पटदीप के लक्षण गीत में "सुजान" की स्वरलिपि ("नी (सां धनी सां") में नि से ध के ऊपर सां कण स्वर तक मींड खींची गई है जो कि बंदिशों में इन दो स्वरों का बहुत ही महत्व है।

११. प्रत्येक आलाप में जहां पर किसी स्वर के आगे "—" इस प्रकार चिन्ह है उस स्वर को उसके आगे वाले स्वर के कण लेते हुए कभी कभी कोमलता पूर्वक आंदोलित की जा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सकती है या करनी चाहिए।

किन्तु इसके लिए यह ध्यान देना आवश्यक है कि जिस स्वर को आंदोलित की जाएगी उस स्वर के आगे वाले स्वर उस राग में या उस राग के आरोह-अवरोह में हैं या नहीं।

आंदोलन करने के लिए उस स्वर से आगे तीन स्वर तक उसकी सीमा है जैसे-ग से प तक।

१२. आलाप अथवा तानों के स्वरों को कहने अथवा गाने के विशेष एक ढंग या अंदाज जो इस प्रकार है—राग माल-कौंस में सा (ग॒) (म) (ध॒) (नी॒) (सां) ग॒ म ध॒ नी॒ सां। इन स्वरों को जैसे सा ग॒ म को गाने के लिए सा पर ग॒ की, ग॒ पर म की तथा म पर ध॒ की "कण स्वरिक मींड" देते हुए गाना चाहिए। तब ही स्वरों में सौन्दर्य तथा लोच आयेगी।

१३. कभी कभी कुछ स्वरों को कहना वही किन्तु स्वर समूह होंगे कुछ और। जैसे—सा-(म) ग॒ म* (ग॒मध॒म) यहाँ पर म को ग॒ से म उच्चारण करते हुए ही कहना है और म ध॒ म को "आकार" में कहना है। यहाँ पर ध्यान देना आवश्यक है कि यह पूरी क्रिया ही स्वरों में आपस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में संगति रखते हुए एक साथ एक सेकेंड की गति में होगी। जैसे—

सा ग म ग सा नी (ध नी) नी (ध सा नी) ध—।

१४. दूसरे प्रकार का एक और उदाहरण — जैसे – सागम ग (मग मग)। यहाँ पर भी "ग" ही कहना है किन्तु ग को म से उच्चारण करते हुए ग तक मींड के अन्दाज से आना होगा। उदाहरण –

मनीध मध ग (मग मग), सामम नीसा ध (नीध नीध)।

१५. अचित स्वरिक करण :– [रे] (रेगरे)। यहाँ पर रेगरे में रे कहते हुए गरे को "ए-कार" के अन्दाज में रे-ए-ए (रे एकगुन लय में और गरे दुगुन लय में) उच्चारण करना है। किसी भी स्वर को इस प्रक्रिया से गाया जा सकता है।

इस प्रक्रिया में विशेष कोई स्वर (जिसे गाना है) फिर इसका आगे वाला स्वर फिर वही स्वर आता है। इस क्रिया में आगे वाले स्वर के लिए तीन स्वर तक ही सीमित रहना चाहिए। जैसे रे के लिए म तक। ये प्रक्रिया तान या आलाप में समान प्रकार से आती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६. त्रीसीमा स्वरिक करण :- नी़ (ध़नी़सानी़)।

यहाँ पर ध़नी़सानी़ को नी़ कहते हुए "इ-कार" के अन्दाज़ में उच्चारण करना है। कोई भी स्वर इस प्रक्रिया से गाया जा सकता है।

इस प्रक्रिया में विशेष कोई स्वर (जसे गाना है) इसका पहला वाला स्वर, इसका आगे वाला, फिर वही स्वर आता है।

१३ नम्बर के वर्णन में त्रीसीमा स्वरिक करण की व्याख्या की गई है।

१७. संगीत विद्यार्थियों को चाहिए कि किसी राग का आलाप और तानों की बढ़त की स्वाभाविक प्रक्रिया को जारी रखते हुए कभी-कभी बीच-बीच में "सा ग प, रे म ध, ग प नी, म ध सां, प नी रें, ध सां गं और नी रें में" इस प्रकार की स्वर संगति आलाप या तान करते समय प्रयोग करें। इससे राग-आलाप और तानें और अधिक श्रुति मधुर होंगी।

१८. शिक्षकों को चाहिए कि विद्यार्थियों को किसी राग की कोई बंदिश या आलाप तान सिखाने के पहले भली भांति शुद्ध स्वरों के अलंकारों से लगातार कम से कम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन महीने तक अभ्यास करवायें। इससे विद्यार्थियों को स्वरों की अच्छी जानकारी होगी।

१९. प्रत्येक विद्यार्थी को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह किसी राग में जो भी बंदिश या गाना सीखा हो उस बंदिश या गाने को राग रूप मानते हुए आलाप और तानें गायें।

बंदिश में जो-जो स्वर संगति आती है आलाप और तानों में भी वही स्वर संगति होनी चाहिए। अन्यथा राग रूप नष्ट हो सकता है और जानकारों को उलझन सी महसूस हो सकती है क्योंकि कोई भी बंदिश किसी भी राग का मूल आधार होता है। लेकिन साधारण विद्यार्थी तो दूर की बात, अच्छे अच्छे शिक्षक भी इस बात से बेखबर रहते हैं।

उदाहरण के लिये श्याम कल्याण की दो बंदिशें जैसे "जियो मेरो लाल" तथा "पार्वती नाथ", (क्रमिक पुस्तक मालिका भातखण्डे भाग ५) इन दोनों बंदिशों में ही "मग-ग निसा" ये स्वर संगति बार-बार सुनने को मिलती है क्योंकि ये बंदिशों के मुखड़े हैं।

किन्तु यहां पर मजेदार बात यह है कि न भातखण्डे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जी ने स्वयं अपनी पुस्तक के आलाप में "मग–ग रे निसा" इस स्वर संगति का उल्लेख किया और न ही कोई अदूर-दर्शी संगीत शिक्षक अपने विद्यार्थियों को इस बात से अवगत करवाते हैं।

किन्तु जहां तक मेरा विचार है कोई भी विद्यार्थी स्वयं को सम्पूर्ण रूप से शिक्षक पर समर्पित न करके अपने दिमाग और बुद्धि को सतर्क रखते हुए शास्त्रीय संगीत शिक्षा शुरू करे।

यह सम्भव है कि विभिन्न घरानों में श्याम कल्याण के विभिन्न रूप हो सकते हैं। जैसे कुछ घरानों के अनुसार श्याम कल्याण राग का स्वरूप इस प्रकार है:– निसा—मरे—रेनिसारेम—प—धमपनि — मपनिसांनि — पसां—निसांरेंनिसां—निधप—धमप—रेमपधमप — गमप गमरे—निसा—।

अब शिक्षक अथवा विद्यार्थी जिस घराने का भी श्याम कल्याण अपनाना चाहे, अपना या गा सकते हैं। किन्तु जिस रूप का भी श्याम कल्याण गायेंगे उसी रूप के आधार पर बंदिश भी होनी चाहिए।

२०. इस प्रकार अनेक राग हैं–जो विभिन्न घरानों में विभिन्न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूप से गाये-बजाये जाते हैं—जैसे शुद्ध सारंग कुछ घरानों में कल्याण थाट के आधार पर और कुछ घरानों में काफी थाट के आधार पर गाया-बजाया जाता है। जैसे राग बिहाग कुछ घरानों में कल्याण थाट से और कुछ घरानों में बिलावल थाट के आधार पर गाया बजाया जाता है। जैसे राग कौसिक कंहाड़ा, कुछ कलाकार इस राग के अवरोह में कंहाड़ा अंग का धनिप-मगरेसा प्रयोग करके गाते हैं और कुछ कलाकार अवरोह में सांनिधप मगरेसा प्रयोग करके गाते-बजाते हैं। यहां पर खेद की बात यह है कि कुछ कलाकार बंदिश एक रूप का और आलाप-तान दूसरे प्रकार का गाते-बजाते हैं, जो नहीं होना चाहिए।

ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं किन्तु विद्यार्थी तथा शिक्षकों को ध्यान रखना चाहिए कि जो भी राग चाहे जिस अंग से गायें, उस राग के मूल स्वर-संगतियों के आधार पर उस राग की बंदिश होनी चाहिए तथा उस राग का स्वर-विस्तार एवं तान-आलाप होना चाहिए।

२१. विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को ऐसी बंदिश का चयन करके सीखना या सिखाना चाहिए जो बंदिश की पहली लाईन पर ही राग का रूप स्पष्ट मालुम पड़े। क्योंकि राग का स्वर-विस्तार जब आलाप और तानों से किया जाता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है तब पूरी बंदिश नहीं बल्कि बंदिश की पहली लाईन ही बार बार गाई जाती है ।

यहाँ पर ध्यान रहे कि बंदिश की पहली लाईन पर राग-रूप होना अति आवश्यक है ।

कुछ विद्यार्थी एवं शिक्षक ऐसी बंदिशें गाते-बजाते हुए सुनाई देते हैं जो बंदिश की पहली लाईन पर प्रकट राग-रूप नहीं मालूम देता । किन्तु ऐसा कदापि नहीं होना चाहिए ।

उदाहरण के लिए भातखण्डे की "क्रमिक पुस्तक मालिका भाग दो" में यमन कल्याण की बंदिश "अब गुन न कीजिए" लिया जा सकता है । इस बंदिश की पहली लाईन में पूरा ही यमन राग का रूप झलकता है। अब आलाप तानों को गाते समय पहली लाईन ही गाई जायेगी । अब आलाप - तान यमन कल्याण की जैसे - नि़रेग—मंग—रेगमग—पमंग—पमंधमंगमग—रेगरे मंगमंगप—मंगरे गमग—नि़रेगमं (प)—रे—सा— ।

अब जब आलाप के बाद बंदिश की पहली लाईन गाई जाएगी तब इसमें यमन का रूप सामने आता है न की यमन कल्याण का । अर्थात यहाँ पर आलाप तथा बंदिश के मुखड़े (अब गुन न कीजिए) में समानता नहीं रहती ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यहाँ पर विद्यार्थियों को एक बात अच्छी तरह से ध्यान रहे कि हर आलाप–तान शुद्ध मध्यम के बराबर प्रयोग के बिना यमन-कल्याण की आलाप या तानें नहीं हो सकती। यमन–कल्याण में शुद्ध मध्यम अनुवादी स्वर है। शुद्ध मध्यम के बिना आलाप या तानें यमन कल्याण की नहीं बल्कि यमन की होंगी। क्योंकि शुद्ध मध्यम से ही यमन और यमन कल्याण का रूप अलग होता है।

२२. और एक उदाहरण :– जी-एन् नातू कृत "गीत-समूह" में बसंत-बहार की एक बंदिश "विकसत नव पातलों ने" में भी पहली लाईन पूरी ही राग "बसंत" पर आधारित है और दूसरी लाईन राग "बहार" में। अब जब विद्यार्थी आलाप तानें गायेंगे तो पहली लाईन को ही बार बार पुनरावर्तन करेंगे जो पूरा ही बसंत पर आधारित है। अब जानकार श्रोताओं को कैसी उलझन महसूस होती होगी जब वे "बसंत-बहार" में आधारित बंदिश की पहली लाईन (जो कि बसंत में है) का पुनरावर्तन और उसके बाद उसमें बसंत – बहार की आलाप – तानें सुनते हैं।

२३. ऐसी ही बंदिश का (नई रुत नई) उदाहरण हमें "क्रमिक पुस्तक मालिका भाग चार" में देखने को मिलता है जो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि राग बहार में है। इस विलंबित बंदिश में बागेश्री की स्वर-संगति इस हद तक दी गई है जो कुल मिलाकर बहार न होकर पूरा ही बागेश्री-बहार लगता है। ऐसी बंदिशें सिखाकर विद्यार्थियों को उचित शिक्षा से वंचित रखा जाता है।

२४. कुछ विद्वान यमन-कल्याण में शुद्ध मध्यम को और केदार में तीव्र मध्यम को विवादी स्वर मानते हैं। पर यह विचार बिलकुल ही निराधार है। क्योंकि शुद्ध मध्यम के बिना यमन-कल्याण हो ही नहीं सकता और केदार में भी तीव्र मध्यम (करीब हर आलाप में) एकाधिक बार प्रयोग किया जाता है। और विद्वान लोग यह भूल जाते हैं कि पूरे राग के स्वर-विस्तार में विवादी स्वर एक-आध बार ही प्रयोग किया जाता है।

२५. संगीत विद्यार्थियों और संगीत शिक्षकों को चाहिए कि किसी राग का आलाप और तानों की बढ़त की स्वाभाविक प्रक्रिया को जारी रखते हुए कभी-कभी बीच-बीच में सा ग प रे म ध ग प नि म ध सां प नि रें ध सां गं और निरेंमं इस प्रकार की स्वर संगति आलाप या तानें करते समय प्रयोग करें। इससे रागालाप और तानें और भी श्रुति-मधुर होंगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२६. अचित स्वरिक कण :- [रे] रे ऽ ऽ (रेगरे) यहाँ पर रेगरे, रे कहते हुए गरे को "ए-कार" के अन्दाज में "रे-ए-ए" (रे एक गुन में और गरे दुगुन में) उच्चारण करना है। इसमें विशेष कोई स्वर फिर इसका आगे वाला स्वर फिर वही स्वर आता है। आगे वाले स्वर के लिए तीन स्वर तक ही सीमित रहना है। यह प्रक्रिया तानें या आलाप में समान प्रकार से आती है।

अचित स्वरिक कण लेते हुए राग यमन में एक तान :—

निरेग [रे] (रेगरे) रेगमं [ग] (गमंग) गमंध[मं] (मंधमं) मंधनि [ध] (धनिध) धनिरें [नि] (निरेंनि) निरेंगं [रें] (रेंगंरें) नि [ध] (धनिध) मं [ग](गमंग) रेगमंधनिसां निधपमंगरेसा—।

२७. शिक्षकों को चाहिए कि विद्यार्थियों को कोई राग या बंदिश सिखाने से पहले भली भाँति शुद्ध तथा कोमल स्वरों से अलंकारों को लगातार कम से कम तीन महीने तक अभ्यास करवायें।

२८. कोई भी बंदिश गाते समय (मध्यलय हो या विलंबित) उसके शब्द के अर्थ को ध्यान में रखते हुए गाना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुछ विद्यार्थी तथा शिक्षक इस बात से किस हद तक उदासीन अर्थात बन्द दिमाग के रहते हैं इसके दो-चार उदाहरण देखिए :-

राग मालकौंस में एक विलंबित बंदिश जिसके शब्द हैं "पग लागन दे"। लेकिन जब वे लोग इस बंदिश को गाते हैं तब इसका विकृत रूप आता है "पगला गन दे" होकर।

राग शंकरा में एक बंदिश जिसके शब्द हैं "सो जानूं रे जानूं"। लेकिन गाते समय इसका विकृत रूप करते हैं "सोजा नूंरेजा नूं"।

राग जैतश्री में एक बंदिश जिसके शब्द हैं "तेहारे दरस की आस बढ़ी"। गाते समय इसका विकृत रूप करते हैं "तेहा रेदर सकिआ सबढ़ी"।

इस प्रकार बहुत सारी विलंबित तथा मध्यलय की बंदिशें हैं जिसको गाते समय वे लोग शब्दों को तोड़-मरोड़ करते रहते हैं।

यहाँ पर विद्यार्थी तथा शिक्षकों को चाहिए कि कोई भी बंदिश गाते समय शब्दों का ध्यान रखें ताकि शब्दों का अर्थ विकृत न हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बंदिशें गाते समय श्वाँस पर विशेष ध्यान दीजिए। एक श्वाँस में उतने ही शब्दों को गायें जितने कि सम्भव हो।

२९. मिश्रित राग जिसमें स्वरों के अदल-बदल से, जैसे राग यमन में शुद्ध मध्यम को जोड़कर यमन-कल्याण बनता है, राग बिलावल के अवरोह में कोमल निषाद प्रयोग करके अल्हैया बिलावल बनता है, आसावरी के आरोह में कोमल निषाद जोड़कर जौनपुरी बनता है....., और एकाधिक रागों के मिश्रण से जो राग बनते हैं जैसे शुद्ध कल्याण जिसमें भूपाली तथा यमन राग का मिश्रण है, जैतश्री जिसमें जैत तथा श्री राग का मिश्रण है, गांधारी जिसमें जौनपुरी तथा भैरवी राग का मिश्रण है, बसंत-मुखारी जिसमें भैरव तथा भैरवी राग का मिश्रण है, कौसिक - कन्हाड़ा जिसमें मालकौंस तथा दरबारी कन्हाड़ा राग का मिश्रण है, भैरव-बहार जिसमें भैरव तथा बहार राग का मिश्रण है, पूरिया कल्याण जिसमें पूरिया तथा कल्याण यानी यमन राग का मिश्रण है..... इस प्रकार के राग गाना या बजाना बहुत ही मुश्किल होता है।

कुछ कलाकार इन सब रागों को ऐसे पेश करते हैं कि यमन कल्याण गाते समय यमन राग में ही खो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाते हैं और भूल जाते हैं कि शुद्ध मध्यम का भी प्रयोग करना है।

जब शुद्ध कल्याण पेश करते हैं तो भूपाली में ही लीन हो जाते हैं और यमन को काफी देर तक के लिए भूल जाते हैं। जब पूरिया-कल्याण गाते हैं तो कभी पूरिया ही पूरिया और कभी यमन ही यमन गाते रहते हैं।

इन सब रागों को इस प्रकार पेश करते हैं कि भूल जाते हैं ये सब राग मिश्र जाति के हैं।

यहाँ पर विद्यार्थी तथा शिक्षकों को ध्यान रखना चाहिए कि इस प्रकार मिश्र जाति का राग सीखते-सिखाते समय राग की बंदिश, आलाप-तानें इस प्रकार हों कि जितने भी रागों के मिश्रण से कोई राग बनता है उसमें उन सब रागों को इस प्रकार मिलाएं कि यह मालुम पड़े कि रागों को मिश्रित करने के बाद एक स्वतंत्र राग बना है।

ऐसा कदापि न हो कि शुद्ध कल्याण गाते समय कभी भूपाली गाते रहें तो कभी यमन। दोनों रागों को इस प्रकार मिलाइये कि यह भी पता न चले आप दो रागों का मिश्रण कर रहे हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३०. कुछ कलाकार मिश्र जाति के रागों में कुछ ऐसी विलंबित तथा मध्यलय की बंदिशें गाते–बजाते हैं जिसके मुखड़े अथवा पहली लाईन एक ही राग में होती है। जैसे पूरिया कल्याण में पूरिया से ही बना मुखड़ा अथवा यमन से बना मुखड़ा। विद्यार्थी तथा शिक्षक इस प्रकार की बंदिशें गाने-बजाने के लिए कदापि चयन न करें।

३१. कभी-कभी कुछ विद्यार्थी तथा शिक्षक यहाँ तक कि कभी-कभी अच्छे-अच्छे कलाकार भी किसी राग में बोल-आलाप, बोल तान तथा तिहाई लेते समय बंदिश के शब्दों को अर्थहीन विकृत करते रहते हैं। इस विकृत रूप से दूर रहिए।

३२. कुछ विद्यार्थी तथा शिक्षक बंदिश में सीमित मात्राओं की तानें (जैसे १६ मात्रायें, १२ मात्रायें अथवा ८ मात्रायें) गाते समय बंदिश के शब्दों को तोड़ते रहते हैं।

यहाँ पर विद्यार्थी तथा शिक्षकों को चाहिए कि बंदिश के शब्दों को विकृत न करके तानों की मात्रा संख्या को ही कम ज्यादा करके गायें।

३३. कभी कभी विलंबित तथा मध्यलय बंदिशों की पहली लाईन में अपूर्ण शब्द देखे जाते हैं। जैसे राग भैरव में एक विलंबित बंदिश "बिना हरि कौन खबर लेत"।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यहाँ पर "ख़बर" शब्द का "र" अक्षर दूसरी लाईन पर है। जब विद्यार्थी पहली लाईन की पुनरावृत्ति करते हैं तब "ख़बर" का "र" छोड़कर "ख़ब" गाते रहते हैं जो कि अर्थहीन अश्राव्य है।

भैरवी की मध्यलय की एक बंदिश "कैसी ये भलाई रे"। इस बंदिश में पहली लाईन "पनिया भ" तक है। भैरवी राग की इस बंदिश को गाते समय इसकी पहली लाईन की पुनरावृत्ति कैसे करें? ऐसी बंदिश क्यों?

राग गौड़ सारंग में एक विलंबित बंदिश "पाती झर गैयां" जिसकी पहली लाईन में "बेलरियां" शब्द का "बे" अक्षर तथा दूसरी लाईन में इसका बाकी आधा हिस्सा रखा गया है।

कुछ विद्यार्थी तथा शिक्षक इस बंदिश को जब गाते हैं तब इसकी पहली लाईन को पुनरावृत्ति करते समय "पाती झर गैयां बे" तक ही गाते हैं।

राग नायकी कन्हाड़ा में मध्यलय की एक बंदिश "सजन बिन भई निराश हूं"। इसकी पहली लाईन में "कहो" एक शब्द भी है जो वास्तव में दूसरी लाईन गाते समय ही गाना चाहिए। किन्तु कुछ विद्यार्थी तथा शिक्षक इस बंदिश की पहली लाईन की पुनरावृत्ति करते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समय "सजन बिन भई निराश हूं कहो" तक गाते रहते हैं।

इस प्रकार की बहुत सारी बंदिशें हैं जिसकी पहली लाईन के अक्षर अथवा शब्द दूसरी लाईन में और दूसरी लाईन के अक्षर अथवा शब्द पहली लाईन में आये हैं।

यहाँ पर विद्यार्थी तथा शिक्षकों को चाहिए कि ऊपर उदाहरण के स्तर पर दिये गये जटिल बंदिशों के स्थान पर सहज-सरल बंदिश ही सीखें तथा सिखायें। और यदि कोई चाहे तो शुद्ध राग-रूप बनाए रखते हुए शब्दों को कम-ज्यादा करके ही उपरोक्त जटिल बंदिशें सीखें अथवा सिखायें।

ऊपर दी गई सभी उदाहरण-स्वरूप बंदिशें "भातखंडे क्रमिक पुस्तक मालिका" से ली गयी हैं।

३४. मिश्र जाति का राग जैसे पूरिया कल्याण जिसमें पूरिया तथा यमन राग का मिश्रण है उसमें यमन का शुद्ध रिषभ क्यों छोड़ दिया गया है — समझ में नहीं आता। जबकि बसंत-बहार जिसमें बसंत और बहार राग का मिश्रण है उसमें बसंत तथा बहार के पूरे पूरे स्वर यानी बारह स्वरों से गाया बजाया जाता है। इस विषय में विचार करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरु - शिष्य परम्परा—तब और अब—कैसी थी और कैसी है — कितनी शुद्ध और कितनी कलुषित-!!!

भरत युग से आज तक संगीत जगत में संगीत की जो क्रम विर्वतित प्रतिष्ठा हुई है उसके पीछे पवित्र गुरु-शिष्य परम्परा का ही मूल अवदान रहा है। "गुरु-शिष्य परम्परा" के इस पवित्र बंधन से ही संगीत जगत में महान संगीतज्ञ हुये हैं।

यह वेद वाक्य है कि सच्चे गुरू तथा पवित्र गुरु-भक्ति बिना किसी भी क्षेत्र में सच्चा ज्ञान प्राप्त होना कभी भी सम्भव नहीं है। संगीत तो सर्व कलाओं का शिरोमणि है। शायद इसी कारण ज्ञान की देवी स्वयं ही वीणा वादिनी हैं और विश्व-ब्रह्माण्ड स्वामी स्वयं मुरलीधर।

सही मायने में गुरु - शिष्य परम्परा (घराना) से ही संगीत का वास्तविक विकास हुआ है। किन्तु आजकल इस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परम्परा का अत्यधिक अभाव होने के कारण संगीत का वास्तविक स्तर कहाँ तक गिर चुका है इसकी चर्चा गुनीजनों में निश्चय ही होती होगी। संगीत की इस अवनति के पीछे मूल कारण क्या है ? कहाँ हैं वे संगीत साधक — कहाँ है वह संगीत साधना.....?

"संगीत" अब मनोरंजन तथा जीवन-यापन का एक माध्यम बन चुका है। आजकल प्रायः हर अली-गली में संगीत गुरू मिल जाते हैं। चाहे उन्हें संगीत का सही ज्ञान हो या न हो। लेकिन होते हैं वे बड़ी बड़ी डिग्री वाले।

आजकल स्कूल-कालेज में ऐसे बड़े बड़े संगीत गुरू ऐसी संगीत शिक्षा देते हैं जो सुनने के बाद संगीत के अंधकारमय भविष्य के बारे में सोचकर बहुत ही दुःख तथा अफसोस होता है। हाय रे शास्त्रीय संगीत...!!

विद्यार्थी तो विद्यार्थी ही है किन्तु कुछ ऐसे संगीत शिक्षक (गुरूजी) हैं जो कि अपने आपको महान संगीतज्ञ मानते हैं, शिष्यों से अपने को गुरूजी कहलवाते हैं और सही संगीत शिक्षा के लिए आशीर्वाद यानी पद-रज लेने को कहते हैं। उन महान संगीत गुरुओं के संगीत शिक्षा देने के कुछ नमूने देखिए :—

i) शुद्ध मध्यम बिना यमन कल्याण गाना जबकि कहते हैं शुद्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मध्यम से ही यमन से यमन कल्याण बनता है। ii) केदार में तीव्र मध्यम को विवादी स्वर मानना जो कि प्रायः प्रत्येक आलाप में प्रयोग किया करते हैं। iii) बिलावल थाट के विहाग में तीव्र मध्यम का बाहुल्य प्रयोग करना। iv) बंदिश के शब्दों को तोड़-मरोड़ करना। v) मिश्र जाति के रागों को मनमाने ढंग से, जैसे शुद्ध कल्याण गाते समय भूपाली गाना। vi) बंदिश में ली गई स्वर संगतिओं को आलाप-तान में न लेना। vii) राग-रूप एक प्रकार तथा आलाप तान दूसरे प्रकार का गाना। viii) बंदिश में जिन स्वरों का प्रयोग नहीं है आलाप तान में उनका बाहुल्य प्रयोग करना—जैसे मालश्री "करत हो सिंगार" बंदिश में। ix) राग बहार में एक विलंबित बंदिश "नई रुत नई" जिसमें बागेश्री का रूप यहाँ तक है कि इस बंदिश को बहार के स्थान पर बागेश्री बहार की बंदिश कही जा सकती है—ऐसी बंदिश गाना। x) राग गायनमें बंदिश का भूल चयन करना-जैसे अल्हैया बिलावलमें एक बंदिश "मन हरवा" जिसमें पहली लाईन तो दूर की बात पूरी स्थायी ही बिलावल राग की है। कोमल निषाद है कहाँ, जिससे अल्हैया बनता हैं ? xi) कभी कभी तो उन्हें ही नहीं पता चलता है कि उन्होंने क्या सिखाया है अथवा सिखा रहे हैं जैसे गौड़ मल्हार में तीव्र मध्यम तथा भीम पलासी में शुद्ध निषाद का प्रयोग कर लेना। xii) समझाते हैं एक प्रकार से, सिखाते हैं दूसरे प्रकार से और गाते हैं तीसरे प्रकार से।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस प्रकार के अनेक एक से एक बहादुरी के कारनामे हैं ऐसे महान संगीत गुरुओं के जो संगीत प्रतिष्ठा के पदस्खलन में सहायता कर रहे हैं।

किसकी इतनी हिम्मत कोई इनसे कहे कि ये सब संगीत का सर्वनाश कर रहे हैं। यदि कोई इनसे हिम्मत करके पूछ भी ले तो वे कहते हैं "हमने सालों गुरू की सेवा करके जो कुछ, जिस प्रकार सीखा है वही तुम्हें सिखा रहा हूं। ये सब चीजें हमें गुरु-शिष्य परम्परा से मिली हैं। सीख लो—बहुत अच्छी चीजें हैं।"

दुःख की बात यह है कि बहुत ऐसे भी संगीत विद्यार्थी, संगीत प्रेमी हैं जो समझदार ज्ञानी-गुनि होते हुए भी ऐसे सब गुरुओं के अंध-भक्त बन जाते हैं। भूल शिक्षा मिल रही है जानते हुए भी कोई कुछ कह नहीं पाते या कहते नहीं। यह तो ऐसा ही हुआ "आ बैल मुझे मार।"

यदि गुरु शिष्य परम्परा से उन्हें ऐसी शिक्षा मिली है तो वह कौन सी गुरु-शिष्य परम्परा थी जिस शिक्षा से सैकड़ों सालों से संगीत के परिवर्तित विकास में महान महान संगीतज्ञ हुए थे और आज भी हैं ?

आजकल स्कूल कालेज संगीत शिक्षा के प्रचार-प्रसार में सराहनीय भूमिका निभा रहे हैं। किन्तु वहाँ पर संगीत की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वास्तविक शिक्षा संगीत विद्यार्थियों को नहीं मिल रही है। साथ में गुरु शिष्य परम्परा से सीखे हुए कुछ अदूरदर्शी "लकीर के फकीर" संगीत शिक्षक जिन्होंने गुरू के बताये हुये ज्ञान को कभी परखा नहीं वे कभी भी सच्चे शिष्य अथवा सच्चे गुरू नहीं हो सकते हैं। जो स्वयं अन्धकार में हो वह दूसरों को क्या रश्मि दिखायेंगे ? वही बात होगी न "अन्धे चले राही को राह दिखाने"!! वे कैसे गुरू हैं जो सूर्य को चन्द्रमा बतावें और वह कैसा शिष्य है जो मन में शंका छुपाए हुए गुरू वाक्य को वेद वाक्य मानकर सूर्य को चन्द्रमा कहें? यहाँ तो गुरू और शिष्य दोनों ही एक दूसरे के अन्त हैं।

"सच्चे गुरू तथा पवित्र गुरू भक्ति" द्वारा गुरू शिष्य परम्परा शिक्षा से ही संगीत का पुनर्विकास सम्भव है। किन्तु किसी को गुरू मानने से पहले गुरू को अच्छी तरह परख लेना तथा समझ लेना आवश्यक है। अन्यथा सही शिक्षा तथा ज्ञान तो दूर की बात गुरू तथा शिष्य दोनों ही अंधकार में भटकते रहेंगे। फिर वही बात—"रामकृष्ण परमहंस देव" कहते थे-साधारण 'सांप', 'मेढक' पकड़ तो लेता है किन्तु न निगल सकता है न छोड़ सकता है। दोनों की ही दुर्गति। यदि "जात सांप" होता तो एक बार में ही दोनों का कल्याण हो जाता—!!!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अलंकार

****

शुद्ध तथा कोमल स्वरों से उपर्युक्त रागों में अभ्यास करना है ॥

१. आरोह :- सा रे ग म प ध नि सां ।
अवरोह :- सां नि ध प म ग रे सा ॥

२. आ :- सासा रेरे गग मम पप धध निनि सांसां ।
अव :- सांसां निनि धध पप मम गग रेरे सासा ॥

३. आ :- सासासा रेरेरे गगग ममम पपप धधध निनिनि सांसांसां ।
अव :- सांसांसां निनिनि धधध पपप ममम गगग रेरेरे सासासा ॥

४. आ :- सासासासा रेरेरेरे गगगग मममम पपपप धधधध निनिनिनि सांसांसांसां ।
अव :- सांसांसांसां निनिनिनि धधधध पपपप मममम गगगग रेरेरेरे सासासासा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५. आ :- सा रे ग म प ध नि सां । (एक गुन)
अव :- सां नि ध प म ग रे सा ।।

६. आ :- सारे रेग गम मप पध धनि निसां । (द्वी गुन)
अव :- सांनि निध धप पम मग गरे रेसा ।।

७. आ :- सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां । (तीन गुन)
अव :- सांनिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा ।।

८. आ :- सारेगम रेगमप गपमध मपधनि पधनिसां । (चार गुन)
अव :- सांनिधप निधपम धपमग पमगरे मगरेसा ।।

९. आ :- सारेगमप रेगमपध गमपधनि मपधनिसां । (पाँच गुन)
अव :- सांनिधपम निधपमग धपमगरे पमगरेसा ।।

१०. आ :- सारेगमपध रेगमपधनि गमपधनिसां । (छः गुन)
अव :- सांनिधपमग निधपमगरे धपमगरेसा ।।

११. आ :- सारेगमपधनि रेगमपधनिसां । (सात गुन)
अव :- सांनिधपमगरे निधपमगरेसा ।।

१२. आ :- सारेगमपधनिसां । (आठ गुन)
अव :- सांनिधपमगरेसा ।।

१३. आ :- साग रेम गप मध पनि धसां ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अव :- सांध निप धम पग मरे गसा ।।

१४. आ :- साम रेप गध मनि पसां ।
अव :- सांप निम धग परे मसा ।।

१५. आ :- साप रेध गनि मसां ।
अव :- सांम निग धरे पसा ।।

१६. आ :- साध रेनि गसां ।
अव :- सांग निरे धसा ।।

१७. आ :- सानि रेसां ।
अव :- सांरे निसा ।।

१८. आ :- सा सां ।
अव :- सां सा ।।

१९. आ :- सारेसारेग रेगरेगम गमगमप मपमपध पधपधनि धनिधनिसां ।
अव :- सांनिसांनिध निधनिधप धपधपम पमपमग मगमगरे गरेगरेसा ।।

२०. आ :- सामसारेगम रेपरेगमप गधगमपध मनिमपधनि पसांपधनिसां ।
अव :- सांपसांनिधप निमनिधपम धगधपमग परेपमगरे मसामगरेसा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२१. आ :- सारेसागरेगम रेगरेमगमप गमगपमपध
मपमधपधनि पधपनिधनिसां ।

अव :- सांनिसांधनिधप निधनिपधपम धपधमपमग
पमपगमगरे मगमरेगरेसा ।।

२२. आ :- सा, सारे, सारेग, सारेगम; रे, रेग, रेगम, रेगमप;
ग, गम, गमप, गमपध, म, मप, मपध, मपधनि,
प, पध, पधनि, पधनिसां ।

अव :- सां,सांनि,सांनिध,सांनिधप; नि,निध,निधप,निधपम,
ध, धप, धपम, धपमग; प, पम, पमग, पमगरे,
म, मग, मगरे, मगरेसा ।।

२३. आ :- सारेसागरेग रेगरेमगम गमगपमप मपमधपध
पधपनिधनि धनिधसांनिसां ।

अव :- सांनिसांधनिध निधनिपधप धपधमपम पमपगमग
मगमरेगरे गरेगसारेसा ।।

२४. आ :- सारेगरेसारे रेगमगरेग गमपमगम मपधपमप
पधनिधपध धनिसांनिधनि निसांरेसांनिसां ।

अव :- सांनिधनिसांनि निधपधनिध धपमपधप पमगमपम
मगरेगमग गरेसारेगरे रेसानिसारेसा ।।

२५. आ :- सागरेगसारे रेसगमरेग गपमपगम मधपधमप
पनिधनिपध धसांनिसांधनि निरेंसांरेंनिसां ।

अव :- सांधनिधसांनि निपधपनिध धमपमधप पगमगपम
मरेगरेमग गसारेसागरे रेनिसानिरेसा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२६. आ :- नि़सारेसा सारेगरे रेगमग गमपम मपधप पधनिध धनिसांनि निसांरेंसां।

अव :- रेंसांनिसां सांनिधनि निधपध धपमप पमगम मगरेग गरेसारे रेसानि़सा।।

२७. आ :- सारेनि़सा रेगसारे गमरेग मपगम पधमप धनिपध निसांधनि सांरेंनिसां।

अव :- सांनिरेंसां निधसांनि धपनिध पमधप मगपम गरेमग रेसागरे सानि़रेसा।

२८. आ :- सारेसाग रेगरेम गमगप मपमध पधपनि धनिधसां।

अव :- सांनिसांध निधनिप धपधम पमपग मगमरे गरेगसा।।

२९. आ :- सारेगमगरे रेगमपमग गमपधपम मपधनिधप पधनिसांनिध धनिसांरेंसांनि निसांरेंगंरेंसां।

अव :- सांनिधपधनि निधपमपध धपमगमप पमगरेगम मगरेसारेग गरेसानि़सारे रेसानि़धनि़सा।।

३०. आ :- सारेगमपम रेगमपधप गमपधनिध मपधनिसांनि पधनिसांरेंसां।

अव :- सांनिधपमप निधपमगम धपमगरेग पमगरेसारे मगरेसानि़सा।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३१. आ :- सारेसारेग रेगरेगम गमगमप मपमपध पधपधनि धनिधनिसां ।

अव :- सांनिसांनिध निधनिधप धपधपम पमपमग मगमगरे गरेगरेसा ।।

३२. आ :- सारेसागरे रेगरेमग गमगपम मपमधप पधपनिध धनिधसांनि निसांनिरेंसां ।

अव :- सांनिसांधनि निधनिपध धपधमप पमपगम मगमरेग गरेगसारे रेसारेनिसा ।।

३३. आ :- सारेगगरे रेगममग गमपपम मपधधप पधनिनिध धनिसांसांनि निसांरेंरेंसां ।

अव :- सांनिधधनि निधपपध धपमममप पमगगम मगरेरेग गरेसासारे रेसानिनिसा ।।

३४. आ :- सारेगमग रेगमपम गमपधप मपधनिध पधनिसांनि धनिसांरेंसां ।

अव :- सांनिधपध निधपमप धपमगम पमगरेग मगरेसारे गरेसानिसा ।।

३५. आ :- सारेगसारेसाग रेगमरेगरेम गमपगमगप मपधमपमध पधनिपधपनि धनिसांधनिधसां ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अव :- सांनिधसांनिसांध निधपनिधनिप धपमधपधम
पमगपमपग मगरेमगमरे गरेसागरेगसा ।।

३६. आ :- सारेसागसारेग रेगरेमरेगम गमगपगमप
मपमधमपध पधपनिपधनि धनिधसांधनिसां ।

अव :- सांनिसांधसांनिध निधनिपनिधप धपधमधपम
पमपगपमग मगमरेमगरे गरेगसागरेसा ।।

३७. आ :- सारेसागरेगसा रेगरेमगमरे गमगपमपग
मपमधपधम पधपनिधनिप धनिधसांनिसांध
निसांनिरेंसांरेंनि सांरेंसांगंरेंगंसां ।

अव :- सांनिसांधनिधसां निधनिपधपनि धपधमपमध
पमपगमगप मगमरेगरेम गरेगसारेसाग
रेसारेनि़सानि़रे सानि़साधनि़धसा ।।

३८. आ :- सारेसागरेगरे रेगरेमगमग गमगपमपम मपमधपधप
पधपनिधनिध धनिधसांनिसांनि निसांनिरेंसांरेंसां ।

अव :- सांनिसांधनिधनि निधनिपधपध धपधमपमप
पमपगमगम मगमरेगरेग गरेगसारेसारे
रेसारेनि़सानि़सा ।।

३९. आ :- सारेगमगरेसा रेगमपमगरे गमपधपमग मपधनिधपम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पधनिसांनिधप धनिसांरेंसांनिध निसांरेंगंरेंसांनि
सांरेंगंमंगंरेंसां ।

अव :- सांनिधपधनिसां निधपमपधनि धपमगमपध
पमगरेगमप मगरेसारेगम गरेसानिसारेग
रेसानिधनिसारे सानिधपधनिसा ।।

४०. आ :- सासासारेरेरेग रेरेरेगगगम गगगमममप मममपमपध
पपपधधधनि धधधनिनिनिसां ।

अव :- सांसांसांनिनिनिध निनिनिधधधप धधधपपपम
पपपमममग मममगगगरे गगगरेरेरेसा ।

४१. आ :- पमगरेसारेग धपमगरेगम - निधपमगमप
सांनिधपमपध रेंसांनिधपधनि गंरेंसांनिधनिसां ।

अव :- मपधनिसांनिध गमपधनिधप रेगमपधपम
सारेगमपमग निसारेगमगरे धनिसारेगरेसा ।।

४२. आ :- रेरेसागगरेसा गगरेममगरे ममगपपमग
पपमधधपम धधपनिनिधप निनिधसांसांनिध
सांसांनिरेंरेंसांनि रेंरेंसांगंगंरेंसां ।

अव :- निनिसांधधनिसां धधनिपपधनि -पपधममपध
ममपगगमप गगमररेगम ररेगसासारेग
सासारेनिनिसारे निनिसाधधनिसा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४३. आ :- सारेसागरेमग रेगरेमगपम गमगपमधप
मपमधपनिध पधपनिधसांनि धनिधसांनिरेंसां ।

अव :- सांनिसांधनिपध निधनिपधमप धपधमपगम
पमपगमरेग मगमरेगसारे गरेगसारेनिसा ।।

४४. आ :- सारेगरेसारेगम रेगमगरेगमप गमपमगमपध
मपधपमपधनि पधनिधपधनिसां ।

अव :- सांनिधनिसांनिधप निधपधनिधपम धपमपधपमग
पमगमपमगरे मगरेगमगरेसा ।।

४५. आ :- सासासारेरेरेगग रेरेरेगगगमम गगगमममपप
मममपपपधध पपपधधधनिनि धधधनिनिनिसांसां ।

अव :- सांसांसांनिनिनिधध निनिनिधधधपप धधधपपपमम
पपपमममगग मममगगगरेरे गगगरेरेरेसासा ।।

४६. आ :- सासारेरेरेगमप रेरेगगगमपध गगमममपधनि
मममपपपधनिसां ।

अव :- सांसांनिनिनिधपम निनिधधधपमग धधपपपमगरे
पपमममगरेसा ।।

४७. आ :- सारेगमपमगरे रेगमपधपमग गमपधनिधपम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मपधनिसांनिधप पधनिसांरेंसांनिध धनिसांरेंगंरेंसांनि
निसांरेंगंमंगंरेंसां ।

अव :- सांनिधपमपधनि निधपमगमपध धपमगरेगमप
पमगरेसारेगम मगरेसानि़सारेग गरेसानि़धनि़सारे
रेसानि़ध़प़धनि़सा ।।

४८. आ :- सारेसागरेगरेम रेगरेमगमगप गमगपमपमध
मपमधपधपनि पधपनिधनिधसां ।

अव :- सांनिसांधनिधनिप निधनिपधपधम धपधमपमपग
पमपगमगमरे मगमरेगरेगसा ।।

४९. आ :- सारेसा,रेगरे,गम; रेगरेगमगमप गमगमपमपध
मपमपधपधनि पधपधनिधनिसां ।

अव :- सांनिसांनिधनिधप निधनिधपधपम धपधपमपमग
पमपमगमगरे मगमगरेगरेसा ।।

५०. आ :- सारेसागरेगसारे रेगरेमगमरेग गमगपमपगम
मपमधपधमप पधपनिधनिपध धनिधसांनिसांधनि
निसांनिरेंसांरेंनिसां ।

अव :- सांनिसांधनिधसांनि निधनिपधपनिध धपधमपमधप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पमपगमगपम मगमरेगरेमग गरेगसारेसागरे
रेसारेनि़सानि़रेसा ।।

५१. आ :- सारेगरेगरेसारे रेगमगमगरेग गमपमपमगम
मपधपधपमप पधनिधनिधपध धनिसांनिसांनिधनि
निसांरेंसांरेंसांनिसां ।

अव :- सांनिधनिधनि़सांनि निधपधपधनिध धपमपमपधप
पमगमगमपम मगरेगरेगमग गरेसारेसारेगरे
रेसानि़सानि़सारेसा ।।

सा
सारेसा
सारेगरेसा
सारेगमगरेसा
सारेगमपमगरेसा
सारेगमपधपमगरेसा
सारेगमपधनिधपमगरेसा
सारेगमपधनिसांनिधपमगरेसा
सारेगमपधनिसांरेंसांनिधपमगरेसा
सारेगमपधनिसांरेंगंरेंसांनिधपमगरेसा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां

सांनिसां

सांनिधनिसां

सांनिधपधनिसां

सांनिधपमपधनिसां

सांनिधपमगमपधनिसां

सांनिधपमगरेगमपधनिसां

सांनिधपमगरेसारेगमपधनिसां

सांनिधपमगरेसानि़सारेगमपधनिसां

सांनिधपमगरेसानि़धनि़सारेगमपधनिसां

सांनिधपमगरेसानि़ध़प़धनि़सारेगमपधनिसां

सांनिधपमगरेसा ।।

सा —

सारे — सारे-रेसा

साग — साग-गरेसा

साम — साम-मगरेसा

साप — साप-पमगरेसा

साध — साध-धपमगरेसा

सानि — सानि-निधपमगरेसा

सासां — सासां-सांनिधपमगरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सारें — सारें-रेंसांनिधपमगरेसा

सागं — सागं-गंरेंसांनिधपमगरेसा

सां —

सांनि — सांनि-निसां

सांध — सांध-धनिसां

सांप — सांप-पधनिसां

सांम — सांम-मपधनिसां

सांग — सांग-गमपधनिसां

सांरे — सांरे-रेगमपधनिसां

सांसा — सांसा-सारेगमपधनिसां

सांनि़ — सांनि़-नि़सारेगमपधनिसां

सांध़ — सांध़-ध़नि़सारेगमपधनिसां
सांनिधपमगरेसा ।।

सा —

सारे - रेसा

साग - गरेसा

साम - मगरेसा

साप - पमगरेसा

साध - धपमगरेसा

सानि - निधपमगरेसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सासां - सांनिधपमगरेसा
सारें - रेंसांनिधपमगरेसा
सागं - गंरेंसांनिधपमगरेसा ।।

सा —
सारे - सारे
साग - सारेग
साम - सारेगम
साप - सारेगमप
साध - सारेगमपध
सानि - सारेगमपधनि
सासां - सारेगमपधनिसां
सारें - सारेगमपधनिसारें
सागं - सारेगमपधनिसारेंगं
गंरेंसांनिधपमगरेसा ।।

सां —
सांनि - निसां
सांध - धनिसां
सांप - पधनिसां
सांम - मपधनिसां
सांग - गमपधनिसां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सांरे - रेगमपधनिसां

सांसा - सारेगमपधनिसां

सांनि़ - नि़सारेगमपधनिसां

साध़ - ध़नि़सारेगमपधनिसां

सांप़ - प़ध़नि़सारेगमपधनिसां

सांनिधपमगरेसा ॥

सां —

सांनि - सांनि

सांध - सांनिध

सांप - सांनिधप

सांम - सांनिधपम

सांग - सांनिधपमग

सांरे - सांनिधपमगरे

सांसा - सांनिधपमगरेसा

सांनि़ - सांनिधपमगरेसानि़

सांध़ - सांनिधपमगरेसानि़ध़

सांप़ - सांनिधपमगरेसानि़ध़प़

सांम़ - सांनिधपमगरेसानि़ध़प़म़

सांग़ - सांनिधपमगरेसानि़ध़प़म़ग़

म़प़ध़नि़सा—॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा—

रेसा

गरेसा

मगरेसा

पमगरेसा

धपमगरेसा

निधपमगरेसा

सांनिधपमगरेसा

रेंसांनिधपमगरेसा

गंरेंसांनिधपमगरेसा ।।

सां—

निसां

धनिसां

पधनिसां

मपधनिसां

गमपधनिसां

रेगमपधनिसां

सारेगमपधनिसां

नि़सारेगमपधनिसां

धनि़सारेगमपधनिसां

सांनिधपमगरेसा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा रे ग म प ध नि सां — सां नि ध प म ग रे सा ।
रे ग म प ध नि सां रें — रें सां नि ध प म ग रे ।
ग म प ध नि सां रें गं — गं रें सां नि ध प म ग ।
म प ध नि सां रें गं मं — मं गं रें सां नि ध प म ।
प ध नि सां रें गं मं पं — पं मं गं रें सां नि ध प-सा ।।

सा रे ग म प ध नि सां — सां नि ध प म ग रे सा ।
नि़ सा रे ग म प ध नि — नि ध प म ग रे सा नि़ ।
ध़ नि़ सा रे ग म प ध — ध प म ग रे सा नि़ ध़ ।
प़ ध़ नि़ सा रे ग म प — प म ग रे सा नि़ ध़ प़ ।
म़ प़ ध़ नि़ सा रे ग म — म ग रे सा नि़ ध़ प़ म़ ।
ग़ म़ प़ ध़ नि़ सा रे ग — ग रे सा नि़ ध़ प़ म़ ग़-सा-।।

सा रे ग म प ध नि सां – सा – सां – सांनिधपमगरेसा ।
रे ग म प ध नि सां रें – रे – रें – रेंसांनिधपमगरे ।
ग म प ध नि सां रें गं – ग – गं – गंरेंसांनिधपमग ।
म प ध नि सां रें गं मं – म – मं – मंगंरेंसांनिधपम ।
प ध नि सां रें गं मं पं – प – पं – पंमंगंरेंसांनिधप—सा ।।

सा रे ग म प ध नि सां – सा – सां – सांनिधपमगरेसा ।
नि़ सा रे ग म प ध नि – नि़ – नि – निधपमगरेसानि़ ।
ध़ नि़ सा रे ग म प ध – ध़ – ध – धपमगरेसानि़ध़ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प़ ध़ नि़ सा रे ग म प – प़ – प – पमगरेसानि़ध़प़ ।
म़ प़ ध़ नि़ सा रे ग म – म़ – म – मगरेसानि़ध़प़म़ ।
ग़ म़ प़ ध़ नि़ सा रे ग – ग़ – ग – गरेसानि़ध़प़म़ग़ — सा ।।

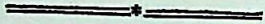

सा—नि़सा ध़नि़सा प़ध़नि़सा म़प़ध़नि़सा ग़म़प़ध़नि़सा ।।

रे —सारे नि़सारे ध़नि़सारे प़ध़नि़सारे म़प़ध़नि़सारे ग़म़प़ध़नि़सारे ।।

ग —रेग सारेग नि़सारेग ध़नि़सारेग प़ध़नि़सारेग म़प़ध़नि़सारेग ग़म़प़ध़नि़सारेग ।।

म —गम रेगम सारेगम नि़सारेगम ध़नि़सारेगम प़ध़नि़सारेगम म़प़ध़नि़सारेगम ग़म़प़ध़नि़सारेगम ।।

प —मप गमप रेगमप सारेगमप नि़सारेगमप ध़नि़सारेगमप प़ध़नि़सारेगमप म़प़ध़नि़सारेगमप ग़म़प़ध़नि़सारेगमप ।।

ध —पध मपध गमपध रेगमपध सारेगमपध नि़सारेगमपध ध़नि़सारेगमपध प़ध़नि़सारेगमपध म़प़ध़नि़सारेगमपध ग़म़प़ध़नि़सारेगमपध ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि—धनि पधनि मपधनि गमपधनि रेगमपधनि सारेगमपधनि
निसारेगमपधनि धनिसारेगमपधनि पधनिसारेगमपधनि
मपधनिसारेगमपधनि गमपधनिसारेगमपधनि ॥

सां—निसां धनिसां पधनिसां मपधनिसां गमपधनिसां
रेगमपधनिसां सारेगमपधनिसां निसारेगमपधनिसां
धनिसारेगमपधनिसां पधनिसारेगमपधनिसां
मपधनिसारेगमपधनिसां गमपधनिसारेगमपधनिसां
सांनिधपमगरेसा ॥

सां—रेंसां गंरेंसां मंगंरेंसां पंमंगंरेंसां ॥

नि—सांनि रेंसांनि गंरेंसांनि मंगंरेंसांनि ॥

ध—निध सांनिध रेंसांनिध गंरेंसांनिध मंगंरेंसांनिध ॥

प—धप निधप सांनिधप रेंसांनिधप गंरेंसांनिधप ॥

म—पम धपम निधपम सांनिधपम रेंसांनिधपम गंरेंसांनिधपम ॥

ग—मग पमग धपमग निधपमग सांनिधपमग रेंसांनिधपमग
गरेंसांनिधपमग ॥

रे—गरे मगरे पमगरे धपमगरे निधपमगरे सांनिधपमगरे
रेंसांनिधपमगरे गंरेंसांनिधपमगरे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा—रेसा गरेसा मगरेसा प्रमगरेसा धपमगरेसा निधपमगरेसा
सांनिधपमगरेसा रेंसांनिधपमगरेसा गरेंसांनिधपमगरेसा ।।

कुछ तालें

****

दादरा : ६ मात्रा

धा	धी	ना	धा	तू	ना	धा
×			०			×

तीव्रा : ७ मात्रा

धा	दि	ता	तिट	कत	गदि	गन	धा
×			२		३		×

रूपक : ७ मात्रा

ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना	ती
×			२		३		×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहरवा : ८ मात्रा

धा	गे	न	ति	न	क	धि	न
×				०			

धा
×

झपताल : १० मात्रा

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
×		२			०		३		

धी
×

सूल या सूलफाक : १० मात्रा

धा	धा	दिं	ता	किट	धा	तिट	कत	गदि	गन
×		०		२		३		०	

धा
×

एक ताल : १२ मात्रा

धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	कत्	ता	धागे	तिरकिट	धि	ना
×		०		२		०		३		४	

धिं
×

द्रुत एकताल : १२ मात्रा (त्रिमात्रिक छन्द)

धा	धिं	धा	धा	तू	ना	कत्	ता	धागे	तेटे	धिं	तेटे
×			२			०			३		

धा
×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चार ताल : १२ मात्रा

धा धा | दिं ता | किट धा | दिं ता | तिट कत | गदि गन | धा
× | ० | २ | ० | ३ | ४ | ×

दीपचन्दी : १४ मात्रा

धा धिं– | धा गे तिं– | ता तिं– | धा गे धिं– | धा
× | २ | ० | ३ | ×

धमार : १४ मात्रा

क धि ट धि ट | धा – | ग ति ट | ति ट ता – | क
× | २ | ० | ३ | ×

तिलवाड़ा : १६ मात्रा

धा तिरकिट धि धि | धा धा तिं तिं |
× | २

ता तिरकिट धि धि | धा धा धि धि | धा
० | ३ | ×

तीन ताल : १६ मात्रा

धा धि धि धा | धा धि धि धा | धा ति ति ता | तेटे धि धि धा | धा
× | २ | ० | ३ | ×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झूमरा : १४ मात्रा

धिं –धा तिरकिट | धिं धिं धागे तिरकिट |
× २

| तिं –ता तिरकिट | धिं धिं धागे तिरकिट | धिं
० ३ ×

आड़ा चारताल : १४ मात्रा

धिं तिरकिट | धिं ना | तू ना |
× २ ०

| कत् ता | तिरकिट धी | ना धी | धी ना | धिं
३ ० ४ ० ×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अलंकारों से कुछ तालों का ज्ञान।

इन अलंकारों को गाते समय हाथ से ताली-खाली अवश्य दिखायें ॥

१. दादरा ताल में

सा रे ग | रे ग म ‖ ग म प | म प ध ‖ प ध नि | ध नि सां ‖
X | ० ‖ X | ० ‖ X | ० ‖

सां नि ध | नि ध प ‖ ध प म | प म ग ‖ म ग रे | ग रे सा ‖
X | ० ‖ X | ० ‖ X | ० ‖

२. कहरवा ताल में

सा रे ग रे | सा रे ग म ‖ रे ग म ग | रे ग म प ‖
X | ० ‖ X | ० ‖

ग म प म | ग म प ध ‖ म प ध प | म प ध नि ‖

प ध नि ध | प ध नि सां ‖
X | ० ‖

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि ध नि | सां नि ध प || नि ध प ध | नि ध प म ||
× | ० | × | ० |

ध प म प | ध प म ग || प म ग म | प म ग रे ||

म ग रे ग | म ग रे सा ||
× | ०

३. चौताल अथवा एकताल में

सा ग | रे म | ग प | म ध | प नि | ध सां |
× | ० | २ | ० | ३ | ४ |

सां ध | नि प | ध म | प ग | म रे | ग सा ||
× | ० | २ | ० | ३ | ४ |

४. रूपक अथवा तीव्रा ताल में

सा रे ग | सा रे | सा ग || रे ग म | रे ग | रे म ||
× | २ | ३ | × | २ | ३ |

ग म प | ग म | ग प || म प ध | म प | म ध ||

प ध नि | प ध | प नि || ध नि सां | ध नि | ध सां ||
× | २ | ३ | × | २ | ३ |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां नि ध | सां नि | सां ध || नि ध प | नि ध | नि प ||
× २ ३ × २ ३

ध प म | ध प | ध म || प म ग | प म | प ग ||

म ग रे | म ग | म रे || ग रे सा | ग रे | ग सा ||
× २ ३ × २ ३

५. झपताल में

सा रे | सा रे ग | रे ग | रे ग म || ग म | ग म प | म प | म प ध ||
× २ ० ३ × २ ० ३

प ध | प ध नि | ध नि | ध नि सां ||
× २ ० ३

सां नि | सां नि ध | नि ध | नि ध प || ध प | ध प म | प म | प म ग ||
× २ ० ३ × २ ० ३

म ग | म ग रे | ग रे | ग रे सा ||
× २ ० ३

६. द्रुत एकताल में (त्रिमात्रिक छन्द)

सा ग प | ध म रे | ग प नि | सां ध म |
× २ ० ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प नि रें | गं सां ध | नि रें मं | पं गं सां ||

सां ध म | ग प नि | ध म रे | सा ग प |

म रे नि़ | ध़ सा ग | रे नि़ प़ | म़ ध़ सा ||
× | २ | ० | ३

७. सूलफाक ताल में

सा म | रे प | ग ध म नि | प सां |
× | ० | २ ३ | ०

सां प | नि म | ध ग | प रे | म सा ||
× | ० | २ | ३ | ०

८. धमार ताल में

सा रे ग म प | रे ग | ध म ध | प नि ध सां |
× | २ | ० | ३

सां नि ध प म | नि ध | ग प ग | म रे ग सा ||
× | २ | ० | ३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९. तीन ताल में

सा रे ग म	रे ग म प	ग म प ध	म प ध नि
×	२	०	३
सां नि ध प	नि ध प म	ध प म ग	प म ग रे ‖
×	२	०	३

"एक, दो, तीन, चार गुन की लय में"

सा सारे सारेग सारेगम	रे रेग रेगम रेगमप
×	२
ग गम गमप गमपध	म मप मपध मपधनि
०	३
प पध पधनि पधनिसां	ध धनि धनिसां धनिसांरें
	२
नि निसां निसांरें निसांरेंगं	सां — — —
०	३
सां सांनि सांनिध सांनिधप	नि निध निधप निधपम
×	२
ध धप धपम धपमग	प पम पमग पमगरे
०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म मग मगरे मगरेसा ×	ग गरे गरेसा गरेसानि २
रे रेसा रेसानि रेसानिध ०	सा — — — ३

तीन ताल में

सा — — सा	म — — —	सा म सा ग	सा रे — —
रे — — रे	प — — —	रे प रे म	रे ग — —
ग — — ग	ध — — —	ग ध ग प	ग म — —
म — — म	नि — — —	म नि म ध	म प — —
प — — प	सां — — —	प सां प नि	प ध — —
ध — — ध	रें — — —	ध रें ध सां	ध नि — —
नि — — नि ×	गं — — — २	नि गं नि रें ३	नि सां — — ३
सां — — सां	प — — —	सां प सां ध	सां नि — —
नि — — नि	म — — —	नि म नि प	नि ध — —

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध – – ध	ग – – –	ध ग ध म	ध प – –
प – – प	रे – – –	प रे प ग	प म – –
म – – म	सा – – –	म सा म रे	म ग – –
ग – – ग	नि़ – – –	ग नि़ ग सा	ग रे – –
रे – – रे़	ध़ – – –	रे ध़ रे नि़	रे सा – –
×	२	०	३

१०. झूमरा ताल में

सा –रे सारेगरे	सा ग सारे सारेगम	रे –ग रेगमग	रे म रेग रेगमप
×	२	०	३
ग –म गमपम	ग प गम गमपध	म –प मपधप	म ध मप मपधनि
×	२	०	३
प –ध पधनिध	प नि पध पधनिसां	सां –नि सांनिधनि	सांनि सांनि सांनिधप
×	२	०	३
नि –ध निधपध	नि प निध निधपम	ध –प धपमप	ध म धप धपमग
×	२	०	३
प –म पमगम	प ग पम पमगरे	म –ग मगरेग	म रे मग मगरेसा
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीव्रा ताल में

सा रे ग	सारे साग	रेग रेम	रे ग म	रेग रेम	गम गप
×	२	३	×	२	३
ग म प	गम गप	मप मध	म प ध	मप मध	पध पनि
×	२	३	×	२	३
प ध नि	पध पनि	धनि धसां	सां नि ध	सांनि सांध	निध निप
×	२	३	×	२	३
नि ध प	निध निप	धप धम	ध प म	धप धम	पम पग
×	२	३	×	२	३
प म ग	पम पग	मग मरे	म ग रे	मग मरे	गरे गसा
×	२	३	×	२	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आरोह :- सागप रेमध गपनि मधसां पनिरें धसांगं
निरेंमं सांगंपं सां- ।।

आरोह :- सांधम निपग धमरे पगस मरेनि़ गसाध़
रेनि़प़ साध़म़ सा- ।।

आरोह :- सागपनि रेमधसां गपनिरें मधसांगं पनिरेंमं
धसांगंपं सां-।

आरोह :- सांधमरे निपगसा धमरेनि़ पगसाध़ मरेनि़प़
गसाध़म़ सा-।।

* सा ग प नि - सां ध म रे
ग प नि रें - गं सां नि ध
प नि रें मं - पं गं सां ध - सां-।

* सां ध म रे - सा ग प नि
ध म रे नि़ - ध़ सा ग प
म रे नि़ प़ - म़ ध़ सा ग - सा - ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन स्वरों से

अधिक से अधिक रचनाएं

"सा रे ग"

दो संख्याओं में

सारे – रेसा ।

साग – गसा ।

रेग – गरे ।।

सासा – रेरे ।

गग – ।।

तीन संख्याओं में

सारेग – गरेसा ।

रेगसा – रेसाग ।

सागरे – गसारे ।।

सारेसा – रेसारे ।

रेगरे – गरेग ।

सागसा – गसाग ।।

सासारे – रेरेसा ।

रेरेग – गगरे ।

सासाग – गगसा ।।

सारेरे – रेसासा ।

रेगग – गरेरे ।

सागग – गसासा ।।

सासासा – रेरेरे

गगग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चार संख्याओं में

सारेगरे – गरेसारे।
रेगसारे – रेसागरे।
सागसारे – गसागरे ॥

सारेरेग – गरेरेसा।
रेगरेसा – रेसारेग।
सागरेसा – गसारेग ॥

सारेसाग – गरेगसा ।
सारेगसा – गरेसाग ।
रेगसाग – रेसागसा ॥

सारेगग – गरेसासा ।
सासारेग – गगरेसा ।
सासागरे – गगसारे ॥

सागरेग – गसारेसा ।
सागगरे – गसासारे ।
रेगसासा – रेसागग ॥

रेरेगसा – रेरेसाग ।
रेगगसा – रेसासाग ॥

सारेरेसा – रेसासारे ।
रेगगरे – गरेरेग ।
सागगसा – गसासाग ।
सासासारे– रेरेरेसा ॥

रेरेरेग – गगगरे ।
सासासाग– गगगसा ।
सारेरेरे – रेसासासा॥

सागगग – गसासासा।
सासारेरे – रेरेसासा ।
रेरेगग – गगरेरे ।
सासागग – गगसासा ॥
सासासासा– रेरेरेरे
गगगग ॥

पाँच संख्याओं में

सारेसारेग – गरेगरसा ।
सारेगरेसा – गरेसारेग ।
सारेरेगसा – गरेरेसाग ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सारेरेसाग – गरेरेगसा ।
सारेसागरे – गरेगसारे ।
सारेगसारे – गरेसागरे ।।

सारेसारेसा – रेसारेसारे ।
सारेरेसारे – रेसासारेसा ।
सारेरेगरे – गरेरेसारे ।।

सारेगरेग – गरेसारेसा ।
सारेसागसा – गरेगसाग ।
सारेगसाग – गरेसागसा ।।

सारेसासारे – रेसारेरेसा ।
सारेरेरेसा – रेसासासारे ।
सारेरेरेग – गरेरेरेसा ।।

सारेगगरे – गरेसासारे ।
सारेसासाग – गरेगगसा ।
सारेगगसा – गरेसासाग ।।

सारेसारेरे – रेसारेसासा ।
सारेरेसासा – रेसासारेरे ।।
सारेरेगग – गरेरेसासा ।।

सारेगरेरे – गरेसारेरे ।
सारेसागग – गरेगसासा ।
सारेगसासा – गरेसागग ।।

सारेसासासा – रेसारेरेरे ।
सारेरेरेरे – रेसासासासा ।
सारेगगग – गरेसासासा ।।

रेसासारेग – रेगगरेसा ।
रेसागरेसा – रेगसारेग ।
रेसारेगसा – रेगरेसाग ।।

रेरेसासाग – रेरेगगसा ।
रेरेसागग – रेरेगसासा ।
सागसारेग – गसागरेसा ।।

सागगरेसा – गसासारेग ।
सागरेगसा – गसारेसाग ।
सागरेसाग – गसारेगसा ।।

सागसागरे – गसागसारे ।
सागगसारे – गसासागरे ।
सागसारेसा – गसागरेग ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सागरेसारे – गसारेगरे ।
सागरेगरे – गसारेसारे ।
सागगरेग – गसासारेसा ।।

सागसागसा – गसागसाग ।
सागगसाग – गसासागसा ।
सागसासारे – गसागगरे ।।

सागरेरेसा – गसारेरेग ।
सागरेरेग – गसारेरेसा ।
सागगगरे – गसासासारे ।।

सागसासाग – गसागगसा ।
सागगगसा – गसासासाग ।
सागसारेरे – गसागरेरे ।।

सागरेसासा – गसारेगग ।
गसारेसासा – सागरेगग ।
सागगरेरे – गसासारेरे ।।

सागसागग – गसागसासा ।
सागगसासा – गसासागग ।।
सागसासासा – गसागगग ।।

सागगगग – गसासासासा ।
सागरेरेरे – गसारेरेरे ।

सासासासासा
रेरेरेरेरेरे
गगगगग ।।

छः संख्याओं में

सारेगगरेसा – गरेसासारेग ।
रेगसारेसाग – रेसागरेगसा ।
सागरेगसारे – गसारेसागरे ।।

सारेसारेसारे–रेसारेसारेसा ।
सागसागसाग–गसागसागसा ।
सासारेरेरेसा–रेरेसासासारे ।।

सासागगगसा–गगसासासाग ।
सारेरेरेसासा–रेसासासारेरे ।
सागगगसासा–गसासासाग ।।

सासासारेरेरे–रेरेरेसासासा ।
सारेगरेगसा – गरेसारेसाग ।
सारेगरेसाग – गरेसारेगसा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रेसारेगसा के बाद पांच संख्याओं में

रेसारेसाग – रेगरेगसा ।
रेसासागरे – रेगगसारे ।
रेसागसारे – रेगसागरे ।।

रेसारेगरे – रेगरेसारे ।
रेसागरेग – रेगसारेसा ।
रेसासागसा– रेगगसाग ।।

रेसागसाग – रेगसागसा ।
रेसारेरेग – रेगरेरेसा ।
रेसागगरे – रेगसासारे ।।

रेसासासाग – रेगगगसा ।
रेसागगसा – रेगसासाग ।
रेसारेगग – रेगरेसासा ।।

रेसागरेरे – रेगसारेरे ।
रेसासागग– रेगगसासा ।
रेसागसासा– रेगसागग ।।

रेसागगग – रेगसासासा ।
सासासारेग– गगगरेसा ।।
सासागरेसा – गगसारेग ।

सासारेगसा– गगरेसाग ।
सासारेसाग– गगरेगसा ।
सासासागरे– गगगसारे ।।

सासागसारे– गगसागरे ।
सासासारेसा– रेरेरेसारे ।
सासारेसारे –रेरेसारेसा।।

सासारेगरे – गगरेसारे ।
सासागरेग – गगसारेसा ।
सासासागसा– गगगसाग ।

सासागसाग –गगसागसा ।
सासासासारे– रेरेरेरेसा ।
सासारेरेसा – रेरेसासारे।।

सासारेरेग – गगरेरेसा ।
सासागगरे – गगसासारे ।
सासासासाग–गगगगसा ।।

सासागगसा–गगसासाग ।
सासासारेरे – रेरेरेसासा ।
सासारेसासा– रेरेसारेरे ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सासारेगग – गगरेसासा ।
सासागरेरे – गगसारेरे ।
सासासागग – गगगसासा ।।

सासागसासा – गगसागग ।
सासारेरेरे – रेरेसासासा ।
सासागगग – गगसासासा ।।

रेरेसारेग – रेरेगरेसा ।
रेरेरेगसा – रेरेरेसाग ।
रेरेसागरे – रेरेगसारे ।।

रेरेरेगरे – रेरेगरेग ।
रेरेसागसा – रेरेगसाग ।
रेरेरेरेग – गगगगरे ।।

सारेगरेसाग के बाद छः संख्याओं में

सारेगसागरे – गरेसागसारे ।
सारेगगसारे – गरेसासागरे ।
सारेगसारेसा – गरेसागरेग ।।

गरेसारेगरे – सारेगरेसारे ।
गरेसारेसारे – सारेगरेगरे ।
गरेसासारेसा – सारेगगरेग ।।

गरेसागसाग – सारेगसागसा ।
सारेगसासारे – गरेसागगरे ।
सारेगरेरेसा – गरेसारेरेग ।।

सारेगगगरे – गरेसासासारे ।
सारेगसासाग – गरेसागगसा ।
सारेगगगसा – गरेसासासाग ।।

सारेगसारेरे – गरेसागरेरे ।
सारेगरेसासा – गरेसारेगग ।
सारेगरेगग – गरेसारेसासा ।।

सारेगगरेरे – गरेसासारेरे ।
सारेगसागग – गरेसागसासा ।
सारेगगसासा – गरेसासागग ।।

सारेगसासासा – गरेसागगग ।
सारेगरेरेरे – गरेसारेरेरे ।
सारेगगगग – गरेसासासासा ।।

रेगसासारेग – रेसागगरेसा ।
रेगसागरेसा – रेसागसारेग ।
रेगसारेसाग – रेसागरेगसा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रेसागरेगसा — रेगसारेसाग ।
रेगसासागरे — रेसागगसारे ।
सारेगरेसारे — गरेसारेगरे ॥
सासासासासासा — रेरेरेरेरे
गगगगगग ॥

सात संख्याओं में

सारेगसारेगरे — गरेसागरेसारे ।
सारेगसारेसाग — गरेसागरेगसा ।
सारेगरेसागसा — गरेसारेगसाग ॥

सारेसासारेगरे — गरेगगरेसारे ।
सारेसासारेसाग — गरेगगरेगसा ।
सासारेसारेगरे — गगरेगरेसारे ॥

सारेसारेसागसा — गरेगरेगसाग ।
रेरेसासारेगरे — रेरेगगरेसारे ।
सागरेसारेगरे — गसारेगरेसारे ॥

सागरेसारेसाग — गसारेगरेगसा ।
रेरेसागगरेसा — रेरेगसासारेग ।
रेसारेरेसागरे — रेगरेरेगसारे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सासारेसारेगरे — गगरेगरेसारे ।
सारेसागरेगसा — गरेगसारेसाग ।
रेरेसारेरेसारे — रेरेगरेरेगरे ॥

सारेसारेगरेग — गरेगरेसारेसा ।
रेरेसागगरेग — रेरेगसासारेसा ।
सासारेसासागसा — गगरेगगसाग ॥

सारेगरेसारेग — गरेसारेगरेसा ।
सारेसागसारेग — गरेगसागरेसा ।
सारेसागगरेसा — गरेगसासारेग ॥

सारेगरेगरेसा — गरेसारेसारेग ।
रेरेसारेरेसासा — सासारेसासारेरे ।
सासारेरेरेगसा — गगरेरेरेसाग ॥

सासासारेरेरेग — गगगरेरेरेसा ।
सारेसारेसारेग — गरेगरेगरेसा ।
सारेरेसासारेग — गरेरेगगरेसा ॥

सारेरेगगरेसा — गरेरेसासारेग ।
सारेगगरेरेसा — गरेसासारेरेग ।
सागरेगसारेग — गसारेसागरेसा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सासासासासासासा ।

रेरेरेरेरेरे ॥

गगगगगगगग ॥

आठ संख्याओं में

सारेगरेगरेसारे — गरेसारेसारेगरे ।
सारेरेगगरेरेसा — गरेरेसासारेरेग ।
सारेसागसारेगरे — गरेगसागरेसारे ॥

सारेसागगरेरेसा — गरेगसासारेरेग ।
सारेतागरेगसारे — गरेगसारेसागरे ।
सारेरेसारेगगरे — गरेरेगरेसासारे ॥

सारेसारेगरेसारे — गरेगरेसारेगरे ।
सारेरेसागगरेग — गरेरेगसासारेसा ।
रेरेसागगरेसारे — रेरेगसासारेगरे ॥

रेरेसारेरेसासासा — सासारेसासारेरेरे ।
सासासारेरेरेगग — गगगरेरेरेसासा ।
रेरेसागगरेरेरे — रेरेगसासारेरेरे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सारेगसारेगसारे — गरेसागरेसागरे ।
सारेसागगरेगसा — गरेगसासारेसाग ।
सासासागगगरेरे — गगगसासासारेरे ॥

सासासासासासासासा ।
रेरेरेरेरेरेरे ।
गगगगगगगगग ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग यमन में

(१)

गमंप – पमंग ।
मंपग – मंगप ।
गपमं – पगमं ॥

(२)

नि़रेग – गरेनि़ ।
रेगनि़ – रेनि़ग ।
नि़गरे – गनि़रे ॥

(३)

मंपध – धपमं ।
पधमं – पमंध ।
मंधप – धमंप ॥

(४)

रेगमं – मंगरे ।
गमंरे – गरेमं ।
रेमंग – मंरेग ॥

(५)

नि़सारे – रेसानि़ ।
सारेनि़ – सानि़रे ।
नि़रेसा – रेनि़सा ॥

(६)

मंधनि – निधमं ।
धनिमं – धमंनि ।
मंनिध – निमंध ॥

(७)

गमंध – धमंग ।

(८)

निरेंगं – गंरेंनि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मंधग – मंगध ।
गधमं – धगमं ॥

रेंगंनि – रेंनिगं ।
निगंरें – गंनिरें ॥

(९)

धनिसां – सांनिध ।
निसांध – निधसां ।
धसांनि – सांधनि ॥

(१०)

निसांरें – रेंसांनि ।
सांरेंनि – सांनिरें ।
निरेंसां – रेंनिसां ॥

राग रूप तथा राग की शुद्धता के अनुसार किसी भी राग के आलाप-तान में इन स्वर-रचनाओं के क्रम को अपनाएं ।

(१)

गमंप – पमंग
मंपग – मंगप
गपमं – पगमं
पमंगरेसानि

(२)

निरेग – गरेनि
रेगनि – रेनिग
निगरे – गनिरे
गरेसानिधप

(३)

मंपध – धपमं
पधमं – पमंध

(४)

रेगमं – मंगरे
गमंरे – गरेमं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मंधप – धमंप
धपमंगरेसा

रेमंग – मंरेग
मंगरेसानि़ध़

(५)

नि़सारे – रेसानि़
सारेनि़ – सानि़रे
नि़रेसा – रेनि़सा
रेसानि़ध़प़म़

(६)

मंधनि – निधमं
धनिमं – धमंनि
मंनिध – निमंध
निधपमंगरे

(७)

गमंध – धमंग
मंधग – मंगध
गधमं – धगमं
पमंगरेसानि़

(८)

निरेंगं – गंरेंनि
रेंगंनि – रेंनिगं
निगंरें – गंनिरें
गंरेंसांनिधप

(९)

धनिसां – सांनिध
निसांध – निधसां
धसांनि – सांधनि
सांनिधपमंग

(१०)

निसांरें – रेंसांनि
सांरेंनि – सांनिरें
निरेंसां – रेंनिसां
रेंसांनिधपमं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग रूप तथा राग की शुद्धता के अनुसार निम्नलिखित स्वर संगतियों द्वारा आलाप - तान करें ।

१.

सागप - धर्मरे
गपनि - सांधर्म
पनिरें - गंसांध
निरेंमें - पंगंसां

२.

सांधर्म - गपनि
धर्मरे - सागप
मरेनि़ - धसाग
रेनि़प - मधसा-।।

१.

सागप - पगसा
गपसा - गसाप
सापग - पसाग ।

२.

निरेम - मरेनि़
रेमनि़ - रेनि़म
नि़मरे - मनि़रे ।

३.

गपनि - निपग
पनिग - पगनि
गनिप - निगप ।

४.

रेमध - धर्मरे
मधरे - मरेध
रेधम - धरेम ।

५.

पनिरें - रेंनिप
निरेंप - निपरें
परेंनि - रेंपनि ।

६.

मधसां - सांधम
धसांम - धमसां
गसांध - सांमध ।

७.

निरेंमें - मंरेंनि
रेंमंनि - रेंनिमें
निमंरें - मंनिरें ।

८.

धसांगं - गंसांध
सांगंध - सांधगं
धगंसां - गंधसां — ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१.

सागपग — पगसाग
गपसाग — गसापग
सापसाग — पसापग ।

३.

नि़रेमंरे — मंरेनि़रे
रेमंनि़रे — रेनि़मंरे
नि़मंनि़रे — मंनि़मंरे ।

४.

गपनिप — निपगप
पनिगप — पगनिप
गनिगप — निगनिप ।

५.

रेमंधमं — धमंरेमं
मंधरेमं — मंरेधमं
रेधरेमं — धरेधमं ।

६.

पनिरेंनि — रेंनिपनि
निरेंपनि — निपरेंनि
परेंपनि — रेंपरेंनि ।

७.

मंधसांध — सांधमंध
धसांमंध — धमंसांध
मंसांमंध — सांमंसाध ।

८.

निरेंमंरें — मंरेंनिरें
रेंमंनिरें — रेंनिमंरें
निमंनिरें — मंनिमंरें ।

९.

धसांगसां — गंसांधसां
सांगंधसां — सांधगंसां
धगंधसां — गंधगंसां—॥

२.

धसागसा — गसाधसा
सागधसा — साधगसा
धगधसा — गधगसा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग यमन में

****

१. नि़ रे ग मं ध नि — नि ध मं ग रे नि़ ।
२. रे ग मं ध नि रें — रें नि ध मं ग रे ।
३. ग मं ध नि रें गं — गं रें नि ध मं ग ।
४. ध़ नि़ रे ग मं ध — ध मं ग रे नि़ ध़ ।
५. मं़ ध़ नि़ रे ग मं — मं ग रे नि़ ध़ मं़ ।
६. ग़ मं़ ध़ नि़ रे ग — ग रे नि़ ध़ मं़ ग़ — सा ।।

१. नि़ रे ग मं ध नि — नि ध प मं ग रे सा नि़ ।
२. रे ग मं ध नि रें — रें सां नि ध प मं ग रे ।
३. ग मं ध नि रें गं — गं रें सां नि ध प मं ग ।
४. ध़ नि़ रे ग मं ध — ध प मं ग रे सा नि़ ध़ ।
५. मं़ ध़ नि़ रे ग मं — मं ग रे सा नि़ ध़ प़ मं़ ।
६. ग़ मं़ ध़ नि़ रे ग — ग रे सा नि़ ध़ प़ मं़ ग़ — सा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा —

नि़ध़नि़रे ग़ गरेसानि़ध़प़म़ग़

नि़ध़नि़रेगम़ मंगरेसानि़ध़प़म़

नि़ध़नि़रेगम़प़ पम़गरेसानि़ध़प़

नि़ध़नि़रेगम़पध़ धपम़गरेसानि़ध़

नि़ध़नि़रेगम़धनि़ निधपम़गरेसानि़

नि़ध़नि़रेगम़धनिसा सांनिधपम़गरेसा

नि़ध़नि़रेगम़धनिरे रेंसांनिधपम़गरे

नि़ध़नि़रेगम़धनिरें (रे) ग गंरेंसांनिधपम़गरेसा ॥

म़म़ध़नि़रेग — म़म़गरेसानि़

ध़ध़नि़रेगम़ — धधपम़गरे

नि़नि़रेगम़ध — निनिधपम़ग

रेरेगम़धनि — सांसांनिधपम़

गगम़धनिरें — गंगंरेंसांनिध

म़म़धनिरेंगं — मं मं गंरेंसांनि

धधनिरेंगंमं — धंधंमं गंरेंसांनिधपम़गरेसा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिलावल

स्थायी — तीनताल

ग रे ग प	नि– धनि	सां — सां नि	ध प म ग
०	३	×	२
ग प म ग	म रे सा–	धनि सांरें सांनि धनि	सांनि धप मग रेसा
०	३	×	२

अंतरा :–

ग प नि ध	नि नि सां–	ध नि सां रें	गं रें सां —
०	३	×	२
सां रें सां, गं	मं रें सां रें	निध सांनि गंरें सांनि	धप गप गम रेसा
०	३	×	२

आरोह :– सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह :– सां नि ध प म ग रे सा

पकड़ :– सा–ग–मगमरे–पगप–ध–पनिधनिसां–।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अल्हैया बिलावल

स्थायी — तीनताल

ग म नि॒ ध	प ध म प	ग रे ग प	म ग म रे
०	३	×	२
ग— प म	ग म रे सा	ध़ नि़ (सा)–	ध़ नि़ ध़ प़
ग म रे ग	प नि ध नि	(सां)– ध नि॒	ध प ध ग
०	३	×	२

अंतरा :–

प प ध नि	ध नि सां—	ध नि सां नि	ध नि॒ ध प
०	३	×	२
ग रे ग प	— नि ध नि	सां गं रें सां	रें नि सां—
ध नि सां रें	सां नि ध नि॒	ध — प ध	ग म रे सा
०	३	×	२

आरोह – अवरोह स्वरूप :–

सारेगरेगप — गमनि॒धप — निधनिसां —

सांनिधनि॒धप—ध—गपमग—मगमरेसा—।।

पकड़ :– साग — मगमरे — पगप — निधनिसां—धनि॒धप—।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अल्हैया बिलावल

स्थायी — झपताल

ग प	ध – नि	सां –	ध नि॒ प
×	२	०	३
ध —	ग प म	ग –	म रे सा
ध़ नि़	सा रे सा	ध़ ध़	नि़ – प़
ग रे	ग – प	नि ध	नि – सां
गं रें	सां – नि	ध नि॒	प ध ग
×	२	०	३

अंतरा :–

प प	नि ध नि	सां –	ध नि सां
×	२	०	३
ध नि	रें सां नि	ग म	नि॒ ध प
रें सां	गं मं रें	सां नि	ध नि सां
ध नि॒	प ध ग	प ग	म रे सा
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग यमन

स्थायी — तीनताल

ग— मं (ध प	रे— सा—	नि़ ध नि़ रे	ग रे ग—
३	×	२	०
ग मं ध नि	सां नि ध प	मं नि ध प	मं ग रे सा
नि़ रे ग रे	ग मं ध मं	ध नि रें नि	सां नि ध प
३	×	२	०

अंतरा :-

प— ग मं	नि ध नि—	सां— —सां	नि रें सां—
०	३	×	२
नि रें गं रें	नि ध सां नि	मं ध प मं	रे मं ग—
नि़ रे ग—	रे ग, रे ग	मं ग मं, ग	मं ध— मं
ध, मं ध नि	ध नि, ध नि	सां— नि सां	नि ध प मं
ग रे सा—	ग— मं (ध प	रे— सा—	.....
०	३	×	

आरोह - अवरोह स्वरूप :-

सा — नि़रेग — मंप — मंधनि — धसां ।

सांनिधप — मंग — रेसा ।।

पकड़ :- सा — नि़रेग — रेमंग (प) रे — सा— ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग यमन कल्याण

स्थायी — तीनताल

			नि़
ध़ नि़ – रे	ग – – प	मं ग म ग	ग रे सा, ग
३	×	२	०
मं नि ध नि	प सां – प	– रे ग मं	रे ग सा, नि़
ध़ नि़ – रे	ग – – –		
३	×		

अंतरा :–

प – मं रे	मं ध नि ध	सां – – सां	नि रें सां –
०	३	×	२
नि रें गं रें	नि ध मं रे	मं ध नि, नि	मं म ग –
ध़ नि़ ग रे	मं ध नि ध	सां – – प	– रे ग मं
रे ग सा, नि़	ध़ नि़ – रे	ग – – –	
०	३	×	

आरोह–अवरोह स्वरूप :–

सा — नि़रेग — मंप — मंधनि — धसां — ।

सां — निधप — मंगमग — परे — सा — ।।

पकड़ :– सा — नि़ध़नि़ — रेग — मग — पमंगमग —

रेमंग — परे — नि़ध़सा — ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज

स्थायी — तीनताल

नि़ सा ग म	प ग – म	नि॒ ध – म	प ध म ग
०	३	×	२
प ग म ग	सा रे नि़ सा	ग म प ध	ग म ग –
ध नि सां नि॒	ध – प ध	सां नि॒ ध प	म ग रे सा
०	३	×	२

अंतरा :-

ग म ध नि	सां नि सां –	सां गं रे सां	रें नि सां –
०	३	×	२
नि॒ ध – म	प ध म प	ध प म ग	रे सा नि़ सा
नि़ सा ग म	प ध नि सां	ध नि॒ प ध	म प ग म
०	३	×	२

आरोह :- नि़ सा ग म प ध नि सां ।

अवरोह :- सां नि॒ ध प म ग रे सा ।।

पकड़ :- धनिसां — नि॒ध — मपधमग — पमगरेसा — ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरव

स्थायी — तीनताल

ग म प ग	म रे – सा	ध – प ध	म प ग म
०	३	×	२
ग (म) – रे	– सा नि सा	ध – – प	ध नि सा –
रे – ग म	ध – नि सां	रें – सां नि	ध प म प
०	३	×	२

अंतरा :–

म प – प	ध ध नि नि	सां – सां सां	रें रें सां –
०	३	×	२
ध – नि सां	गं मं रें सां	नि नि सां रें	नि सां ध प
सा – म प	ग म ध नि	सां नि ध प	म ग रे सा
०	३	×	२

आरोह :– सा रे ग म प ध नि सां ।

अवरोह :– सां नि ध प म ग रे सा ।।

पकड़ :– सा — रेगम ध — धप — धमपग —

गमप ग(म) रे — रेसा — ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी

स्थायी

तीनताल

रे ग॒ सा रे ३	प – प म ×	ध नि॒ ध प २	म प ग॒ रे ०
ग॒ रे – ग॒	सा रे नि॒ सा	नि॒ ध॒ ग॒ रे	नि॒ ध म प
ग॒ – रे ग॒	सा रे नि॒ सा	रे नि॒ ध नि॒	प ध म प
ध नि॒ सां रें ३	गं रें सां नि॒ ×	ध प म ग॒ २	रे सा नि॒ सा ०

अंतरा :-

म म प ध ३	नि॒ ध नि॒ – ×	सां – – सां २	नि॒ रें सां – ०
नि॒ ध सां नि॒	गं रें नि॒ ध	म प – प	रे ग॒ रे सा
नि॒ सा रे सा	रे ग॒ – म	प – प म	प ध नि॒ सां
ध नि॒ सां रें ३	गं रें सां नि॒ ×	ध प म प २	ग॒ ग॒ रे सा ०

आरोह :- सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां ।

अवरोह :- सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा ॥

पकड़ :- सा — रेप — मपग॒रे — ग॒ममप — ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी (दूसरा प्रकार)

स्थायी — तीनताल

म प ग म	रे ग॒ सा रे	प – ध नि॒	ध प म ग
०	३	×	२
म प ध॒ रे	म प नि सां	ध नि॒ मं रें	ध नि॒ म ग
०	३	×	२

अंतरा :-

नि॒ ध म प	ग॒ रे म प	नि – नि सां	– रें नि सां
०	३	×	२
सां रें नि॒ ध	म प ग॒ रे	सा रे – ग॒	– म प, म
प ध – नि॒	सां, ध नि॒ सां	– रें सां नि॒	ध प म ग
०	३	×	२

आरोह – अवरोह स्वरूप :-

सा रे ग॒ म प — गमग॒रे — मपधनि॒ध — मपनिसां ।

सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा ॥

पकड़ :- सा — रेग॒सारेप — धनि॒ध — मपगमग॒रे — ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग आसावरी

स्थायी — तीनताल

प म प सां ३	ध ध (प) – ×	ध – रे सा २	रे म प – ०
ध म रे प	म – रे सा	सा रे, रे नि़	नि़ ध़ सा सा
रे म प, म ३	प ध – सां ×	रें नि ध प २	म ग रे सा ०

अंतरा :-

म प – प ३	ध ध नि ध ×	सां – सां सां २	रें नि ध सां ०
प गं रें सा	रें नि ध प	म प ध प	ग ग रे सा
सा रे नि़ ध़ ३	सा रे म प ×	ध गं रें सां २	रें नि ध प ०

आरोह :- सा रे म प ध सां ।

अवरोह :- सां नि ध प म ग रे सा ॥

पकड़ :- सा — रेमप — निध — प — धधपमपग —
रेसा — सारेनि़ध़ — सा — ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी

स्थायी — तीनताल

सा ध रे सा	रे नि़ ध़ नि़	सा म म प	ध ग रे सा
०	३	×	२
नि़ सा ग म	प ध प –	ध नि ध प	म ग म –
ग म ध नि	सां गं रें सां	नि सां ध प	ग म रे सा
०	३	×	२

अंतरा :–

ध म ध नि	सां – नि सां	प ध नि सां	नि मं रें सा
०	३	×	२
ध नि सां रें	नि सां गं मं	पं – गं मं	गं रें सां –
ध गं रें सां	रें नि ध प	म प ग म	ग रे सा –
०	३	×	२

आरोह :– सा रे ग म प ध नि सां ।

अवरोह :– सां नि ध प म ग रे सा ।।

पकड़ :– सा — नि़साग़ऽमप — धपनिधप — धमपग (म)

रे — सा — ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मारवा

स्थायी — तीनताल

रे॒ ग म॑ ध	म॑ ग रे॒ –	नि़ ध़ – नि़	ध़ रे॒ – सा
०	३	×	२
ध़ नि़ रे॒ ग	म॑ रे॒ ग म॑	ध – म॑ ध	नि ध रें॒ सां
ध रें॒ रें॒ नि	ध – म॑ ध	रें॒ नि ध म॑	ग रे॒ रे॒ सा
०	३	×	२

अंतरा :–

रे॒ ग म॑ ध	नि ध म॑ ध	रें॒ – – रें॒	नि ध सां –
०	३	×	२
ध नि रें॒ ग॒	गं रें॒ नि ध	म॑ ध ध म॑	ग रे॒ रे॒ सा
ध़ नि़ रे॒ ग	म॑ ध नि रें॒	नि ध, ध म॑,	म॑ ग, ग रे॒
०	३	×	२

आरोह – अवरोह स्वरूप :–

सा — नि़ध़रे॒ — गम॑ध — निधरें॒ — सां ।

सांनिरें॒— निध — म॑गरे॒ — गम॑गरे॒ — नि़ध़ — रे॒सा—॥

पकड़ :– सा — नि़ध़ — ध़रे॒ — गम॑गरे॒ — रे॒ध — म॑गरे॒ —
गरे॒ — नि़ध़ — ध़सा — ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग तोड़ी

स्थायी — तीनताल

रे॒ ग॒ – रे॒	सा रे॒ नि॒ सा	ध॒ – नि॒ सा	ग॒ रे॒ ग॒ –
०	३	×	२
ग॒ रे॒ ग॒ मं	ध॒ – मं ध॒	प – मं ध॒	नि ध॒ सां –
रें॒ गं॒ रें॒ सां	रें॒ नि ध॒ प	मं ध॒ मं ग॒	रे॒ ध॒ रे॒ सा
०	३	×	२

अंतरा :–

(प) – ग॒ मं	नि ध॒ मं ध॒	सां – – सां	रें॒ गं॒ रें॒ सां
०	३	×	२
ध॒ नि सां रें॒	गं॒ रें॒ गं॒ –	ध॒ नि, नि रें॒,	रें॒ ग॒, रें॒ सां
रें॒ नि ध॒ सां	नि ध॒ मं नि	ध॒ प मं ध॒	मं ग॒ रे॒ सा
०	३	×	२

आरोह–अवरोह स्वरूप :–

सारेग॒ — मंप — मंध॒ — निध॒सां।

सां — निरें॒निध॒ — प — मंध॒मंग॒ — रेग॒रेसा — ॥

पकड़ :– सारेग॒ — रेग॒रेमंग॒ — मंरेग॒रे॒ — नि॒ध॒ —

नि॒ मं ध॒ — मं नि॒ ध॒ सा — ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पूर्वी

स्थायी — तीनताल

रे॒ नि़ – रे॒	ग – रे॒ ग	प – मं ग	– म ग, रे॒ (सा)
३	×	२	०
मं ग – रे॒	सा – सा नि़	रे॒ ग – मं	प – – मं
ध॒ नि मं ध॒	सां – रें॒ नि	ध॒ – प मं	ग म ग, सा
रे॒ नि़ – रे॒	ग – रे॒ ग		
३	×		

अंतरा :-

मं, मं ग, मं	ध॒ – ध॒, नि	मं ग प, मं	ध॒ सां –, ध॒ (प)
३	×	२	०
नि नि, मं रे॒	ग – ग, रे॒	ग मं प, ग	म ग –, नि़
रे॒ ग मं, रे॒	मं ग, ग मं	ध॒ नि, मं नि	ध॒, ध॒ नि रें॒
गं नि गं रें॒	सां – रें॒ नि	ध॒ – प, मं	ग म ग, सा
रे॒ नि़ – रे॒	ग – रे॒ ग		
३	×		

आरोह-अवरोह स्वरूप :-

सा — नि़रे॒ग — मंप — मंध॒नि – सां ।

सां — निरें॒निध॒प — ध॒मंगमग — मंगरे॒सा — ॥

पकड़ :- सा — नि़रे॒ग — रे॒गप — पमंध॒प — ध॒मंग–मग — मंग॒रे॒सा — ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दस थाटों में आधारित एक स्वरमालिका

तीनताल

मं रे – रे ३	ग रे मं, ग ×	प नि ध – २	नि (सां) –, नि ०
ध – म ग,	म प – प	ध – ग (म)	रे – सा, नि
रे ग रे ग	प – – (मं)	ध – – प	–, रे ग मं
ध –, ध मं	ग रे – नि	ध –, सा –	रे ग – म
प –, प म	रे म प (सां)	ध ध प, ध	मं ग – रे
(ग) – रे सा	–, नि सा ग	– म प, ध	म ध – नि
सां, प ध नि	(मं) – रें सां	प ध म ग	म रे सा, प
मं रे – रे ३	ग ..... ×		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दस थाट रागों के कुछ राग - परिचायक स्वर समूह से बनी दस विशेष स्वर मालिकायें

राग यमन

दादरा ताल

सां	—	प	रे	—	सा	नि़	रे	ग	मं	ध	नि
×			०			×			०		
(रें सां	—	प	रे	—	सा	नि़	ध़	नि़	रे	ग	—
सां	—	प	रे	—	सा	नि़	ग	रे	मं	ग	प
सां	—	प	रे	—	सा	ग	रे	ध़	नि़	मं	ग
सां	—	प	रे	—	सा	ध	नि	मं	रे	ध़	नि़
सां	—	प	रे	—	सा	रे	मं	ध	नि	गं	रें
सां	—	प	रे	—	सा	गं	रें	नि	ध	मं	ग
सां	—	प	रे	—	सा	नि़	ध़	नि़	रे	ग	मं
सां	—	प	रे	—	सा	ध	नि	प	रे	मं	ग
×			०			×			०		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिलावल

कहरवा ताल

म ग रे ग	प नि ध नि	(सां) – ध प	म ग म रे
×	०	×	०
म ग रे ग	प नि ध नि	ध नि सां –	म ग म रे
म ग रे ग	प नि ध नि	रें सां – नि	ध प म ग
म ग रे ग	प नि ध नि	रें नि ध सां	ध प म ग
म ग रे ग	प नि ध नि	गं रें सां नि	ध प म ग
म ग रे ग	प नि ध नि	ग प ध, ग	प म रे ग
म ग रे ग	प नि ध नि	ध प ग प	ग म रे ग
म ग रे ग	प नि ध नि	सां ध नि प	ध म प ग
म ग रे ग	प नि ध नि	सां – ग रे	ग प म ग
म ग रे ग	प नि ध नि	सां नि ध प	म ग रे सा
×	०	×	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज

रूपक ताल

प	ग	म	नि॒	ध	प	ध	नि	–	सां	नि॒ ध	– म
×			२		३		×			२	३
प	ग	म	नि॒	ध	प	ध	(सां)	–	नि॒	ध –	म ग
प	ग	म	नि॒	ध	प	ध	रें	नि	सां	– नि॒	ध –
प	ग	म	नि॒	ध	प	ध	(नि॒)	–,	प	ध म	प ग
प	ग	म	नि॒	ध	प	ध	ग	म	ध	नि, रें	नि सां
प	ग	म	नि॒	ध	प	ध	ग	रे	सा	ग म	नि॒ ध
प	ग	म	नि॒	ध	प	ध	नि	गं	रें	नि सां	नि॒ ध
प	ग	म	नि॒	ध	प	ध	नि	रें	गं	रें नि	नि॒ ध
प	ग	म	नि॒	ध	प	ध	नि	सां	ध	नि॒ प	ध म
×			२		३		×			२	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरव

तीव्रा ताल

सा	—	म	म	प	ग	म	ध़	—	प	ग	म	रे़	—
×			२		३		×			२		३	
सा	—	म	म	प	ग	म	ध़	—	नि	सां	नि	ध़	प
सा	—	म	म	प	ग	म	रे़	—	ग	रे़	म	ग	प
सा	—	म	म	प	ग	म	ध़	—	नि़	सा	रे़	ग	म
सा	—	म	म	प	ग	म	नि	—	ध़	ध़	प	प	म
सा	—	म	म	प	ग	म	ध़	—	म	ग	म	रे़	ग
सा	—	म	म	प	ग	म	ध़	रे़ं	रे़ं	सां	नि	ध़	प
सा	—	म	म	प	ग	म	रे़	—	ग	म	प	ध़	—
सा	—	म	म	प	ग	म	सां	नि	ध़	प	म	ग	रे़
×			२		३		×			२		३	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग आसावरी

तीनताल

रे	म	प	ध	म	प	सां	–	ध	–	म	प
०				३				×			
रे	म	प	ध	म	प	सां	–	म	प	ध,	रे
रे	म	प	ध	म	प	सां	–	सा	रे	म	प
रे	म	प	ध	म	प	सां	–	म	प	ध	प
रे	म	प	ध	म	प	सां	–	रे	म	प	नि
रे	म	प	ध	म	प	सां	–	ध	गं	रें	सां
रे	म	प	ध	म	प	सां	–	नि	ध	–	ग
रे	म	प	ध	म	प	सां	–	सां	रें	नि	ध
रे	म	प	ध	म	प	सां	–	ध	–	ग	–
रे	म	प	ध	म	प	सां	–	गं	रें	नि	ध
०				३				×			

ध	–	रे	सा				
२							
म	प	ग	–				
ध	सां	नि	ध				
ग	ग	रे	सा				
ध	सां	ध	प				
रें	नि	ध	प				
–	रे	नि	ध				
म	प	ग	–				
रे	नि	ध	सा				
ग	रे	म	प				
२							

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मारवा

एकताल

ध — मं	ग रे — रे	ग रे नि़	ध़ — सा
×	२	०	३
ध — मं	रे — रे	रे ग मं	ध नि रें
ध — मं	रे — रे	ध़ नि़ रे	ग मं ध
ध — मं	रे — रे	रे ग, ध़	नि़, ग रे
ध — मं	रे — रे	नि़ ध़, ग	रे, नि ध
ध — मं	रे — रे	रे ग, ग	मं, मं ध
ध — मं	रे — रे	मं रे ग	नि मं ध
ध — मं	रे — रे	रे ग मं	नि ध सां
ध — मं	रे — रे	ध़ नि़ रे	ग गं रें
ध — मं	रे — रे	रे रें, रें	नि, नि ध
ध — मं	रे — रे	नि ध, रे	ग मं ध
ध — मं	रे — रे	ग रे, मं	ग, ध मं
ध — मं	रे — रे	रें नि ध	मं गं रे
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पूर्वी

तीनताल

				सा नि
रे ग – प	मं – मं ध	प ग – म	ग –,	सा नि
३	×	२	०	
रे ग – ध	प – – ध	मं प ग म	ग –,	सा नि
रे ग – नि	ध – मं ग	प – – मं	म ग,	सा नि
रे ग – म	ग, रे मं रें	नि ध – ध	प –,	सा नि
रे ग – मं	प – ग म	ग, नि मं ध	सां –,	सा नि
रे ग – मं	नि – नि मं	रे ग – म	ग –,	सा नि
रे ग – प	मं ग – म	ग, मं ग रे	– रे,	सा नि
३	×	२	०	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी

तीनताल

रे प ग म	रे ग सा रे	प – – प	ग म ग रे
०	३	×	२
रे प ग म	रे ग सा रे	ध – नि ध	ग म ग रे
रे प ग म	रे ग सा रे	नि़ रे ग प	ग म ग रे
रे प ग म	रे ग सा रे	ध म रे नि़	रे प ग रे
रे प ग म	रे ग सा रे	रे नि, नि ध	म ग ग रे
रे प ग म	रे ग सा रे	रे ग, ग म,	म प, ग रे
रे प ग म	रे ग सा रे	रे नि ध नि	म प ग रे
रे प ग म	रे ग सा रे	नि ध म प	नि सां गं रें
रे प ग म	रे ग सा रे	गं रें नि ध	म ग नि़ सा
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी

एकताल

ग — ग	सा रे सा	नि — सा	ग म प
×	२	०	३
म — ग	सा रे सा	ध़ नि़ सा	ग रे सा
म — ग	सा रे सा	ध प ग	म रे सा
म — ग	सा रे सा	म ग रे	ग सा रे
म — ध	सा रे सा	ध म रे	नि़ ध़ सा
म — ग	सा रे सा	सा ग म	प ध प
म — ग	सा रे सा	सा ग प	ध म रे
म — ग	सा रे सा	रे म ध	नि प ग
म — ग	सा रे सा	ग प नि	सां ध म
म — ग	सा रे सा	म ध सां	रें नि प
म — ग	सा रे सा	प नि रें	गं सां ध
म — ग	सा रे सा	ग म ध	नि रें सां
म — ग	सा रे सा	रें नि प	नि रें सां
ध — म	ग प ध	नि ध रे	ग म सा
×	२	०	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग तोड़ी

तीनताल

			ग॒
रे॒ सा – रे॒	नि़ – नि़ ध़	सा – सा नि़	रे॒ – ग॒, ग॒
३	×	२	०
रे॒ सा – रे॒	नि़ – नि़ ध़	ध़ – प मं	रे॒ ग॒ रे॒, ग॒
रे॒ सा – रे॒	नि़ – नि़ ध़	सा नि़ रे॒ सा	ग॒ रे॒ मं, ग॒
रे॒ सा – रे॒	नि़ – मं रे॒	ग॒ ध़ नि़ ग॒,	ग॒ रे॒ सा, ग॒
रे॒ सा – रे॒	नि़ – ध़ नि़	मं, नि़ ध़ रे॒	मं रे॒ ग॒, ग॒
रे॒ सा – रे॒	नि़ – ध़ नि़	नि़ रे॒ रे॒ ग॒	ग॒ रे॒ सा, ग॒
रे॒ सा – रे॒	नि़ – मं रे॒	ग॒, नि मं ध़	प मं रे॒, ग॒
रे॒ सा – रे॒	नि़ – रे॒ ग॒	मं ध़ नि मं	रे॒ ध़ नि़, ग॒
रे॒ सा – रे॒	नि़ – नि मं	ध़ सां – मं	रे॒ ग॒ प, ग॒
रे॒ सा – रे॒	नि़ – सा रे॒	ग॒ मं ध़ नि	सां – सा, ग॒
रे॒ सा – रे॒	नि़ – रे॒ ग॒	मं ध़ नि रें	गं रें सां, ग॒
रे॒ सा – रे॒	नि़ – नि मं	ध़ सां – नि	मं ध़ प, ग॒
रे॒ सा – रे॒	नि़ – नि़ ध़	ध़ नि़ रे॒ ग॒	मं ध़ प, ग॒
		२	०
रे॒ सा – रे॒	नि़ –		
३	×		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिलावल

स्थायी — तीनताल-मध्यलय

ग रे ग प	निध नि सां नि	ध - प म	ग - म रे
स क ल शु	ऽऽ द्ध स्व र	मे ऽ ल बि	ला ऽ व ल
०	३	×	२
म)	ग)		
ग प म ग	म रे सा सा	धनि सांरें सांनि धनि	सांनि धप मग रेसा
मा ऽ न त	गु नि ज न	प्रा ऽ त स	म य गा य

अन्तरा

ध प मग प	नि धनि सां -	गं रें गं मं	रें — सां —
धै ऽ वऽ त	वा ऽऽ दी ऽ	गा ऽ स म	वा ऽ दी ऽ
नि)	(सां	नि)	
ध नि सां रें	सां नि ध नि	ध नि सां नि	धनि सांनि धप मग
सं ऽ पू र	न मा ऽ न	म न को, रि	झाऽ ऽऽ ऽऽ यऽ
०	३	×	२

स्थायी :— सकल शुद्ध स्वर मेल बिलावल ।
मानत गुनि जन प्रात समय गाय ।।

अन्तरा :— धैवत वादी ग समवादी ।
सम्पूरन मान मन को रिझाय ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिलावल

स्थायी — तीनताल-मध्यलय

धनि सां ध प	मग मरे ग म	गम प म ग	म रे सा —
जाऽऽ गो जा	ऽऽ गोऽ कुँ व	रऽ ऽ का ऽ	ऽ ऽ न्हा ऽ
०	३	×	२
सा – ग ऽरे	पग प नि धनि	सां सांगं रें सां	सांरें सांनि धप मग
कुं ऽ ज नऽ	मेंऽ ऽ पं छीऽ	ला ऽऽ गे बो	ऽऽ ऽऽ लऽ नऽ

अंतरा

प प निध नि	सां सां सां सां	सां – सां सां	नि रें सां सां
तु म रेऽ द	र स चा हें	ग्वा ऽ ल बा	ऽ ल ह म
धनिधनिसांरें	सांनि धप मग मरे	ग म प ग	म रे सा सा
ठा ऽ ढ़ेऽ ऽऽ	द्वाऽ ऽऽ रेऽ ऽऽ	प ल क मुं	ऽ द बि न
प)	(सां		
ग रे ग प	नि नि ध नि	सां सांगं रें सां	सांरें सांनि धप मग
त र स त	हि य रा ऽ	तु मऽ रे मि	लऽ नऽ बिऽ नऽ
०	३	×	२

स्थायी :- जागो जागो कुंवर कान्हा। कुंजन में पंछी लागे बोलन ।।
अंतरा :- तुमरे दरस चाहें ग्वाल बाल हम ।
ठाढ़े द्वारे पलक मुंद बिन । तरसत हियरा तुमरे मिलन बिन ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१.	सा – – –	– – ग रे	ग – – –,	ग रे ग म
	ग – –, म	रे ग रे म	ग – प म	ग – –, ग
	रे ग प ध	ग प – म	ग –, म ग	म रे सा –
	०	३	×	२
२.	सा – सा रे	ग रे प ग	प – – –,	ग प म ग
	म रे प ग	प – –, ग	म ग प म	ग –, नि़ ध़
	सा –, ग रे	ग प ध़ म	ग –, म ग	म रे सा –
३.	म ग रे ग	प – –, म	प –, ग म	रे ग प –
	– –, म ग	म रे – सा	प –, ध प	ध ग प म
	ग –, रे ग	प नि ध नि	प – म ग	म रे सा –
४.	ग म रे ग	म ग म रे	– प ग प	ध – –, ग
	प म ग –	– – ग म	रे ग प नि	ध –, ग प
	नि,ध नि सां	ध – ग प	म ग – म	ग म रे सा
५.	सा रे ग रे	ग प, ग प	म ग म रे	ग प नि –
	– – ध नि	– – ग रे	ग प नि –	म ग म रे
	ग नि़ नि –	ध नि सां –	ध ग प म	ग म रे सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६.	ग रे ग प	नि ध - नि	सां - - -	- - सां रें
	सां - - नि	सां -, ध नि	सां - प नि	ध नि सां -
	ध ग प म	ग - म रे	ग प नि ध	- नि सां -
७.	सां - - -	- - नि सां	ध नि सां, गं	रें गं - -
	मं गं मं रें	गं - - नि	ध - ग प	म ग - म
	रे ग - सा	ग रे ग प	ग प नि ध	- नि सां -
	०	३	×	२

तानें

८ मात्रायें :-

१. गरे गप धनि सांनि धप मग मरे सासा ॥
२. सारे गम पध निसां सांनि धप मग रेसा ॥
३. गप धनि सांरें गंरें सांनि धप मग रेसा ॥
४. धनि सांनि सांरें सांनि धप गप गम रेसा ॥

१२ मात्रायें :-

५. सारे गरे सानि धनि सारे गरे गप धनि सांनि धप मग रेसा ॥
६. गप धप धनि सांनि सांरें सांनि गंरें सांनि धप मग मरे सासा ॥

१६ मात्रायें :-

७. सारे गरे गप मग गप धप गप मग
गप निध निनि सांरें सांनि धप मग रेसा ॥
८. सारे गम गरे, गप धनि धप, धनि सांरें
सांनि, सांरें गंमं गंरें सांनि धप मग रेसा ॥
१०. धनि सांरें गंरें सांनि धप मग मरे, गप
धनि सां-, गप धनि सां-, गप धनि सां- ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अल्हैया बिलावल

स्थायी — तीनताल

धनि सां धनि प	ध -- ग प	म ग — ग	म रे सा सा
अल् ऽ हैऽ या	रा ऽ ग क	हे ऽ ऽ गु	नि ऽ य न
०	३	×	२
निध़ नि़ सा रे	सा ध़ नि़ प़	गम रे ग प	नि ध -- प
शुऽ ऽ द्ध स्व	र सं ऽ ग	कोऽ ऽ म ल	नि षा ऽ द
प)			
ग रे ग प	नि धनि सां सां	सां नि धनि प	गम रे सा सा
मे ऽ ल बि	ला ऽऽ व ल	व क रऽ सं	पूऽ ऽ र न
०	३	×	२

अंतरा

ध -- प म	ग प नि धनि	सां -- सां सां	निसां रें सां सां
धै ऽ व त	गं ऽ धा रऽ	सं ऽ वा द	माऽ ऽ न त
०	३	×	२
निध नि सां रें	सां नि ध नि	गं रें गं मं	रें रें सां सां
प्राऽ ऽ तः स	म य नि त	गा ऽ व त	ब जा व त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां ध नि॒ प	म ग म रे	गरे गप धनि सांनि	धनि॒ धपमग रेसा
य ही ऽ क	हे ऽ स ब	शाऽ ऽऽ स्त्रऽ ऽऽ	बऽ खाऽ ऽऽ नऽ
०	३	×	२

स्थायी :- अल्हैया राग कहे गुनियन, शुद्ध स्वर संग कोमल निषाद
मेल बिलावल वक्र सम्पूरन ।।

अंतरा :- धैवत गंधार संवाद मानत, प्रातःसमय नित गावत बजावत
यही कहे सब शास्त्र बखान ।।

राग अल्हैया बिलावल

स्थायी तीनताल

(म प)	नि)	सां)	ग
ग रे ग प	ध नि सां नि	ध नि॒ ध प	म ग म रे
भो ऽ र भ	ई ऽ म न	मो ऽ ह न	जा ऽ गो ऽ
०	३	×	२
		नि)	
ग म(प) ग	म रे सा सा	ध़ नि़ (सा) ध़	नि़ प़ प़ प़
तु म रे द	र स ला गि	ग्वा ऽ ल बा	ऽ ल स ब
ग मनि॒ ध प	नि धनि सां गं	रें -- निसां धनि	सांनि धनि॒ धप मग
मो ऽऽ रे ऽ	आँ ऽऽ ग न	वा ऽ ठाऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ढ़ेऽ ऽऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

प) (सां		सां	
ग प नि धनि	सां सां सां सां	सां गं रेंगं मं	रें – सां सां
डा ऽ र डाऽ	ऽ र स ब	पं ऽ छोऽ ऽ	बो ऽ ल न
०	३	×	२
सां)			
ध नि ध प	म ग म रे	गम नि ध प	धनि सां धनि प
ला ऽ गे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ब्रिऽ ऽ ज वा	सीऽ ऽ जऽ न
(प (प			(सां
पधग–गमगम	रे नि रे सा	निसा म ग प	नि धनि सां –
तऽ जऽतऽ सऽ	ब का ऽ म	तुऽ म सों मि	ल नऽ को ऽ
ध नि प ध	ग – मग मरे	गरे गप निधनिसां	धनिधपमगरेसा
बा ऽ ट नि	हा ऽ रेंऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
०	३	×	२

स्थायी :- भोर भई मन मोहन जागो,
तुमरे दरस लागि ग्वाल बाल सब मोरे आँगनवा ठाढ़े ।।

अंतरा :- डार डार सब पंछी बोलन लागे
ब्रिज वासी जन तजत सब काम तुमसों मिलन को
बाट निहारें ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१.	सा – – –	सा रे ग रे	ग – – –	ग रे ग प
	म ग – –	ध नि॒ ध प	म ग – –	ग रे ग प
	ध – ग प	म ग – –	म ग म रे	सा – – –
	०	३	×	२
२.	सा – ग रे	ग – – –	सा नि़ ध़ नि़	ध़ – प़ –
	सा – ग रे	ग – – –	ग म नि॒ ध	प – – –
	ध – ग प	म ग – रे	ग प म ग	म रे सा –
३.	सा नि़ ध़ नि़	ध़ प़ ग रे	ग प – –	ध नि॒ ध प
	– – ग प	म ग म रे	ग प ध नि॒	ध प – –
	ध नि सां ध	नि॒ ध प –	ध ग प म	ग म रे सा
४.	म ग म रे	ग प – –,	ग म नि॒ ध	– प –, प
	म ग म रे	ग प ध नि॒,	ध नि सां, ध	नि॒ ध – प
	– – सां –	ध नि॒ ध प	– – ध म	ग म रे सा
५.	प – म ग	म रे, ग म,	ग प ध नि॒	ध प नि ध
	– नि सां –	– – – –	सां नि ध नि॒	ध – प –
	नि ध – नि	सां – – –	सां ध नि॒ प	नि ध नि सां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६.	सां -- -- --	- - - -,	प नि ध नि	सां - - -,
	ध नि॒ ध प	नि ध - नि	सां - - -,	ग म नि॒ ध
	प --, नि ध	- नि सां -	मं गं मं रें	- सां - -
७.	प - म ग	- -, ध -,	ग प म ग	- -, ध नि॒
	ध - प -	ग प म ग	- -, ध नि	सां,ध नि॒ ध
	प, ग प म	ग - - -,	ध नि सां रें	गं रें सां नि
	ध नि॒ ध प	ग प म ग	- -, म ग	म रे सा -
	०	३	×	२

तानें

८ मात्रायें :-

१. सारे गरे गप धनि॒ धप मग मरे सासा ॥

२. गप धनि सांनि धनि॒ धप मग मरे सासा ॥

३. धनि सांनि धनि॒ धप गप मग मरे सासा ॥

४. धनि सांरें गंरें सांनि धनि॒ धप गम रेसा ॥

५. सांनि धनि सांरें सांनि धनि॒ धप मग रेसा ॥

१३ मात्रायें :-

६. सारे गरे गप मग मरे, गप धनि सांनि धनि॒ धप मग मरे सासा ॥

७. धप गप मग मरे गप धनि सांरें गंरें सांनि धनि॒ धप मग रेसा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६ मात्रायें :-

८. सारे गरे गप, गप धप धनि, धनि सांनि
सांरें गंरें सांनि धनि धप मग मरे सासा ॥

९. गप मग मरे, गप धप धनि धप गप
मग मरे, सांनि धनि धप मग मरे सासा ॥

१०. सारे गरे सानि़ धनि़ धप़, धनि़ सारे गरे
गप धनि सांनि धनि धप मग मरे सासा ॥

बिलावल की तानें

६ मात्रायें :-

१. सारे गरे गप मग मरे सा—
२. सारे गरे गप, गप धनि सां— ॥
३. धनि सांनि धप मग मरे सा— ॥
४. सांरें गंरें सांनि धप मग रेसा ॥

१० मात्रायें :-

५. सारे गरे गप धनि सांरें गंरें सांनि धप मग रेसा ॥
६. धप मग मरे गप धनि सांरें सांनि धप मग रेसा ॥
७. पनि धनि सां— गप मग मरे गप धनि सां— सा— ॥

१६ मात्रायें :-

८. सारे गरे गप, गप धप धनि, धनि सांनि
सांरें, सांरें गंरें सांरें सांनि धप मग रेसा ॥

९. सांनि धनि सांनि धप मग मरे सा—, गप
धनि सां— गप धनि सां— गप धनि सां— ॥

१०. गगरे गप, निनिध निसां, गंगंरें सांरें, निनि
धनि सांनि धप मग मरे गप धनि सां ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग यमन

स्थायी — तीनताल

प प सां निध नि	(ध प मं ग मं	(प ग) गमं प मं रे	रे) ग — ग ग
गु नि यऽ न	इ ऽ म न	राऽ ऽ ग सु	ना ऽ व त
०	३	×	२
(मं नि़ रे ग रेग	ग मंप रे — सा	ध)नि) मं ध नि सां	निध नि प मंग
क र त तीऽ	ऽऽ व ऽ र	स क ल सु	रऽ न को ऽऽ
मं मंध निसां नि	निरेंगंरेंनिधनि	मं प मंध निसां	निधपमंगरेसासा
क ल्याऽ ऽऽ न	मेऽ ऽऽ लऽ ज	नि त माऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ नऽ तऽ
०	३	×	२

अंतरा

ग मंध मं ध	सां — सां—	नि — रें सां	ध निध नि प मंग
गं धाऽ ऽ र	वा ऽ दी ऽ	नि ऽ स म	वाऽ ऽ दी ऽऽ
०	३	×	२
ग मंध मं ध	मंध निसां सां–	नि — रें गं	सांनि गं सां—
गं धाऽ ऽ र	वाऽ ऽऽ दी ऽ	नि ऽ स म	वाऽ ऽ दी ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

	मं)	ग	
नि—प, प	— रे — ग	नि प प रे	ग रे सा सा
	सं	ऽ ग ति दि	खा ऽ व त
सा ग) ध)	नि)		
नि़ रे ग,मं	ध नि निरें गंरें	निध नि, निरेंगंरें	सांनि धप मंग रेसा
रा ऽ त,प्र	थ म प्रऽ ऽऽ	हुऽ र जाऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ नऽ तऽ
०	३	×	२

स्थायीः- गुनियन इमन राग सुनावत,करत तीवर सकल सुरन को
कल्याण मेल जनित मानत ।।

अंतरा :- गंधार वादी नि समवादी, निप परे संगति दिखावत
रात प्रथम प्रहर जानत ।।

राग यमन

स्थायी तीनताल

प)			मं
मं नि (प) —	रे — सा नि़	रे ग — रे	ग — — —
ला ऽ गी ऽ	रे ऽ ऽ ल	ग न ऽ ला	गी ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×
प			
मं नि (प) —	रे — सा नि़	रे ग — रे	ग — नि़ रे
ला ऽ गी ऽ	रे ऽ ऽ ल	ग न ऽ ला	गी ऽ श्या ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग मं ध नि	मं ग मं ध	निगं रें निरेंगंरें	सांनिधपमंगरेसा
म सुं द र	सों ऽ ल ग	नऽ ऽ लाऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ गीऽ ऽऽ
२	०	३	×

अंतरा

पध मंप मं ग	मं ध मं निध	सां सां सां सां	नि रें सां सां
सुऽ मिऽ र न	क रूँ मैं ऽऽ	घ ड़ि प ल	नि स दि न
०	३	×	२
पध मंप मं ग	मं ध मं निध	सां सां सां सां	नि रें गं रें
सुऽ मिऽ र न	क रूँ मैं ऽऽ	घ ड़ि प ल	ए ऽ क आ
नि ध मं ग	मं मंधनिसां प	रे — सा —	गमं धनिसां प--
ऽ स हो ऊँ	श्या माऽऽऽ नु	रा ऽ गी ऽ	लाऽ ऽऽऽ गी ऽ
०	३	×	२

स्थायी :- लागी रे लगन लागी। श्याम सुन्दर सों लगन लागी ॥

अंतरा :- सुमिरन करूँ मैं घड़िपल निसदिन
एक आस होऊँ श्यामानुरागी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१.	सा – – –	नि़ – रे –	सा – – –	नि़ ध़ सा –
	– – नि़ ध़	नि़ रे – नि़	ध़ सा – –	नि़ ध़ सा नि़
	ग रे – नि़	ध़ नि़ – –	नि़ ध़ नि़ प़	सा – – –
	२	०	३	×
२.	सा – – –	नि़ रे ग –	– – – –	ग रे ग –
	– – रे ग	– – म॑ ग	– – म॑ रे	– ग – –
	ग रे नि़ ध़	नि़ रे ग म॑	प – रे –	सा – – –
३.	नि़ रे ग म॑	रे ग रे म॑	ग – प –	– – – –
	म॑ प – –	म॑ रे ग –	रे म॑ ग म॑	प – म॑ ध
	प – – म॑	ध नि प म॑	रे ग – प	रे – सा –
४.	प म॑ ग म॑	नि ध नि –	– – ध नि	– – म॑ ध
	नि – – –	ध नि प –	रे म॑ ध नि	– – ध नि
	म॑ रे नि़ –	नि – नि ध	सां – प –	रे – सा –
५.	नि़ रे ग म॑	प – ग म॑	ध नि – ध	सां – – नि
	रें सां – नि	ध नि प –	ग म॑ ध नि	ध सां – –
६.	सां – – –	– – – –	सां नि ध नि	गं रें गं –
	– – गं रें	नि ध सां –	– – नि रें	सां – – –
	ध नि प –	रे ग – सा	नि़ रे ग म॑	ध नि सां –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७.	प मं ग रे	नि़ ध़ नि़ रे	ग मं रे ग	रे मं ग प
	मं ध नि ध	सां – – –	नि रें सां –	नि ध नि रें
	गं रें नि ध	सां – ध नि	प – रे –	– सा सां –
	२	०	३	×

१.	सा – – –	– – नि़ –	रे – सा –	– – नि़ ध़
	नि़ रे सा –	– – नि़ ध़	नि़ – प़ –	मं ध़ नि़ ध़
	सा – – –	नि़ ध़ नि़ रे	ग रे नि़ ध़	सा – – –

२.	सा – – –	नि़ – रे –	ग – – –	ग रे ग –
	– – रे ग	सा रे नि़ रे	ग – – –	नि़ ध़ प़,सा
	नि़ ग रे –	ग – – रे	ग रे मं ग	प रे – सा

३.	सा – नि़ रे	ग – – रे	ग – – मं	ग – मं रे
	ग – – नि़	रे ग मं प	मं रे ग –	– – रे ग
	ध़ नि़ प़ सा	– नि़ रे मं	ग प मं ध	प रे – सा

४.	नि़ रे ग मं	रे ग रे मं	ग प – –	– – – मं
	प – – मं	प मं – रे	ग प मं ग	प – – –
	मं ध नि ध	मं ग प, रे	ग रे, नि़ ध़	सा – – –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५.	(प) – मं ग	मं ध नि –	– – – ध	नि – – मं
	ध नि – –	प – रे ग	मं ध नि –	– – ध नि
	सां नि – –	मं रे नि़ –	नि – (प) –	रे – सा –
६.	नि़ रे ग मं	प मं ग मं	नि ध नि ध	सां – – –
	– – नि रें	सां – – नि	ध मं ध प	सां – – –
	नि रें गं रें	नि ध नि, मं	ध नि ध –	सां – – –
७.	सां – – –	– – – –	नि सां – –	नि रें सां –
	नि ध सां –	नि ध नि प	सां – – –	ध सां नि –
	मं ध प –	रे मं ग प	मं ध नि ध	सां – – –
८.	सां – नि ध	नि – रें –	गं – – –	गं रें नि ध
	नि रें नि गं	रें – नि ध	सां – – –	नि ध नि प
	– – रे ग	– – सा –	नि़ रे ग मं	ध नि सां –

तानें

९ मात्रायें :-

१. गरे नि़रे गमं धनि रेंसां निध पमं गरे सासा ।।

२. नि़रे गमं धनि रेंगं रेंसां निध पमं गरे सासा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३. पमं गरे गमं, गमं धनि सांनि धप मंग रेसा ॥
४. गमंग मंधमं धनि सांनि धप मंग रेग रेसा ॥
५. धनिध निरेंनि गंरें निरें सांनि धप मंग रेसा ॥
६. धनि मंग मंध निरें गंरें सांनि धप मंग रेसा ॥

१६ मात्रायें :-

७. नि़रे गरे गमं धमं गमं धमं धनि रेंनि
धनि रेंनि रेंगं रेंसां निध पमं गरे सासा ॥

८. निनिध धध पमंग मंमंग धध पमंग
धधमं निनि धप मंग रेसा नि़रे गमंप ॥

९. नि़रे गमं पमं गरे गमं धनि सांनि धप
मंध निरें गंरें सांनि धप मंग रेग रेसा ॥

१०. नि़रे गमं पमं, गमं धनि सांनि, धनि रेंगं
रेंसां निध निरें गंरें सांनि धप मंग रेसा ॥

२५ मात्रायें :-

११. नि़ध़ नि़रे गरे, गग मंधमं धध निसांनि धरें रेंसांनि
धगं गंरें सांनि धरें नि- मंधनिमं धप मंग रेगमं
रेगरे नि़- ध़सा- ॥

७७ मात्रायें :-

१२. मंमंग, पप मंप मंमंग, धधप मंप मंमंग, धधप मंधप
मंप मंमंग, गमं गप मंप मंधप मंप मंमंग, गमं धनिध
मंधप मंप मंमंग, मंमंग पपमं धधप निनि धप मंधप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मंप मंमंग, गमं गमंप गमंध गमं धनिध मंधप मंप मंमंग, मंमं गगरे, गग रेरेसा, रेरेसा नि़सा, नि़नि़ध़ नि़रेग, मंमंग मंधनि, निनिध गंगंगं रेंसां निरें सांनि धप मंगऽ मंधनिसां– निध पमं गरे सा ।।

राग यमन कल्याण

स्थायी — झपताल

				(ध							रे
ग	रे	ग	मं	ग	ग	म	गरे	ग	सा		
रे	ऽ	म	ऽ	न	इ	ऽ	मऽ	ऽ	न		
×		२			०		३				
		ग)			रे)		(प				
नि़	—	रे	—	रे	ग	—	रे	—	सा		
कल	ऽ	ल्या	ऽ	ण	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		
					प						
नि़	रे	ग	—	ग	मं	नि	प	—	प		
ती	ऽ	व	ऽ	र	स	ब	सु	ऽ	र		
							।	ग			
मंध	निसां	नि	—	—	मं	ग	म	म	ग		
दोऽ	ऽऽ	नों	ऽ	ऽ	म	ऽ	ध्य	ऽ	म		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

	ग)										
नि़	रे	ग	—	मं	ध	मंधनि	सांनिधपमंगरे,सासा				
क	र	गा	ऽ	गा	ऽ	गाऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ		
×		२			०		३				

अंतरा

ग	—	मं	—	ध	धनि	सां	सां	—	—		
गं	ऽ	धा	ऽ	र	वाऽ	ऽ	दी	ऽ	ऽ		
×		२			०		३				
नि	—	रें	—	गं	निसां	नि	गं	(सां)	—		
नि	ऽ	स	ऽ	म	वाऽ	ऽ	ऽ	दी	ऽ		
मं	प	ग	म	रे	ग	—	ग	—	—		
रा	ऽ	त	ऽ	स	म	ऽ	य	ऽ	ऽ		
				नि)							
ग	नि	ध	—	ध	नि	धप	प	—	—		
प्र	थ	म	ऽ	प्र	ह	ऽऽ	र	ऽ	ऽ		
	ग)	रे)									
नि़	रे	ग	—	मं	ध	मंधनि	सांनिधपमंगरेसासा				
ति	त	गा	ऽ	गा	ऽ	गाऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ		
×		२			०		३				

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थायी :- रे मन इमन कल्याण गा
तीवर सब सुर दोनों मध्यम, कर गा गा गा ।।

अंतरा :- गंधार वादी नि समवादी
रात समय प्रथम प्रहर नित गा गा गा ।।

राग यमन कल्याण

स्थायी — तीनताल

			नि़ ध़
सा) ग)		ग	म न
नि़ रे ग रे	मं ग(प)—	रे रे ग म	ग —, नि़ ध़
बा व रे ऽ	क ब रे ऽ	ह रि भ जो	गे ऽ, म न
०	३	×	२
रे) ग) मं)	नि) प	मं ग	
नि़ रे ग मं	ध नि मं मंध	निसां प प रे	गम ग नि़ ध़
दि न रैं ऽ	न ऽ बी तेऽ	ऽऽ सु ख चैं	ऽऽ न, म न
०	३	×	२

अंतरा

	नि)		
प मं ग मं	धमं ध नि	सां — सां सां	नि रें सां —
मो ऽ ह म	ध़ लो ऽ भ	अ ऽ ष्ट पा	ऽ स सों ऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रें) गं)		मं ग	
नि रें गं रें	नि ध धनिसां प	रे रे ग म	ग —, नि़ ध़
त़ ड़ प त	ड़ प पाऽऽ छे	प छ ता ओ	गे ऽ, म न
०	३	×	२

स्थायी :- मन बावरे कबरे हरि भजोगे
दिन रैन बीते सुख चैन ॥

अंतरा :- मोह मद लोभ अष्ट पास सों
तड़प तड़प पाछे पछताओगे ॥

आलाप

१.	सा – – –	– – – –	नि़ रे ग –	– – रे ग
	म ग – –	रे ग रे मं	ग प मं ग	म ग – –
	रे ग रे –	नि़ – ध़ –	नि़ रे सा –	– – – –
२.	नि़ रे ग –	– – रे ग	– – रे ग	म ग – –
	नि़ रे सा –	नि़ ध़ नि़ रे	ग – प मं	ग म ग –
	– – ग रे	नि़ ध़ नि़ रे	ग मं प –	रे – सा –
३.	ग रे नि़ ध़	नि़ रे ग –	मं ग प –	– – – –
	मं – प –	– – ग म	रे मं ग प	– – मं –
	रे ग म ग	– – मं रे	ग मं ध प	रे – सा –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४.	प मं रे ग	म ग प मं	नि ध नि –	– – – ध
	नि – – –	मं ध नि –	– – प मं	रे ग मं ध
	नि – ध सां	नि – प –	रे ग म ग	रे नि़ ध़ सा
५.	नि़ ध़ नि़ रे	ग – रे ग	म ग मं ध	नि ध सां –
	– – – नि	रें – सां –	नि ध नि रें	गं – सां –
६.	सां – – –	– – – नि	सां – – नि	ध सां – –
	नि – प –	रे ग म ग	मं ध नि ध	सां – – –
७.	(सां)–नि ध	नि – रें –	गं – – –	रें गं रें, नि
	ध मं ग म	ग – – मं	ध नि ध नि	प – सां –

तानें

१० मात्रायें :-

१. नि़ध़ नि़रे गमं धनि रेंसां, निध पमं गम गरे सा– ।।
२. गरे नि़रे गम गरे, गमं धनि सांनि धप मंग रेसा ।।
३. पमं गम गरे, गरे नि़रे गमं धनि धप मंग रेसा ।।
४. गमं धनि धप, मंध निसां निध पमं गम गरे सा– ।।
५. निध निरें गंरें निरें सांनि धप मंग रेग मग रेसा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६ मात्रायें :-

६. नि़रे गम गरे, गमं धनि धप, मंध निरें
निध, निरें गंरें सांनि धप मंग मग रेसा ॥

७. गरे निध़ नि़रे गम गरे, गमं धनि ध,मं
धनि रेंनि, धनि रेंगं रेंसां निध पमं गरे ॥

८. पमं धप मंग रेग मग, निनि धप मंग
रेग मग, गंगं रेंसां निनि धप मंग रेसा ॥

२० मात्रायें :-

९. नि़रे गरे निध़, नि़ध़ नि़रे गम गरे निध़, नि़रे गमं
पमं गम गरे नि़रे गमं धनि सांनि धप मंग रेसा ॥

१०. धनि रेंगं गंरें धनि गमं मंग रेग मग रेगरे नि़ध़नि़
गरे ध़नि़ रेग मंध निसां निध पमं गरे सा— ॥

राग खमाज

स्थायी तीनताल

नि़सा गम ग म	गम पध म प	धनि सां नि़वपम	धप ध म ग
राऽ ऽऽ ग ख	माऽ ऽऽ ज सु	जाऽ ऽ नऽ सुऽ	नाऽ त हैं ऽ
०	३	×	२
प ग म ग	सारे--नि़ सा	नि़सा गम गम प	ग म ग —
ब र जि त	रिऽ ऽ ख भ	आऽ ऽऽ रोऽ ऽ	ह न में ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग म ध पध	(नि)— ध प	प ध नि (सां)	नि नि ध —
को ऽ म लऽ	नि ऽ षा द	अ व रो ऽ	ह न में ऽ
नि)	गं		
ध नि सां गं	मं गंरें नि सां	नि ध पमधपध	म ग रे सा
गा ऽ व त	स मऽ झा त	षा ऽ ड़ऽ वऽऽ	सं पू र न
०	३	×	२

अंतरा

ग म ध पध	नि— सां सां	नि —सां सां	सांनि रेंसां नि ध
गं ऽ धा रऽ	नि ऽ षा द	सं ऽ वा द	माऽ ऽऽ न त
०	३	×	२
ध नि सां गंगं	मं गं नि सां	नि ध पमधपध	म ग रे सा
ह रि का ऽम्	बु जि मे ल	द्वि प हऽ रऽऽ	रैं ऽ ऽ न
०	३	×	२

स्थायी :- राग खमाज सुजान सुनातहैं,बरजित रिखभ आरोहनमें
कोमल निषाद अवरोहन में
गावत समझात षाड़व सम्पूरन ।।

अंतरा :- गंधार निषाद संवाद मानत
हरि काम बुजि मेल द्विपहर रैंन ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग खमाज

स्थायी — तीनताल

नि़ सा ग म	प धनि प ध	धनि सां नि ध	प ध म पध म ग
अ ज हुं न	आ येऽ ए री	श्याऽ ऽ म सुं	द रऽ वा ऽ
०	३	×	२
म) नि)			
ग म ध नि	सां गं मं गं	सां रें नि सां	सांरेंसांनि धप मग
उ न बि न	नि स दि न	त र से जि	यऽ रऽ वाऽ ऽऽ
०	३	×	२

अंतरा

ग म प ध	धनिसांनिसांसां	नि नि सां रें	नि सां नि ध
रा ऽ ह नि	हाऽऽ रूँ कि त	उ न के आ	व न की ऽ
०	३	×	२
ध नि सां गं	मं गं नि सां	धनिसांरें निसां	सांनिधपमगरेसा
घ ड़ि प ल	छि न बी ते	जैऽ ऽऽ से जु	गऽ वाऽ ऽऽ ऽऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थायी :- अजहुं न आये ए री श्याम सुंदरवा
उन बिन निस दिन तरसे जियरवा ।।

अंतरा :- राह निहारूँ कित उनके आवन की
घड़ि पल छिन बीते जैसे जुगवा ।।

आलाप

१.	सा – – –	– – नि़ सा	ग – – म	ग – – –
	सा नि़ सा रे	नि़ सा ग म	ग – – म	ग रे सा –
२.	सा – सा रे	नि़ सा ग म	ग – – –	सा नि़ ध़ नि़
	सा ग म प	ग म ग –	– – – म	ग रे सा –
३.	नि़ सा ग –	– – – म	ग – ग म	प – ग म
	ग – ध –	म प ध –	म ग – प	म ग रे सा
४.	म ग रे सा	नि़ सा ग म	सा ग म प	– – – –
	म प ग म	ध़ नि़ ध –	प – – –	ध – म प
	ध – – म	ग – नि़ सा	ग म प ग	म ग रे सा
५.	प – – –	– ग म ग	प – – –	म प ग म
	ग – – –	ग म ग, सा	रे नि़, सा नि़	ध़ – नि़ सा
	ग म ग –	सा ग म प	ग म ग –	रे नि़ – सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६.	नि़ सा ग म	प – – ग	म प ध नि॒	ध – – –
	प ध नि॒ –	ध – – म	प ध नि॒ ध	प ध नि सां
	नि॒ – ध –	म प ध –	म ग – म	ग रे सा –
७.	ग म ध नि॒	ध – – प	ध नि(सां)–	नि सां नि॒ ध
	– – ध नि	सां रें नि सां	नि॒ ध – ग	म ध नि सां
८.	सां – – –	नि सां नि॒ ध	म प ध म	ग – – म
	ग रे सा –	नि़ सा ग म	प, ग म ध	नि सां – –

तानें

८ मात्रायें :-

१. नि़सा गम पध निसां नि॒ध पम गरे सासा ॥

२. नि़साग सागम गम पम गम गरे सासा ॥

३. गमप मपध पध नि॒ध पम गरे सासा ॥

४. पम गम पध निसां नि॒ध पम गरे सासा ॥

५. गम पध निसां गंरें सांनि॒ धप मग रेसा ॥

६. निसांरें निसां धनि॒ध मपध गम गरेसा ॥

१२ मात्रायें :-

७. नि़सा गम पम, गम पध नि॒ध, पध निसां नि॒ध पम गरे सासा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८. गमप गम गरेसा, गम पध निसां धनि
सांनि धप मग रेसा ॥

१६ मात्रायें :-

९. गग रेसा निसा, गम पम गम पध निध
पध निसां निसां गंरें सांनि धप मग रेसा ॥

१०. निसा गम पम गम गम पध निध पध
पध निसां गंमं गंरें सांनि धप मग रेसा ॥

राग भैरव

स्थायी — तीनताल

गम पध म प	ग म रे सा	ध – प ध	म प ग म
राऽ ऽऽ ग भै	ऽ ऽ र व	गा ऽ य गु	नि ऽ य न
०	३	×	२
गम पध म प	ग म रे सा	ध – प –	ग म रे –
राऽ ऽऽ ग भै	ऽ ऽ र व	गा ऽ य ऽ	क र त ऽ
ध रे सा –	सारेगम ग म	म प ग म	ध ध प प
ध रे को ऽ	ऽऽ ऽऽ म ल	शु ऽ द्ध ओ	ऽ र सु र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पध्रनिसां नि सां	ध्र – ध्ररें सां	नि सां ध्र म	प गम रे सा
संऽ ऽऽ पू र	न ऽ आऽ ऽ	श्र य रा ऽ	ग माऽ ऽ न
०	३	×	२

अंतरा

ध्र – म प	ध्र – नि निसां	रें – रें रें	ध्रनि सांरें सां –
धै ऽ व त	वा ऽ दी ऽऽ	रे ऽ स म	वाऽ ऽऽ दी ऽ
०	३	×	२
सांरें गंमं गं मं	रें रें सां सां	नि सां ध्र प	ग म रे सा
प्राऽ ऽऽ तः स	म य नि त	गा ऽ य सु	जा ऽ ऽ न
०	३	×	२

स्थायी :- राग भैरव गाय गुनियन, करत ध्ररे कोमल शुद्ध और सुर
सम्पूरन आश्रय राग मान ।।

अंतरा :- धैवत वादी रे समवादी
प्रातः समय नित गाय सुजान ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरव

स्थायी — तीनताल

			ग सु
म प म प	ध – – ध	– म ग (म)	रे – सा, ध
मि र न क ३	रो ऽ ऽ रे ×	ऽ मो ऽ रे २	म ऽ न,श्या ०
– सा रे –	सा ग म प	ध नि – सां	नि ध म, ग
ऽ म ना ऽ ३	म ए क सा ×	ऽ र ऽ क २	रो ऽ ऽ, सु ०

अंतरा

प – प प	ध – नि नि	सां – सां सां	रें रें सां –
चा ऽ हे र ०	हे ऽ तु म ३	दुः ऽ ख अ ×	न ल में ऽ २
सां सांरें गंमं–	रें रें सां सां	प पध निसां –	नि ध प म
द हेऽ ऽऽ ऽ	त न म न	ब हेऽ ऽऽ ऽ	न ऽ य न
सा म ग म	प ध प ध	पध निसां सां ध	सां नि ध म
क ब हुं न	बि स रो ऽ	श्याऽ ऽऽ म ना	ऽ म को ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म गम रेसा ग	म प म प	ध़ – – ध़	– म ग (म)
ऽ ऽऽ ऽऽ सु	मि र न क	रो ऽ ऽ रे	ऽ मो ऽ रे
०	३	×	२

स्थायी :- सुमिरन करो रे मोरे मन
श्याम नाम एक सार करो ।।

अंतरा :- चाहे रहे तुम दुःख अनल में, दहे तन मन बहे नयन
कबहुं न बिसरो श्याम नाम को ।।

आलाप

१.	सा – – –	– –,नि़(सा)	ध़ – – –	प़ – –, प़
	ध़ – – नि़	ध़ – सा –,	नि़ सा रे़ –	– – सा –,
	रे़ – – –	ग – – रे़	ग(म) – रे़	– – सा –
	३	×	२	०
२.	सा – – –	रे़ – – सा,	ग रे़ – –	सा – –, म
	ग म रे़ –	– सा – –	नि़ सा ध़ –	रे़ सा म ग
	म, सा रे़ –	– म ग प	ग म रे़ –	– सा – –
३.	सा – रे़ –	ग – – –	म ग – –,	म ग म रे़
	– – ग –	–, ग म रे़	म ग म रे़	– ग – –
	म प ग म	– ग म प	ग म रे़ –	– सा – –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४.	सानि़(सा)–	ध़ – नि़ ध़	सा –, रे़ ग	म – – –
	ग म – –,	रे़ म – सा	म – –, रे़	ग प म ग
	म रे़ ग सा	रे़ नि़ सा –	ध़ – – नि़	सा – – –
५.	सा रे़ ग म	ग, म ग म	प – – –	– – – –
	म प ध़ –	प – – –	म प ग म	ध़ – प –
	– – म प	ग म रे़ ग	म प ग म	रे़ – सा –
६.	ग म रे़ ग	म प ग म	ध़ – – –	प – – –
	ध़ – म प	ग म ध़ –	– – प –	– नि ध़ सां
	ध़ – – म	प ग म ध़	– ग म रे़	– – सा –
७.	म प ग म	ध़ – नि ध़	नि – सां –	– – – –
	ध़ – नि सां	रें़ – रें़ –	सां – – –	सां नि सां –
८.	सां – – –	– – – –	नि सां रें़ सां	नि सां ध़ –
	– – म प	ग म ध़ –	ग म रे़ –	नि़ सा ध़ –
	ध़ – नि ध़	सां – गं मं	रें़ – – –	सां – – –
	३	×	२	०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तानें

८ मात्रायें :-

१. सारे गम पध निसां सांनि धप मग रेसा ।।
२. रेग मप गम धनि सांनि धप गम रेसा ।।
३. गम रेसा नि़सा, धनि़ सारे गम रेरे सासा ।।
४. धध पध मप, गम धनि धप मग रेसा ।।
५. धनि सांरें सांनि धनि सांनि धप मग रेसा ।।

१२ मात्रायें :-

६. रेग मप धप, गम धनि सांनि धसां निध पध मप गम रेसा ।।
७. गम रेरे सानि़ धनि़, रेग मप गम धनि सांनि धप मग रेसा ।।

१६ मात्रायें :-

८. गमप गम रेरेसा, गमप गम धधप, धनिसां धनि सांरें सां, धनि धप गम रेसा ।।
९. सारे गम पम गरे, गम पध निध पम पध निसां रें गं रें सां निध पम गरे सासा ।।
१०. धधप मप, गम रेरेसा नि़सा, धध नि़सा रेग मप गम धनि सांनि धप गम रेसा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग काफी

स्थायी — तीनताल

	म)	ध)	
सा सा रे रे	ग॒ — म म	प — पधनि॒ ध	ग॒ — रे रे
गु नि ध्र न	गा ऽ व त	का ऽ ऽऽऽ फी	रा ऽ ऽ ग
०	३	×	२
	म)		
सा सा रे रे	ग॒ — म म	ग॒ रे सा रे	नि़ सा — सा
गु नि य न	गा ऽ व त	गं ऽ धा र	नि षा ऽ द
रे ग॒ म प	म ध नि॒ नि॒ध	पम प ग॒ रे	रे नि॒ ध नि॒
को ऽ म ल	शु ऽ द्ध औ ऽ	ऽऽ र सु र	ख र ह र
ध प ध नि॒	सांसांरेंगं॒रें नि॒	ध म प ग	म ग॒ रे सा
प्रि य मे ल	या ऽऽऽ मि नी	द्वि ऽ ऽ ऽ	ऽ प ह र
०	३	×	२

अंतरा

प ध म प	ध — नि॒ धनि॒	सां सां सां सां	रें नि॒ सां —
पं ऽ च म	वा ऽ दी ऽऽ	सु र स म	वा ऽ दी ऽ
०	३	×	२
सां नि॒ ध प	ग म ग॒ रे	नि़ सा — रे	नि़ ध़ सा सा
ती ऽ व र	गं ऽ धा र	नि षा ऽ द	अ ऽ ल प

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग म — प	रेग सारे — प	प ध म प	नि नि सां सां
प्र मा ऽ न	लेऽ ऽऽ ऽ त	आ ऽ रो ऽ	ह न में ऽ
ग) रें पं ग रें	नि ध म प	ग्रे रे ग्म धप धनि	सांनि धप मग रेसा
गा ऽ व त	स ब ज न	संऽ ऽऽ पूऽ ऽऽ	रऽ नऽ माऽ नऽ
०	३	×	२

स्थायी :- गुनियन गावत काफी राग
गंधार निषाद कोमल शुद्ध और सुर
खरहर प्रिय मेल यामिनी द्विपहर ।।

अंतरा :- पंचम वादी सुर समवादी, तीव्र गंधार निषाद अल्प
प्रमाण लेत आरोहन में, गावत सब जन सम्पूरन मान।।

राग काफी

स्थायी तीनताल

म) ग म प रे	ग म रेग सारे	प — — प	ध ग म —
द र स दे	ऽ हो मोऽ हेऽ	श्या ऽ ऽ म	अ ब की ऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प ध म प	रेम रेम प —	रे म रे सा	रे नि़ सा —
त न म न	मेऽ ऽऽ रो ऽ	तु म प र	वा ऽ रो ऽ
रे नि ध नि	प ध निध गं	रें नि ध म	ग रे नि़ सा
प्या ऽ सी ऽ	अं खि याँऽ ऽ	त र स न	ला ऽ ऽ गी
०	३	×	२

अंतरा

म म प ध	नि — ध नि	सां सां सां सां	रें नि सां —
तु म रो ही	दा ऽ स मैं	ज न म ज	न म की ऽ
०	३	×	२
ध नि रें रें	गंरें पं गं मं	(नि)— म प	नि — सां —
सु मि र न	कऽ र त हूं	ना ऽ म तु	म्हा ऽ रे ऽ
		म)प)	
सां सांमं रें नि	निध पम प—	रे म पधनि ध	म गरे नि़ सा
त ड़ऽ प त	हूंऽ ऽऽ मैं ऽ	तु म सोंऽऽ मि	ल नऽ ला गी
०	३	×	२

स्थायी :- दरस देहो मोहे श्याम अबकी
तन मन मेरो तुम पर वारो
प्यासी अंखियां तरसत लागीं ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा :- तुमरो ही दास मैं जनम जनम की
सुमिरन करत हूं नाम तुम्हारे
तड़पत हूं मैं तुमसों मिलन लागी ।।

आलाप

१.	सा – – –	– – सा रे	ग – म –	प – – –
	– – म प	ग रे – –	रे ग म प	ग म ग रे
	– – – रे	नि ध प म	प ग रे नि़	सा – – –
२.	सा – – –	– – रे सा	नि़ सा – –	– – सा रे
	नि़ सा नि़ ध़	सा – – रे	ग म प ग	म ग रे सा
३.	सा – रे –	– – ग रे	– – सा रे	ग म ग रे
	– – – सा	रे ग म प	ग म ग रे	– – रे प
	म प ग म	ग रे – –	ग रे सा नि़	सा – – –
४.	ग रे सा रे	नि़ सा रे ग	– म प –	– – – –
	म प – –	– ग म प	– – – रे	ग म प – –
	– रे ग सा	रे प – ध	ग म प ग	म ग रे नि़ सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५.	म प ग॒ रे	- - म प	ध नि॒ ध -	प - - -
	रे नि॒ ध नि॒	ध प ध, म	प ग॒ रे प	- - - म
	प ग॒ रे नि॒	ध ग म ग॒	रे सा रे नि़	सा - - -
६.	रे प म प	ग॒ रे, रे नि॒	ध नि॒ ध प	ध, म प ध
	नि॒ - सां -	- - - -	सां रें नि सां	नि॒ ध सां -
७.	सां - - -	- - सां नि	सां - नि॒ ध	- - म ग
	म ग॒ रे -,	ग॒ रे नि़ ध़	ग॒ रे नि॒ ध	ग॒ रे नि॒ -
	म प नि -	नि सां - -	- - रें सां	नि॒ ध सां -

तानें

८ मात्रायें :-

१. सारे ग॒म पध नि॒ध पम गम ग॒रे सासा ॥
२. मप गम ग॒रे सारे पम गम ग॒रे सासा ॥
३. मप धनि॒ मप निसां नि॒ध पम गम ग॒रे ॥
४. रेग॒ सारे पम पध नि॒ध पम गम ग॒रे ॥
५. सांरें ग॒रें सांनि, सांनि॒ धप मग, मग॒ रेसा ॥

१३ मात्रायें :-

६. सारे ग॒रे ग॒म पध नि॒सां नि॒ध पम गम
पम गम ग॒रे सारे निसा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७. धनि धप मप धनि सांरें ऋंरें सांनि धप
मप धप गम ऋरे सासा ॥

१६ मात्रायें :-

८. सारे ऋम पम गरे गम पध निध पम
पध निसां रेंऋं रेंसां निध पम गम गरे ॥

९. मप धनि धप, मप निसां, धनि सांरें गंरें
सांरें सांनि, धप, मप धप गम ऋरे सा— ॥

१०. सांनिसां निसां सांनिध मगम गम मऋरे
ऋरे सारे पध निसां निध पम गरे सासा ॥

राग आसावरी

स्थायी तीनताल

प	नि प)	म)	म) प)
पऋ मप सां सां	ऋ — म प	ग — रे सा	रे म प —
गुऽ निऽ य न	गा ऽ व त	रा ऽ ग आ	सा व री ऽ
०	३	×	२
ग रे ऋ नि	ऋ नि ऋ प	नि ऋ ग रे	रे प ग ग
ग ऽ ऋ नि	को ऽ म ल	नि ऽ ग ऽ	ब र जि त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म प रे म प मं	रें सां सां रें	ध प म प	ग ग रे सा
मा ऽ न त	स ब ज न	औ ऽ ड़ व	सं पू र ण
०	३	×	२

अंतरा

नि) ध प म प	नि) ध – सां –	गं रें सां रें	नि ध सां सां
वै ऽ व त	अं ऽ श ऽ	गं ऽ धा र	स ह च र
०	३	×	२
प नि ध प	म प ग ग	रे सा सा रे	नि ध सा सा
दि व स द्वि	ऽ प ह र	गा ऽ व त	गु नि व र
सा रे म प	ध – सां, सां	नि ध प म	ध – रे सा
०	३	×	२

स्थायी :- गुनियन गावत राग आसावरी
ध ध नि कोमल नि ग बरजित
मानत सब जन औड़व सम्पूरण ।।

अंतरा :- धैवत अंश गंधार सहचर, दिवस द्विपहर गावत गुनिवर
सारेमप ध–सां, सांनिधप मग–रेसा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राग आसावरी

स्थायी — तीनताल

(ध नि)	नि) नि) प)	म)	म) प) म
प म प सां	ध ध म प	ध – रे सा	रे म प प
सु मि र न	क रि ये ऽ	श्या ऽ म श्या	ऽ म ना म
०	३	×	२
म) प)			
रे म प ध	– रे सा रे	नि़ – ध़ ध़	सा सा सा सा
शु ऽ द्ध भा	ऽ व ध र	पा ऽ क चि	ऽ त्त क र
म) प)	नि)		
रे म प ध	म प ध सां	पध पगं रें सां	सां रें नि ध प
घ ड़ि प ल	छि न दि न	बाऽ ऽऽ व रे	मो रे म नऽ
	नि) नि) प)	म)	म) प) म
ध म प सां	ध ध म प	ध – रे सा	रे म प प
सु मि र न	क रि ये ऽ	श्या ऽ म श्या	ऽ म ना म
०	३	×	२

अंतरा

प) प)	नि नि		
म म प प	ध ध नि ध	ध सां – सां	– सां सां सां
सु र न र	मु नि गु नि	क हे ऽ बे	ऽ द वा णी
३	×	२	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि) नि) नि)			
ध ध ध सां	- सां सां रें	सांरें ध रें सां	सां रें नि धप
प र म स	ऽ त्म प र	ब्रम् ऽ ह क	ह त ज्ञा नीऽ
म) प)			म) प) प)
रे म पध मप	ध रेसा सा रे	नि ध सा -	रे म प म
र ह तऽ सऽ	म यऽ भ ज	ले ऽ ऽ ऽ	श्या ऽ म श्या
प ध म प	पध पध रें सां	सां रें नि धप	ध म प सां
ऽ म श्या म	नाऽ ऽऽ म ऽ	मो रे म नऽ	सु मि र न
३	×	२	०

स्थायी :- सुमिरन करिये श्याम श्याम नाम
शुद्ध भाव धर पाक चित्त कर
घड़ि पल छिन दिन बावरे मोरे मन ।।

अंतरा :- सुर नर मुनि गुनि कहे वेद बाणी
परम सत्य पर ब्रह्म कहत ज्ञानी
रहत समय भजले श्याम श्याम श्याम नाम मोरे मन।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलाप

१.	सा – – –	रे म प –	– – म प	ध – – सा
	रे म प ध ०	म प ध – ३	– सा रे नि़ ×	– ध़ सा – २
२.	सा – सा रे	नि़ ध़ – –	सा – म प	ग – रे म
	प – ध –	ध – म प	ध – सा रे	नि़ ध़ – सा
३.	रे म प –	– –, म प	ध – प –	ध म प, नि
	ध – प –,	रे म प सां	ध – म प	ध – रे सा
४.	म प ध –	– नि ध –	– म प –	रे म प नि
	ध – सा रे	नि़ ध़ – नि	ध – म प	ग – रे सा
५.	प – म प	ध – नि ध	मां – – सां	रें नि ध सां
६.	ध – म प	ग – सा रे	म प ध –	नि ध सां –
७.	सा रे नि़ ध़ ०	सा रे म प ३	ध मं रें सां ×	रें नि ध सां २
१.	सा – – –	– – नि़ ध़	सा – – रे	सा – – रे
	नि़ ध़ सा –	– रे म प	ग – – सा	रे नि़ ध़ सा
२.	सा रे म प	ध – – रे	म प ग –	– रे म प
	ध म प ध	– – रे प	ध – सा रे	नि़ ध़ सा –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३.	सा रे म प	ध - - -	ध ध म प	ग - रे म
	प ध - -	ध म रे म	प नि ध -	- - नि ध
	सां ध - म	प - ध -	सा रे नि ध	- सा - -
४.	रे म प नि	ध - नि ध	सां - - -	- - - -
	नि ध सां -	- - रें सां	रें नि ध -	सां - - -
५.	सां - - -	- - म प	ध नि ध -	सां - प ध
	रें सां रें नि	ध सां नि ध	म प ध -	सां - - -

तानें

८ मात्रायें :-

१. सारे मप धसां रेंसां नि॒ध॒ पम गरे सासा ॥
२. रेम पनि॒ ध॒ध॒ मप ध॒ग॒ रेसा नि॒ध॒ सासा ॥
३. सारेग॒ रेमप ध॒सां नि॒ध॒ पम ग॒रे सासा ॥
४. मप ध॒सां रेंग॒ रेंसां ध॒ध॒ मप ध॒ग॒ रेसा ॥

१२ मात्रायें :-

५. सारे मप ध॒प, मप ध॒सां रेंसां, ध॒ध॒ ग॒रें सांनि॒ ध॒प मग॒ रेसा ॥
६. सांनि॒ ध॒नि॒ ध॒प, मप ध॒सां रेंग॒ रेंसां नि॒ध॒ पम ग॒रे सानि॒ ध॒सा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६ मात्रायें :-

७. सारे मम रेम पप मप ध्रुध्र पध्र सांसां
ध्रसां रेंरें सांरें ग्रुंरें सांनि ध्रुप मध्र रेसा ॥

८. मप ध्रुनि ध्रुप मप मग्र रेसा रेम पध्र
मप ध्रसां रेंग्रं रेंसां निध्र पम ग्रुरे सासा ॥

९. सारे मप ध्रुप, मप ध्रसां रेंसां, ध्रसां रेंग्रं
रेंसां, निध्र पध्र मप ध्रसां निध्र पम ग्रुरे ॥

१०. सांरें ग्रुंरें सांनि ध्रुप मप ध्रसां, ध्रुप मप
ध्रसां, ध्रुप मप ध्रसां निध्र पम ग्रुरे सासा ॥

राग भैरवी

स्थायी तीनताल

		प)	(प			
प – नि	ध्रुप म	म प	ध्र – म	रे रे	सा सा	
भैं ऽ र	वी ऽ	रा नी	मा ऽ नी	स ब	गु नी	
×	२	३	×	२	३	
नि)सा)	म)					
ध़ नि़ सा	ग्र म	रे सा	रे ध्र म	ध्र नि	प –	
क र त	को ऽ	म ल	रे ग्र म	ध्र नि	को ऽ	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मध नि सां सां	गं रें	नि सां	नि ध प	म ग	रे सा
प्रा ऽ ऽऽ तः	स म	य रा	ग नी सं	पू र	नी ऽ
×	२	३	×	२	३

अंतरा

	नि	सां)			
म ध म	ध –	नि –	सां सां सां	सां नि	रें सां
म ध्य म	वा ऽ	दी ऽ	सु र स	म वा	ऽ दी
×	२	३	×	२	३
सां)	नि		म)		
नि – सां	ध –	प प	ग – म	रे ऽ	सा ऽ
मे ऽ ल	भै ऽ	र वी	पू ऽ र्वा	गां ऽ	दि ऽ
		नि)			
नि सा ध	प म	ध नि	गंमं रें सां	ध म	रे सा
गा ऽ य	गु नि	य न	अऽ ति सु	हा ऽ	नी ऽ
×	२	३	×	२	३

स्थायी :- भैरवी रानी मानी सब गुनी
करत कोमल रे ग म ध नि को
प्रातः समय रागनी सम्पूरनी ॥

अंतरा :- मध्यम वादी सुर समवादी, मेल भैरवी पूर्वा गांदि
गाय गुनियन अति सुहानी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी

स्थायी

तीनताल

सा ग॒ रे॒ सा	रे॒ नि॒ सा रे॒	म - म प	ग॒ म रे ग॒
प नि या भ	र न कैं से	जा ऽ ऊं स	खी री मैं ऽ
०	३	×	२
म) नि॒)			
ग॒ म ध॒ नि॒	सां रें॒ सां -	पध॒ पगं॒ रें॒ सां	सांनि॒ध॒प मग॒रे॒सा
बा ऽ ट घा	ऽ ट में ऽ	रोऽ ऽऽ क त	श्याऽ ऽऽ मऽ ऽऽ
०	३	×	२

अंतरा

म) नि॒)			
ग॒ म ध॒ नि॒	सां रें॒ सां सां	नि॒ नि॒ सां सां	नि॒ सां ध॒ ध॒
रा ऽ ह च	ल त रा ही	दे ख त दे	ऽ त गा रि
०	३	×	२
प गं॒ - रें॒	सां - ध॒ प	प नि॒ ध॒ म	ग॒ म रे सा
क हा ऽ क	रूं ऽ मो री	ए ऽ क ना	ऽ ही सु ने
०	३	×	२

स्थायी :- पनिया भरन कैसे जाऊं सखी री मैं
बाट घाट में रोकत श्याम ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा :- राह चलत राही देखत देत गारि
कहा करूं मोरी एक नाही सुने ।।

आलाप

१.	सा – – –	नि़ सा ध –	रे – सा –	म – ग म
	रे ग – सा	– रे सा –	– रे नि़ ध़	– नि़ सा –
	०	३	×	२
२.	ग – – –	सा रे सा –	नि़ सा ग म	ग – सा रे
	सा – नि़ सा	ध़ नि़ सा ध	म – ध म	रे – सा –
३.	म – – –	ध म – रे	ग सा रे सा	म – –, सा
	ध –, सा रे	–, ध़ नि़ सा	ध म प ग	म रे – सा
४.	नि़ सा ग म	प – –, ध	प – ध म	प, ध म ध
	प – ध म	– सा ध प	म रे ग सा	– रे सा –
५.	सा म ध म	प –, ग म	ध – प –,	ध प ध, म
	प ग म नि	ध – प –,	सा म नि ध	ग म सा रे

अंतरा :-

६.	ध म प, ग	म ध – नि	सां – – रें	सां – – –
७.	ध म ध नि	सां रें सां –	नि सां नि ध	सां रें सां –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८. सां – –, रें | नि प नि रें | सां – ध, ध | म रे सा सां |
० ३ × २

तानें

८ मात्रायें :–

१. सारे गम पध निसां सांनि धप मग रेसा ॥
२. निसा गम पध पम गम धप गम रेसा ॥
३. गम धनि सांरें निसां निध पम गरे सा– ॥
४. धम गम धनि रेंसां निध पम गम रेसा ॥

१२ मात्रायें :–

५. गम धप गम रेसा निसा गम पध निसां
निध पम गरे सासा ॥
६. सांनि धनि सांगं रेंसां निसांनि धनिध पधप
मपम गम रेसा ॥

१६ मात्रायें :–

७. निसा धम पम धम गम धनि सांनि धनि
धनि सांगं रेंसां निसां निध पम धरे सा– ॥
८. पध पम धम रेसा, निसा गम पध निसां
रेंसां निसां निध पम धम रेम सारे सा– ॥
९. धनि सांगं रेंगं सांरें निसां, निध पध निसां
रेंसां, निध पध पम, गम, धम रेसा निसा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मारवा

स्थायी — एकताल

मं	ग	नि़)	
ध मं ग	मं ग रे	ध़ – रे	सा – –
सु घ र	म धु र	मा ऽ र	वा ऽ ऽ
०	३	×	२
मं	ग	नि़)	
ध मं ग	मं ग रे	ध़ – रे	नि़ रे गमं ध–
सु घ र	म धु र	मा ऽ र	वाऽ ऽऽ ऽऽ
नि़)			
ध़ नि़ रे	ग मं ध	रें रें नि	मं ध ध
वि क र	त क र	रि ष भ	म ध्य म
मं ध मं	ध मं ग	रे – रे	रें – रें
पं ऽ च	म व र	ज ऽ क	र ऽ त
नि़)			
ध – रें	सां नि ध	मं ध मं	ग रे सा
षा ऽ ड़	व मा न	गा य सु	ज न वा
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

			नि								
ध	–	मं	ध	धमं	गरे	रें	रें	नि	ध	रें	सां
धं	ऽ	व	त	वाऽ	दीऽ	रि	ष	भ	सं	वा	दी
०			३			×			२		
						मं					
रें	नि	ध	मं	ग	रे	रे	ग	मं	म	रे	सा
था	ऽ	ट	मा	र	वा	उ	त्त	रां	गा	ऽ	दि
नि)	सा)		मं)	ध)		नि)	नि)				
ध	नि	रे	ग	मं	ध	ध	ध	रें	सां	–	सां
रा	ऽ	त	प्र	थ	म	प्र	ह	र	मा	ऽ	न
धनि	रें	गं	रें	सां	निरें	निध	मंग	गमं	धमं	गरे	निध सानि रेसा
गाऽ	ऽऽ	यऽ	सुऽ	जाऽ	नऽ	वाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
०			३			×			२		

स्थायी :– सुघर मधुर मारवा, विकृत कर रिषभ मध्यम
पंचम वरज करत, षाड़व मान गाय सुजनवा ।।

अंतरा :– धैवत वादी रिषभ समवादी, थाट मारवा उत्तरांगादि
रात प्रथम प्रहर मान, गाय सुजानवा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मारवा

स्थायी — तीनताल

रे			नि)
मं ग रे रे	– रे – सा	रेनि़ –नि़ – सा	ध़ – सानि़ रे
क र त सिं	ऽ गा ऽ र	गोऽ ऽरी ऽ च	ली ऽ ऽऽ ऽ
०	३	×	२
नि़)सा)	ध)		
ध़ नि़ रे ग	रे ग मं ध	मंध निरें नि ध	मं ग रे सा
श्या ऽ म मि	ल न को ऽ	रैऽ ऽऽ न अ	के ली ऽ ऽ
०	३	×	२

अंतरा

ग)			
रे ग मं ध	मंधनिसांसांसां	ध नि रें रें	नि निरें नि ध
दे ऽ ख त	देऽ ऽऽ ख त	च हुं दि स	पु लऽ कि त
०	३	×	२
ध नि रें गं	रें – नि ध	धनि रें नि ध	मं ग रे सा
मं ऽ ग ल	गा ऽ व त	साऽ ऽ री स	हे ऽ ली ऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थायी :- करत सिंगार गोरी चली
श्याम मिलन को रैन अकेली ॥
अंतरा :- देखत देखत चहुंदिश पुलकित
मंगल गावत सारी सहेली ॥

आलाप

१.	सा नि़ ध़ –	– – नि़ ध़	– – रे़ सा	रे़ नि़ ध़ –
	ध़ नि़ ध़ सा	नि़ रे़ नि़ ध़	– – नि़ ध़	रे़ – सा –
२.	सा नि़ ध़ नि़	रे़ – – ग	रे़ – – नि़	सा ध़ सा नि़
	रे़ – – रे़	ग म॑ ग रे़	– – ग रे़	नि़ ध़ – सा
३.	रे़ नि़ सा, ध़	सा नि़ रे़ –	ग – – म॑	ग – – रे़
	ग – नि़ रे़	ग – ध़ नि़	रे़ ग – रे़	– नि़ ध़ सा
४.	ग रे़ नि़ ध़	नि़ रे़ ग म॑	– –, ध म॑	– – ध म॑
	ग रे़ – –	ग म॑ – –	ध – म॑ ग	रे़ – नि़ ध़
	– – ध़ नि़	रे़ ग म॑ ध	– म॑ ग रे़	– नि़ ध़ सा
५.	ग रे़ नि़ ध़,	म॑ ग रे़ ग	म॑ ध – –	– नि ध –
	– – म॑ ध	– म॑ ग रे़	ग म॑ नि ध	– – ग रे़
	नि़ ध़ – नि	ध – म॑ ध	म॑ ग रे़ –	नि़ ध़ रे़ सा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६.	नि़ रे़ ग मं	ग रे़ ग मं	ध – मं ध	नि ध सां –
	रें नि ध –	मं ध मं ग	रे़ – ग मं	ध नि ध सां
७.	ग रे़ ग मं	ध –, मं ध	नि ध –, सां	ध –, रें –
	नि ध –, ध	नि रें नि ध	– गं रें नि	ध – सां –

तानें

८ मात्रायें :–

१. सा़नि़ ध़नि़ रे़ग मंध निरें निध मंग रे़सा ।।
२. ध़नि़ रे़नि़ ध़नि़ रे़ग मंध निध मंग रे़सा ।।
३. गरे़ गमं धनि रें नि ध़मं गरे़ नि़ध़ रे़सा ।।
४. धमंध मंगरे़ गमं ध़नि धमं गरे़ सा– ।।
५. ध़नि़ रे़ग मंध निरें गंरें निध मंग रे़सा ।।
६. धनिध निरें नि गंरें निध मंग रे़ग रे़सा ।।

१३ मात्रायें :–

७. गरे़ नि़ध़ नि़रे़ गमं मरे़, गमं धनि निध
मंध निरें निध मंग रे़सा ।।

८. रे़ग मंध मंग रे़नि़ ध़नि़ रे़ग मंध निरें
गंरें सांनि धमं गंरे़ सा– ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६ मात्रायें :-

९. धनि़ रेग मंध मंग, रेग मंध निरें निध,
मंध निरें गंरें निध सांनि धमं गरे सा- ॥

१०. धनि़ध निरेनि़ रेग रेगरे गमंग मंध
मंधमं धनिध निरें निध मंग रेग रेसा ॥

११. धध निरें निध, रेरे गमं मंग, नि़ध नि़रे
गमं धनि रें नि गंरें सांनि धमं गरे सा- ॥

६ मात्रायें :-

१. धनि़ रेग मंध धमं गरे नि़ध ॥
२. रेग मंध निरें रें नि धमं गरे ॥
३. गरे धनि़ रेग मंध मंग रेसा ॥
४. धमं रेग मंध रें नि धमं गरे ॥
५. रेग मंध निरें निध मंग रेसा ॥
६. गरे गमं धमं धमं गरे नि़ध ॥

१२ मात्रायें :-

७. धनि़ रेग मंग रेग मंध निध मंध निरें गंरें
निध मंग रेसा ॥

८. गरे सारे नि़सा नि़ध सानि़ रेसा गरे मंग धमं
निध मंग रेसा ॥

९. धमं गरे गमं रेग धनि़ रेग मंध निरें गंरें
निध मंग रेसा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०. निध निरे गंरे निध सांनि रेंनि धमं गमं गरे
निध सानि रेसा ।।

११. निध निरे गरे गमं धमं धमं धमं धनि रेंसां
निध मंग रेसा ।।

१२. निरे गमं धमं गमं धनि रेंनि धनि रेंगं रेंसां
निध मंग रेसा ।।

राग तोड़ी

स्थायी तीनताल

ग)मं)ध)		नि)	सा
रे ध मं ध	रे ध रे सा	ध – नि सा	ध रे ध ग
रे ग मं ध	वि क र त	तो ऽ ड़ी को	गा ऽ व त
०	३	×	२
ग)मं)			
रे ध मं ध	प प मं ध	मंध निसांनिरें धरें	सांनिधप मंधरेसा
दि व स द्वि	ऽ प ह र	साऽ ऽऽ धऽ तऽ	सुऽ रऽ साऽ तऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

प		नि	मं)									सां			
ध॒	–	मं	ध॒	ध॒	–	मं	ध॒	मंध॒	निसां	सां	रें	गं	रें	सां	सां
धैं	ऽ	व	त	गं	ऽ	धा	र	संऽ	ऽऽ	वा	द	मा	ऽ	न	त
०				३				×				२			
नि)सां)गं)															
ध॒	नि	रें	ध॒	मं	रें	गं	गं	धनिसांनिनिरें	गंरें	सांनिध॒पमंगरेसा					
सु	घ	र,स		र	ल	रू	प	सुऽ	ऽऽ	जाऽ	नऽ	सऽ	मऽ	झाऽ	तऽ
०				३				×				२			

स्थायी :- रे॒ ध॒ मं ध॒ विकृत तोड़ी को गावत
दिवस द्विपहर साधत सुर सात ॥

अंतरा :- धैवत गंधार संवाद मानत
सुघर सरल रूप सुजान समझात ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग तोड़ी

स्थायी — तीनताल

														(रे	
														ध	
												सा		कि	
रे	सा	नि	सा	(रे	नि										
				ध	-	-	नि	-	सा	-	रे	ध	रे	सा,	सा
र	पा	ऽ	क	रो	ऽ	ऽ	रे	ऽ	मो	ऽ	रे	इया	ऽ	म,	तु
३				×				२				०			
			मं	ध)						नि					
रे	ग	रे	ग	मं	ध	मंध	निसां	ध	पप	ध	मंग	रे	ग	रे,	ग
म	रे	ऽ	बि	न	ऽ	कौऽ	ऽऽ	न	ऽस	हा	रोऽ	ऽ	मे	रो,	कि
३				×				२				०			

अंतरा

														मं)	
														ध	
														रं	
			मं)									नि)			
-	ध	-	मंध	मंधनिसां			- सां	-	सां	नि	सां	ध	-	ध,	मं
ऽ	न	ऽ	दिऽ	नऽ		ऽऽ	ऽ मो	ऽ	ह	म	द	लो	ऽ	भ,	फं
३				×				२				०			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां		नि)	रे)
ध़ नि रें ग़ रें	सां – सांरें निसां	ध़ प म ध़	म रेग़ रे, ग़
स त जाऽ ऽ	त ऽ पऽ ड़ीऽ	हूं ऽ भ व	फे ऽऽ रो, कि
३	×	२	०

स्थायी :– कृपा करो रे मोरे श्याम
तुमरे बिन कौन सहारो मेरो ॥

अंतरा :– रैन दिन मोह मद लोभ
फंसत जात पड़ी हूं भव फेरो ॥

आलाप

१.	सा – – –	– – नि़ ध़	सा – – –	नि़ ध़ सा नि़
	रे – – ग़	रे – नि़ ध़	– नि़ म़ ध़	सा – – –
२.	सा – – –	नि़ सा – –	ध़ नि़ ध़ सा	– – नि़ म़
	ध़ – म़ नि़	ध़ सा नि़ रे	सा ग़ रे –	नि़ ध़ सा –
३.	सा – रे –	ग़ – – –	रे ग़ – –	ग़ रे ग़ –
	म ग़ म रे	ग़ – – ध़	नि़ सा रे ग़	रे नि़ ध़ सा
४.	सा रे ग़ म	रे ग़ रे म	ग़ प – –	– – म प
	म ध़ प –	प म ध़ –	म ग़ म, रे	ग़ म ध़ –
	प – – –	ध़ – म ग़	– – रे ग़	रे – सा –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५.	सा रे ग रे	ग म ध –	– – – –	प म ध –
	–, नि ध –	म ध प –	– –, रे ग	म ध नि, म
	ध – रे ग	प – –, ध	म रे ग रे	नि ध़ सा –
६.	ग रे सा रे	नि़ सा नि़ ध़	सा नि़ रे सा	ग रे ग म
	ध – –, नि	ध – –, नि	म ध प –	रे ग म ध
	– – रे ग	रे नि़ ध़ –	ध – म ग	रे ग रे सा
७.	सा रे ग रे	ग म रे ग	रे म ग प	म ध नि –
	– – – ध	नि – – म	ध प – म	रे ग म ध
	नि – – नि	ध – सां –	म ध प –	रे ग रे सा
८.	प – ग म	ध – म ध	नि ध सां –	– – – –
	नि सां ध नि	रें – गं रें	नि ध – नि	म ध सां –
९.	सा रे ग म	ध नि म ध	प – म ध	नि ध सां –
	– – रें नि	ध – सां –	रें गं रें –	नि ध सां –
१०.	सां नि ध नि	सां रें गं –	– – गं रें	गं – सां रें
	नि – रें गं	– – गं रें	गं मं रें –	गं रें नि ध
	सां – म ध	प – रे ग	रे – ग म	ध नि सां –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तानें

८ मात्रायें :-

१. सारे गमं धनि सांरें सांनि धप मंग रेसा ॥
२. सारे गरे गमं धनि सांनि धप मंग रेसा ॥
३. गरे गमं धमं धनि धप मंग रेग रेसा ॥
४. धनि सारे गरे, गमं धनि धप मंग रेसा ॥
५. पमं गरे गमं धनि सांनि धप मंग रेसा ॥
६. धनि सांरें गंरें सांनि धप मंग रेग रेसा ॥

१२ मात्रायें :-

७. निनि मंध निसां रेंगं रेंसां निसां, निध मंध पमं, रेग रेसा निसा ॥
८. गमं धमं गरे, सारे गमं धमं, गमं धनि सांनि धप मंग रेसा ॥
९. सांरें गंरें सांनि, धनि मंध निसां निध, मंध रेग मंप रेग रेसा ॥
१०. धनि सारे गरे, सारे गमं धनि सांरें गंरें सांनि धप मंग रेसा ॥

१६ मात्रायें :-

११. सारे गरे गमं धमं गमं धमं धनि रेंनि धनि रेंनि रेंगं रेंसां निध पमं गरे सासा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१२. निनिध़ ध़ध़ पमंग़ मंमंग़ ध़ध़ पमंध़
ध़ध़मं निनि ध़प मंग़ रेग़ रेसा नि़ध़सा ॥

१३. ध़ध़नि, मंमंध़, रेरे ध़मं ध़नि रें ग़ं रें सां
निध़ मंध़ निसां निध़ मंध़ पमं रेग़ रेसा ॥

१४. सारे ध़मं पमं ग़रे ग़मं ध़नि सांनि ध़प
मंध़ निरें ग़रें सांनि ध़प मंग़ रेग़ रेसा ॥

१५. ध़नि, मंध़ निरें ग़रें सांनि ध़प मंग़ रेग़
मंध़ निसां निध़ मंध़ पमं ग़रे ग़रे सा– ॥

राग पूर्वी

स्थायी तीनताल

– नि़रे़ गमं पमं	ध़मं ग – म	ग – ग मं	ग रे़ सा रे़
ऽ नऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ बो ऽ लो	मो ऽ से श्या	ऽ म ऽ तु
०	३	×	२
नि़, नि़रे़ ग मं	रे़ ग गमं प	मं ध़ नि मंध़	निसां रें़ निध़प मंग
म, जाऽ ऽ न	ऽ ग ईऽ ऽ	तु म रे मऽ	ऽऽ नऽ रंऽ गऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रेसा, निरे गमं पमं	धमं ग – म	ग – ग मं	ग रे सा रे
ऽऽ, नऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ बो ऽ लो	मो ऽ से श्या	ऽ म ऽ तु
०	३	×	२

अंतरा

			पध
			दूऽ
मं			
मंप ग – मंध	सां – सां मंध	निसां नि ध ध	प – प, मं
ऽऽ जो ऽ केऽ	सं ऽ ग नेऽ	ऽऽ हा ऽ ल	गा ऽ य, सो
३	×	२	०
	रें		
ध नि रें गं	रें सां – सां	रें नि ध –	प गम ग, मं
ऽ व त सु	ख नी ऽ द	वि स रे ऽ	मो हेऽ ऽ का
ग रे सा सा	निरेगमं प मंध	निसांरें निधपमंग	रेसा, निरे गमंपमं
ऽ हे ऽ क	रोऽ ऽऽ ऽ रंऽ	ऽऽ गऽ ऽऽ ढंऽ	गऽ, नऽ ऽऽ ऽऽ
३	×	२	०

स्थायी :– न बोलो मोसे श्याम तुम
जान गई तुमरे मन रंग ।।

अंतरा :– दूजो के संग नेहा लगाय, सोवत सुख नींद विसरे मोहे
काहे करो रंग ढंग ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पूर्वी

स्थायी — तीनताल

सा) मं) नि़ रे़ ग मं	पमं ध़ ध़ ध़	(प) – प प	मं ग म ग
पू ऽ र वी	केऽ ऽ सु र	गा ऽ य गु	नि ऽ व र
०	३	×	२
नि़ रे़ मं ग मं	पमं ध़ प प	मं ग रे़ सा	रे़ – नि़ सा
पू ऽ र वी	केऽ ऽ सु र	को ऽ म ल	रि ऽ ष भ
ध़ मंध़ सा सा	निरे़ गमं पमं ध़	मं ग म ग	ग मं ध़ नि
धै ऽऽ व त	दोऽ ऽऽ ऽऽ नों	म ऽ ध्य म	शु ऽ द्ध औ
– नि मं ध़	मंध़ निसां रें नि	ध़ प ध़ मं	प ग म ग
ऽ र सु र	रा ऽ ऽ त	प्र थ म प	ह र ऽ ऽ
०	३	×	२

अंतरा

ग मं ग मं	ध़मंध़निसांसां	नि सां – सां	रें रें सां सां
गं धा ऽ र	प्र धाऽ ऽऽ न	नि षा ऽ द	स ह च र
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे॒ं नि ध॒ प	मं ग म ग	मं ग रे॒ सा	सा रे॒ नि॒ नि॒
स ऽ ऽ न्धि	प्र का ऽ श	मा ऽ न त	गु नि व र
नि॒ रे॒ ग मं	ध॒ नि निरे॒ं गंरे॒ं	(सां)सां रे॒ं निध॒	प ग म ग
सु ग म स	र ल रूऽऽ ऽ	प पू रऽ वी	ठा ट क र
०	३	×	२

स्थायी :- पूर्वी के सुर गाय गुनिवर
कोमल रिषभ धैवत दोनों मध्यम
शुद्ध और सुर राल प्रथम पहर ॥

अंतरा :- गंधार प्रधान निषाद सहचर
सन्धि प्रकाश मानत गुनिवर
सुगम सरल रूप पूर्वी ठाट कर ॥

आलाप

१.	सा - - -	- - नि॒ रे॒	ग - - -	- - रे॒ ग
	प - - मं	ग - - म	ग - - रे॒	ग मं ध॒ -
	प - - मं	ग - म ग	- रे॒ मं ग	- रे॒ सा -
२.	सा - - -	- - नि॒ रे॒	सा - - -	ग - रे॒ -
	सा - - -	सा रे॒ नि॒ रे॒	ग - मं ग	प - मं ग
	- म ग -	ध॒ - मं ग	रे॒ ग रे॒ मं	ग रे॒ सा -

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३.	नि़ रे़ ग –	– – – –	रे़ ग नि़ रे़	सा – नि़ रे़
	ग – – –	मं ग प –	ग म ग –	ग मं रे़ ग
	नि़ रे़ ग मं	रे़ ग प –	ग म ग –	मं ग रे़ सा
४.	सा – रे़ नि़	– ध़ नि़ मं़	ध़ – प़ –	मं़ ध़ नि़ ध़
	सा – – नि़	रे़ ग – रे़	ग मं ग –	प – – –
	मं ग रे़ ग	मं ध़ प –	मं ग म ग	मं ग रे़ सा
५.	सा रे़ नि़ रे़	ग – रे़ ग	प – – मं	प – – ग
	प – मं ध़	प – – मं	ग – म ग	रे़ ग मं ध़
	प – – ध़	मं ग – म	ग – मं ग	रे़ – सा –
६.	नि़ रे़ ग मं	प – मं ध़	प – – –	मं ध़ नि –
	– – – ध़	नि – – मं	ध़ प – मं	ग म ग –
	ग मं ध़ मं	ध़ नि – –	नि ध़ सां –	नि – – रें
	नि ध़ – प	मं ग – म	ग – ध़ –	मं ग रे़ सा
७.	प – मं ग	मं ध़ नि ध़	सां – – –	– – – –
	नि रें नि –	ध़ – प –	मं ग म ग	– – रे़ मं
	ग प मं ध़	प – मं ध़	नि ध़ मं ध़	सां – – –
८.	नि़ रे़ ग मं	प – ग मं	ध़ नि सां –	नि – रें नि
	ध़ – सां –	– – – –	प ध़ मं प	ग म ग –
	मं ग रे़ सा	मं ग प –	ग मं ध़ नि	मं ध़ सां –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तानें

९ मात्रायें :-

१. नि़रे़ गमं पध़ मंप गम गरे़ मंग रे़सा नि़सा ॥
२. नि़रे़ गमं पमं ध़प मंप गम गरे़ मंग रे़सा ॥
३. नि़रे़ गमं ध़नि ध़प मंप गम गग मंग रे़सा ॥
४. नि़रे़ गमं ध़नि रें़नि ध़प मंग मग मंग रे़सा ॥
५. गरे़ नि़रे़ गमं पमं ध़प निनि ध़प गम ग-- ॥
६. मंग रे़ग मंप मंध़ निसां निध़ पमं गम ग-- ॥
७. ध़नि मंध़ निसां निरें़ गंरें़ सांनि ध़प मंग मग ॥

१२ मात्रायें :-

८. नि़रे़ गमं पमं, गमं ध़नि सांनि, ध़नि रें़नि
ध़प मंप गम ग-- ॥
९. पमं ध़प गम गरे़ मंग रे़सा नि़रे़ गमं
ध़नि ध़प मंग रे़सा ॥

१६ मात्रायें :-

१०. नि़रे़ गमं पमं गम गरे़ गमं ध़नि सांनि
ध़नि रें़नि ध़प मंप गम गरे़ मंग रे़सा ॥
११. गग रे़सा नि़सा, निनि ध़प मंप गंगं रे़सां
निसां ध़नि रें़नि ध़प मंग मग मंग रे़सा ॥
१२. ध़प मंप गम गग, निनि ध़प मंप गम
गग, गंगं रें़सां रें़नि ध़प मंप गम ग-- ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दस थाटों के आश्रित दस राग एक ही साथ

बिलावल तथा अल्हैया

धनि सां ध प	ग प म ग	गम रे ग म	प गम रे सा
शुड ऽ द्ध सु	र न सोंऽ	बिऽ ला व ल	गा ऽऽ वो ऽ
०	३	×	२
धनि सां ध प	ग प म ग	ग रे ग म	म नि ध प
शुड ऽ द्ध सु	र न सोंऽ	बि ला व ल,	को ऽ म ल
निध नि ध प	म ग म रे	गरे गप निधनिसां	धनि धप मगरेसा
निऽ ऽ षा द	सं ऽ ऽ ग	अल् ऽऽ हैऽ ऽऽ	याऽ ऽऽ गाऽ वोऽ
०	३	×	२

यमन तथा यमन कल्याण

नि)

ध़ नि़ गरे ग	गमं धनि प–	प -- प प	मं मंध्र मं ग
य ऽ मऽ न	राऽ ऽऽ ग ऽ	ती ऽ व र	म ऽऽ व्य म
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मंधनिसांधनिप	मं ग म ग	नि़ नि़ रे ग	पध मंप रे सा
द्दोऽ ऽऽ ऽऽ नों	म ऽ ध्य म	इ म न क	ल्याऽ नऽ को ऽ
०	३	×	२

खमाज

रे – नि़ सा	ग म ग म	गम प म प	ग म ग –
रि ऽ ष भ	ब र जि त	आऽ ऽ रो ऽ	ह न में ऽ
०	३	×	२
		ध) ग	
गम पध नि(सां)	नि – ध प	म पध (म) –	ग रे सा –
कोऽ ऽऽ म ल	नि ऽ षा द	अ वऽ रो ऽ	ह न में ऽ
निसागम,सागमप	गमपधमपधनि	मपधनिपधनिसां	सांनिधपमगरेसा
माऽ ऽऽ नऽ तऽ	खऽ ऽऽ माऽ जऽ	गाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	वोऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
०	३	×	२

भैरव

ध – मप गम	रे – सा सा	ध़ – नि़ सा	रे – सा सा
धै ऽ वऽ तऽ	रि ऽ ष भ	को ऽ म ल	क ऽ र त
०	३	×	२
सारे गम ग म	पधनिसां निसां	रें रें सां सां	सांनिधप मग रेसा
भैऽ ऽऽ र व	संऽ ऽऽ पू र	ण मा न त	गाऽ ऽऽ वोऽ ऽऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्वी

प ध म प	ग म ग ग	नि रे ग म	रे ग प –
पू ऽ र वी	के ऽ सु र		
०	३	×	२
म ध नि सां	रें नि ध प	ध म ग मग	म ग रे सा
		अं ऽ ग, दिऽ	खा ऽ वो ऽ
०	३	×	२

मारवा

ध – – म ग	रे – – नि ध	– रे – सा	– म रे ग
			मा र वा
०	३	×	२
मध – ध मध	निरें रें रें गंरें	रें – सां, धनिरें गं	रें सांनिधमगरेसा
अंऽ ऽ ग पंऽ	ऽऽ च म विऽ	धाऽ द, धाऽ ऽऽ	ड़ऽ वऽ माऽ नोऽ
०	३	×	२

बिलावल तथा अल्हैया

शुद्ध सुरन सों बिलावल गावो
कोमल निषाद संग अल्हैया गावो ॥

यमन तथा यमन कल्याण

यमन राग तीवर मध्यम दोनों मध्यम इमन कल्यान को ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खमाज

रिषभ बरजित आरोहन में, कोमल निषाद अवरोहन में मानत खमाज गावो ॥

भैरव

धैवत रिषभ कोमल करत, भैरव संपूरण मानत गावो ॥

पूर्वी

पूर्वी के सुर नि़ रे ग मं रे ग प – मं ध नि सां रें नि ध प अंग दिखावो ॥

मारवा

ध ऽ मं ग रे ऽ नि़ ध़ ऽ रे ऽ सा मारवा अंग पंचम विवाद षाड़व मानो ॥

राग यमन

स्थायी — **चौताल विलंबित**

				III		IV		II		VI	
				नि)		१,२,मोऽ					
प	—	प	ध	मं	धनि	प	—	मं	रे	ग	—
मो	ऽ	ह	न	मु	रऽ	ली	ऽ	वा	ऽ	रे	ऽ
०		३		४		×		०		२	
मं	रे	ग	—	नि़	ध़	नि़	—	ग	रे	सा,	नि
आ	ऽ	यो	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	बि	र	ज,	में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध	प	मं	ध	नि	रें	सां	–	प	प	रे	सा
ऽ	ऽ	ज	ग	त	उ	द्धा	ऽ	र	न	को	ऽ
०		३		४		×		०		२	

अंतरा

IV
II VI III

प	मं	ग	ध	मं	ध	सां	सां	–	नि	रें	सां
शं	ऽ	ख	च	ऽ	क्र	ग	दा	ऽ	धा	ऽ	री
×		०		२		०		३		४	
नि	रें	गं	रें	नि	मं	सां	सां	निध	नि	प	प
सु	र	न	र	मु	नि	क	ह	तऽ	जो	ह	रि
मं	ध	नि	प	–	रे	ग	रे	सा,	मं	ध	सां
क	हूं	मैं	श्या	ऽ	म	सुं	द	र,	प	ह	चा
–	–	नि	रें	सां	–	प	–	प	ध	मं	नि) धनि
ऽ	ऽ	ऽ	न	लो	ऽ	मो	ऽ	ह	न	मु	रऽ
×		०		२		०		३		४	

स्थायी :– मोहन मुरली वारे आयो है बिरज में
जगत उद्धारन को ॥

अंतरा :– शंख चक्र गदा धारी, सुर नर मुनि कहत जो हरि
कहूं मैं श्याम सुन्दर, पहचान लो ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी

स्थायी — धमार विलंबित

II	III (होऽ)	IV	
रें – नि ध	सां – सां सां प	नि ध	प म प
हो ऽ री ऽ	खे ऽ ल न च	ली बृ	ष भा नु
३	×	२	०
गरे म ग रेसा	गं – गं धं धंरें	मं रें	– सां –
नंऽ ऽ दि नीऽ	नं ऽ द नं दऽ	न सं	ऽ ग ऽ
३	×	२	०

अंतरा

III (प)	IV (१,२,सब)		II	
ध म – ध नि	सां –	सां प ध	नि गं रें सां	
स ब ऽ स खी	सं ऽ	ग हा ऽ	थ लि ए गु	
×	२	०	३	
रें नि सां गं गं	– मं	रें – सां	सां रें नि सां	
ला ऽ ल अ बी	ऽ र	के ऽ स	र रं ऽ ग	
ध ध नि ध प	ध म	रे – सा	रें – नि ध	
पि च का ऽ री	भ र	झो ऽ री	हो ऽ री ऽ	
×	२	०	३	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थायी :- होरी खेलन चली बृषभानु नन्दिनी
नन्द नन्दन संग ॥

अंतरा :- सब सखी संग हाथ लिए गुलाल अबीर
केसर रंग पिचकारी भर झोरी ॥

राग काफी

स्थायी — तीनताल (कोमल ग नि)

				रे नि रे ऽ
ध प म प	ग रे रेग सारे	प - - -	(प) - ग रे	
म न सु मि	र न कऽ रऽ	ले ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	
०	३	×	२	
रे नि सा रे	ग म प ध	नि सां नि ध	म प, रे नि	
श्या ऽ म ना	ऽ म घ ड़ि	प ल नि स	दि न, रे ऽ	
०	३	×	२	

अंतरा

				म म ब हु
प ध नि नि	निध नि सां -	सां सां नि रें	सां सां, ध नि	
त ज त न	सोंऽ ऽ ये ऽ	न र त न	पा यो, अ ब	
०	३	×	२	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रें रें रें पं	गं रें नि ध	म प ग –	रे –, रे नि
मू ल घड़ि	प ल यूं ही	न गं वा ऽ	वो ऽ, स ब
सा रे ग म	प ध धनिसांरें	गंरें गंरें सांनि धप	मग रेसा, रे नि
ही अ सा ऽ	र ह रिऽ ऽऽ	ऽऽ भऽ जऽ नऽ	बिऽ नऽ, रे ऽ
०	३	×	२

स्थायी :– रे मन सुमिरन कर ले
श्याम नाम घड़ि पल निसदिन ॥

अंतरा :– बहुत जतन सों ये नर तन पायो
अनमूल घड़ि पल यूं ही न गंवावो
सब ही असार हरि भजन बिन ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तिहाई कैसे करें ?

किसी भी स्वर मालिका अथवा बंदिश में तिहाई लेने के लिए साधारणतः बंदिश का मुखड़ा ही तिहाई के रूप में लिया जाता है। तिहाई का अर्थ है किसी भी स्वर समुदाय अथवा शब्द समुदाय को तीन बार गाते हुए सम पर आना।

तिहाई लेते समय जो भी स्वर अथवा शब्द समूह हों उन्हें तीन बार जोड़कर जितनी मात्रायें होंगी उतनी ही मात्रायें, बंदिश की जिस मात्रा पर सम है उस मात्रा के ठीक पीछे वाली मात्रा से पीछे की ओर गिन-गिन कर जहाँ पर गिनती समाप्त होगी वहीं से तिहाई शुरू होगी। तिहाई लेते समय सम की मात्रा अथवा सम के बाद वाली मात्राओं को यदि लेना है तो कुल स्वर समूह को दो बार जोड़ने के बाद तीसरी बार सम की मात्रा अथवा सम के बाद वाली मात्राओं को नहीं लेना है क्योंकि तीसरी बार तिहाई सम पर ही समाप्त हो रही है। दो उदाहरण देखिये :-

यमन राग की स्वरमालिका जो तीन ताल में निबद्ध है। इसका मुखड़ा तीसरी ताली अर्थात तेरहवीं मात्रा से शुरू होता हैं। मुखड़े को यदि तिहाई के रूप में लें तो मुखड़े के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस चार मात्राओं को तीन बार जोड़ेंगे। कुल १२ मात्रायें होंगी। इस १२ मात्रा की संख्या को सम के पीछे वाली मात्रा की संख्या से (जोकि १६वीं मात्रा की संख्या है) पीछे की ओर गिनकर आयेंगे तो १२ मात्रा की संख्या पाँच मात्रा पर समाप्त होगी।

अब मुखड़े की चार मात्रा की तिहाई यदि पाँचवीं मात्रा से शुरू करें तो तिहाई निश्चय ही सम पर आयेगी। अब मुखड़ा यदि पाँच मात्रा का हो तो :-

पाँच मात्रा तीन बार यानी ५×३=१५ मात्रायें। ये १५ मात्रा सम के पीछे वाली मात्रा से गिनकर दूसरी मात्रा पर समाप्त होती है। दूसरी मात्रा से ही पाँच मात्रा की तिहाई शुरू होगी। आठ मात्रा का मुखड़ा हो तो :-

आठ मात्रा तीन बार यानी ८×३=२४ मात्रायें। इन २४ मात्राओं की तिहाई ९ मात्रा से शुरू होगी। मुखड़े के साथ सम की मात्रा या सम के बाद वाली मात्रायें जोड़कर तिहाई किस मात्रा से शुरू होगी देखिये :-

मुखड़े की मात्रा संख्या चार तथा सम की मात्रा संख्या एक। दोनों जोड़कर पाँच मात्रा होंगी। इन पाँच मात्राओं की तिहाई करते समय नियमानुसार पाँच मात्रा को दो बार जोड़कर १० मात्रा तथा तीसरी बार सम की मात्रा को न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जोड़ने के कारण सिर्फ चार मात्रा लेनी हैं तो कुल १४ मात्रायें हुईं। इन १४ मात्राओं को सम की पीछे वाली मात्रा से गिनकर पीछे की ओर आयें तो गिनती तीसरी मात्रा पर समाप्त होगी। यह तिहाई तीसरी मात्रा से शुरू करें तो निश्चय ही सम पर आयेगी। सम के बाद एक मात्रा और लें तो:

मुखड़े की मात्रा संख्या = ४

सम तथा बाद वाली मात्रा, कुल = २

———

६ मात्रायें

इन ६ मात्राओं को दो बार जोड़ें तो १२ मात्रायें होंगी। तीसरी बार सिर्फ मुखड़े की मात्रायें यानी ४ मात्रायें जोड़नी हैं। तो कुल मात्रायें हुई १६। इन १६ मात्रा की संख्या को सम के पीछे वाली मात्रा से गिनकर पीछे की ओर आयें तो गिनती एक मात्रा पर समाप्त होगी तो यह तिहाई एक मात्रा अर्थात सम से शुरू होगी।

यहाँ पर ध्यान दीजिए कि ४ मात्रा की तिहाई १२ मात्रा से शुरू हो रही है तो ५ मात्रा की तिहाई के लिए २ मात्रा और पीछे आना पड़ता है। ६ मात्रा वाली तिहाई के लिए और २ मात्रा पीछे, ७ मात्रा की तिहाई के लिए २ मात्रा और पीछे आना है। इसी तरह किसी भी तिहाई में एक-एक मात्रा बढ़ाते जाइये तथा बिना गिने ही २ मात्रा पीछे से दूसरी तिहाई शुरू कर सकते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाते-बजाते समय बंदिशों में स्वरों की तिहाई लेकर सीधा सम में आने का सहज नियम :-

तीन ताल में

एक मात्रा की तिहाई १५वीं मात्रा से
दो मात्रा की तिहाई १२वीं मात्रा से
तीन मात्रा की तिहाई ९वीं मात्रा से
चार मात्रा की तिहाई ६वीं मात्रा से
पाँच मात्रा की तिहाई ३वीं मात्रा से

यहाँ पर ध्यान दीजिए कि प्रत्येक तिहाई में सिर्फ तीन-तीन मात्राओं का अन्तर है। अर्थात बढ़ती हुई मात्रा वाली तिहाई गाने-बजाने के लिए सिर्फ ३-३ मात्रा पीछे आना है।

इस तरह की तिहाई ताल की किस मात्रा से शुरू होगी जानने के लिए पहले जितनी मात्रायें हैं जैसे ५, इन पाँच मात्राओं को तीन बार जोड़कर जो कुल मात्रायें होंगी (जैसे १५) इनमें से एक मात्रा छोड़ देना है। अब इन १४ मात्राओं की संख्या को (तिहाई चाहे जो भी ताल में लेनी हो) ताल की शेष मात्रा से(जैसे तीनताल में १६वीं मात्रा "शेष" मात्रा होगी) गिनकर गिनती जहाँ पर समाप्त होगी (जैसे तीनताल में तीसरी मात्रा) तिहाई उसी मात्रा से शुरू होगी। एक तिहाई के स्थान निश्चित करने के बाद तीन-तीन मात्राओं के अंतर से कोई भी तिहाई गा सकते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वरों की कुछ ऐसी तिहाई भी गाते-बजाते हैं जो बंदिश के मुखड़े गाने-बजाने के लिए उसके ठीक पहली मात्रा पर तिहाई समाप्त करनी पड़ती है। इसके लिए यह नियम है कि जितनी भी मात्राओं की तिहाई लेनी है (जैसे ७ मात्रा की) उसे तीन बार जोड़कर जितनी कुल मात्रायें होंगी (जैसे २१) इन २१ मात्राओं को, मुखड़ा जिस मात्रा से शुरू है (जैसे १२ मात्रा) उसकी ठीक पीछे वाली मात्रा से गिनकर पीछे की ओर आना है तथा गिनती जहाँ पर समाप्त होगी (जैसे ७ मात्रा) वहीं से तिहाई शुरू होगी। इस प्रकार ७ मात्राओं की तिहाई ११ मात्रा पर समाप्त होगी तथा १२ मात्रा से मुखड़ा शुरू करना है। इसी प्रकार :-

तीन मात्रा की तिहाई ३ मात्रा से
चार मात्रा की तिहाई १६ मात्रा से
पाँच मात्रा की तिहाई १३ मात्रा से
छः मात्रा की तिहाई १० मात्रा से

यहाँ पर भी तीन-तीन मात्राओं के अंतर से आगे-पीछे आकर छोटी-बड़ी तिहाई गा-बजा सकते हैं—बार-बार जोड़ने तथा गिनने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन जो भी करें बहुत ध्यान से।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्रुपद तथा धमार की दुगुनादि निकालने की सबसे सहज तथा सरल विधि

सबसे पहले — कुल मात्रायें स्थायी अथवा अंतरे की+ मुखड़ा (सम के पहले की मात्रायें) जैसे स्थायी की कुल मात्रायें = ३६ + मुखड़ा = ६ कुल योग ४२

अब दुगुन करनी है तो २ से
तीगुन करनी है तो ३ से
चौगुन करनी है तो ४ से
छःगुन करनी है तो ६ से भाग करना है।

जैसे — दुगुन कहाँ से शुरू होगी, जानने के लिए कुल मात्रा संख्या ४२ ÷ २ = २१ मिलते हैं। अब इस २१ मात्राओं को ताल की शेष मात्रा अर्थात सम के पहली मात्रा (मात्रा संख्या १२) से गिनते हुए पीछे की ओर आना है और जहाँ गिनती शेष होगी उसी मात्रा से दुगुन शुरू होगी। ध्यान रहे गिनती सिर्फ पहली लाइन पर ही करनी है।

इसी तरह तिगुन भी इसी नियम द्वारा सरलतापूर्वक की जा सकती है। किन्तु चौगुन के लिए थोड़ी सी परेशानी है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्योंकि ४२ मात्रा को चार से भाग करने से ४२ ÷ ४ = १० $^{२}/_{४}$ संख्या मिलती है। यहाँ भी पहले की तरह १० मात्रा तक गिनते हुए पीछे की ओर आना है तथा $^{२}/_{४}$ के लिए गिनती जहाँ समाप्त हुई उसके बाद की मात्रा (११ मात्रा) में दो-अवग्रह अथवा १-२ कहने के बाद चौगुन शुरू करनी है। लयकारी के इस प्रश्न को और अच्छी तरह समझने के लिए :-

जब भी कुल संख्या को दुगुन-तीगुन वाली संख्या द्वारा भाग देने के बाद बेजोड़ संख्या जैसे – १० $^{२}/_{४}$, १२ $^{१}/_{३}$, १५ $^{१}/_{२}$ मिले तब इससे ये समझना चाहिए कि १० मात्रायें पूरी तथा ११ मात्रा के चार भाग के दो भाग यानी दो-अवग्रह + $^{२}/_{४}$ के २–४=१ मात्रा क्योंकि चौगुन में चार मात्रा=१ मात्रा।

इसी तरह १२ $^{१}/_{३}$ (तीन गुन में) से ये समझना चाहिए कि १२ मात्रायें पूरी तथा १३ मात्रा में दो-अवग्रह+१=३=१ मात्रा क्योंकि तीनगुन में तीन मात्रा बराबर एक मात्रा। दूसरे शब्दों में $^{२}/_{४}$, $^{१}/_{३}$, $^{१}/_{२}$ आदि संख्या की नीचे की संख्या के बराबर करने के लिए जितने अवग्रह लगते हैं उतने ही अवग्रह कहने के बाद दुगुन, तिगुनादि शुरू करनी है।

जैसे :- १० $\frac{SS२}{४}$, १२ $\frac{SS१}{३}$, १५ $\frac{S१}{२}$ आदि।

इसी नियमानुसार १० SS $^{२}/_{४}$ के अर्थ ११ मात्रा में दो-अवग्रह अर्थात १-२ कहने के बाद चार गुन, १२ SS $^{१}/_{३}$ के अर्थ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१३ मात्रा में दो-अवग्रह अर्थात १-२ कहने के बाद तीन गुन शुरू करनी है, १५ऽ½ से अर्थ है १६ मात्रा में एक-अवग्रह अर्थात केवल एक कहने के बाद दुगुन शुरू करनी है।

ध्रुपद-धमार की दुगुनादि लयकारी तिहाई के साथ निकालने की विधि

कोई भी तिहाई लेकर सम में आने तक जितनी मात्रायें होती हैं उन्हें दुगुनादि संख्या से भाग देकर जो संख्या आयेगी उस संख्या को दुगुनादि निकालने की विधि के अनुसार प्रयोग की जायेगी और उसके बाद जो स्थान निर्धारित होगा वहीं से तिहाई के साथ दुगुनादि शुरू होगी। सहज शब्दों में :-

१. स्थायी अंतरे की कुल मात्रायें+तिहाई की मात्रायें ÷ दुगुनादि संख्या।
यदि मुखड़े के शब्दों से तिहाई लेनी है तो कुल मात्राओं के साथ मुखड़ा नहीं जोड़ा जाएगा।

२. यदि मुखड़े को छोड़कर गीत के अन्य मात्रा या शब्दों से तिहाई लेनी है तो मुखड़े की मात्राओं को जोड़ना आवश्यक है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३. जब कभी कुल मात्रायें+तिहाई की मात्राओं में सम की मात्रा अथवा सम की आगे वाली मात्रायें ली जाती हैं तो इस अवस्था में सम की मात्रा या सम की बाद वाली मात्रायें तिहाई की मात्राओं के रूप में दो बार ही जोड़ी जायेंगी क्योंकि तीसरी बार में तिहाई स्वतः ही सम पर शेष हो रही है।

अब तीनों नियमानुसार तीन तिहाई लेते हैं :-

ध्रुपद—"मोहन मुरली वारे" राग-"यमन"

स्थायी की कुल मात्रायें=३६ और मुखड़े की मात्राओं से बनी तिहाई "मोहन" तीन बार तथा "मुर" अर्थात तिहाई की मात्रायें १२, और "मुर" की २=१४ मात्रायें। अब ३६+१४=५०÷२ (दुगुन के लिए)=२५ मात्रा।

२५ मात्राओं को सम की पहली मात्रा यानी १२ मात्रा से गिनकर पीछे की ओर आयें तो २५ मात्रा की संख्या १२ मात्रा पर ही शेष हो जायेगी और यहीं से तिहाई के साथ दुगुन शुरू होगी।

दूसरी तिहाई :- कुल ३६ मात्रायें। मुखड़े को छोड़कर गीत के अन्य शब्द : "जगत उद्धारन को" को दो बार जोड़ा जायेगा क्योंकि इसी शब्द को स्थायी की कुल मात्राओं के साथ पहले ही जोड़ा जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब कुल मात्रा ३६+२० (जगत उद्धारन को)+मुखड़ा ६ मात्रा=६२÷२=३१ मात्रायें ।

पूर्व नियमानुसार ये ३१ मातायें गिनें तो छः मात्रा पर शेष होती है । तिहाई के साथ दुगुन यहाँ पर छः मात्रा से शुरू होगी ।

तीसरी तिहाई :- कुल मात्रायें ३६ । सम की मात्रा को लेकर तिहाई करनी है तो "मोहन मुरली" दो बार अर्थात १४ मात्रायें तथा "मोहन मुर" एक बार यानी ६ मात्रायें । क्योंकि तीसरी बार "ली" सम पर आ जायेगी । अब ३६+१४+०६=५६ मात्रायें ÷२=२८ मात्रा । पूर्व नियमानुसार इन २८ मात्राओं को गिनें तो ९ मात्रा पर शेष होती हैं और इस तिहाई के साथ दुगुन ९ मात्रा से शुरू होगी ।

इस प्रकार बहुत सारी अच्छी-अच्छी तिहाई निकाली जा सकती हैं । तिहाई बनाते समय इस बात पर ध्यान रहे कि बंदिश का शब्द-अर्थ बिगड़ने न पाये ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुछ पारिभाषिक ज्ञान

संगीत :- गीत, वाद्य व नृत्य - इन तीनों कलाओं के समावेश को संगीत कहते हैं। गायन इन तीनों कलाओं में प्रधान है। "संगीत रत्नाकर" नामक ग्रन्थ में संगीत की परिभाषा निम्न प्रकार है :-

'गीतं, वाद्यं तथा नृत्यं त्रय संगीतमुच्यते'

संगीत पद्धति :- हमारे देश में दो प्रकार की संगीत पद्धतियां प्रचलित हैं : उत्तरी और दक्षिणी पद्धति। मद्रास व मैसूर आदि प्रान्तों में प्रचलित पद्धति को दक्षिणी अथवा कर्णाटक और देश के बाकी स्थानों में प्रचलित पद्धति को उत्तरी अथवा हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति कहते हैं।

स्वर :- जो कुछ भी हम सुनते हैं उसे ध्वनि कहते हैं। उसमें संगीत उपयोगी ध्वनि ही नाद कहलाते हैं। नाद असंख्य हैं किन्तु एक सप्तक के अन्तर्गत संगीत उपयोगी मुख्य २२ नाद माने गये हैं। उन्हें हम श्रुति भी कहते हैं। इन्हीं बाइस श्रुतियों के १, ५, ८, १०, १४, १८, २१ श्रुतियों को ही हम स्वर संज्ञा देते हैं, जिसे हम सा रे ग म प ध नि अथवा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षड़ज, रिषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद के नाम से जानते हैं। इन्हीं सात स्वरों को शुद्ध अथवा प्राकृत स्वर भी कहते हैं। उपरोक्त सात मुख्य श्रुतियों के अतिरिक्त ५ और श्रुतियां हैं (मुख्य २२ श्रुतियों के अंतर्गत ही) जिन्हें हम विकृत स्वरों के नाम से जानते हैं। इस प्रकार २२ श्रुतियों में कुल मिलाकर १२ स्वर निश्चित किये गये हैं।

शुद्ध अथवा प्राकृत स्वर :- एक सप्तक के अंतर्गत बारह स्वरों में से सात मुख्य स्वरों को शुद्ध स्वर कहते हैं। जैसे :- सा रे ग म प ध नि। दूसरे शब्दों में, स्वर जब अपने निश्चित स्थान पर रहते हैं तब उन्हें शुद्ध स्वर कहते हैं।

विकृत स्वर :- जो स्वर अपने निश्चित स्थान से थोड़ा उतर जाते हैं अथवा चढ़ जाते हैं, वे स्वर विकृत कहलाते हैं। जैसे :- पांच विकृत स्वर इस प्रकार हैं—रे॒ ग॒ मं ध॒ नि॒।

कोमल :- कोई स्वर जब अपनी शुद्धावस्था यानी निश्चित स्थान से नीचा होता है तब उसे कोमल स्वर कहते हैं। जैसे :- रे॒ ग॒ ध॒ नि॒ आदि।

तीव्र :- कोई स्वर जब अपनी शुद्धावस्था से थोड़ा ऊपर होता है तब उसे तीव्र स्वर कहते हैं। जैसे :- मं।

चल स्वर :- चल स्वर उसे कहते हैं जो स्वर प्राकृत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(शुद्ध) होने के साथ-साथ विकृत (कोमल अथवा तीव्र) भी होते हैं। जैसे :- रे ग म ध नि। इसमें रे ग ध नि कोमल होते हैं और मं तीव्र होता है।

अचल स्वर :- अचल स्वर उन्हें कहते हैं जो सदैव अपने निश्चित स्थान पर ही रहते हैं कभी विकृत नहीं होते हैं। जैसे :- सा और प।

सप्तक :- क्रमानुसार मुख्य सात शुद्ध स्वरों के समूह को सप्तक कहते हैं। एक सप्तक में बाईस श्रुतियां होती हैं। इन्हीं बाईस श्रुतियों में से सात शुद्ध अथवा प्राकृत और पांच विकृत (तीव्र, कोमल) स्वर मिलाकर कुल बारह स्वर हैं। सप्तक तीन प्रकार के हैं :- मंद्र, मध्य और तार सप्तक।

मध्य सप्तक :- जिस सप्तक में हम साधारणतः अधिक गाते-बजाते हैं उसे मध्य सप्तक कहते हैं अर्थात मूल सप्तक ही मध्य सप्तक है।

मंद्र सप्तक :- मध्य सप्तक के पहले का सप्तक, जो मध्य सप्तक से आधा होता है उसे मंद्र सप्तक कहतेहैं।

तार सप्तक :- मध्य सप्तक के बाद का सप्तक, जो मध्य सप्तक से दुगुनी ऊंचाई पर होता है उसे तार सप्तक कहते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मध्य सप्तक के स्वर :- सा रे ग म प ध नि
मंद्र सप्तक के स्वर :- नि़ ध़ प़ म़ ग़ रे़
तार सप्तक के स्वर :- सां रें गं मं पं धं निं

थाट :- सप्तक के १२ स्वरों में से क्रमानुसार मुख्य सात स्वरों के उस समूह को थाट कहते हैं, जिससे राग उत्पन्न होते हों। थाट को मेल भी कहते हैं। हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में मुख्य थाट कुल दस हैं :- बिलावल, यमन, खमाज, भैरव, पूर्वी, काफी, आसावरी, भैरवी, मारवा और तोड़ी।

राग :- कम से कम पाँच और अधिक से अधिक सात स्वरों की वह सुन्दर रचना जो कानों को अच्छी लगे वह राग कहलाती है। "अभिनव राग मंजरी" के अनुसार राग की परिभाषा इस प्रकार दी गई है : स्वर और वर्ण से विभूषित ध्वनि जो मनुष्यों का मनोरंजन करे राग कहलाता है।

वर्ण :- स्वरों के विभिन्न क्रम अर्थात चाल को वर्ण कहते हैं अथवा गायन की प्रत्यक्ष क्रिया को वर्ण कहते हैं। वर्ण चार प्रकार के हैं :- स्थायी, आरोही, अवरोही और संचारी वर्ण।

स्थायी वर्ण :- एक ही स्वर को बार-बार कहने को स्थायी वर्ण कहते हैं। सासासा रेरेरे गगग आदि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आरोही वर्ण : षड़ज से निषाद तक जाते हुए स्वरों को गाने या बजाने को आरोही वर्ण कहते हैं। सा रे ग म प ...

अवरोही वर्ण : निषाद से षड़ज तक वापस आने को अवरोही वर्ण कहते हैं। नि ध प म आदि।

संचारी वर्ण : जिसमें आरोह-अवरोह दोनों का मिश्रण हो उसे संचारी वर्ण कहते हैं। सारेग-मगरे आदि।

अलंकार :- नियमानुसार स्वरों की चलन को अलंकार कहते हैं। अलंकार को पलटा भी कहते हैं। जैसे :-
आरोह : सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां।
अवरोह : सांनिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा।

पकड़ :- वह छोटा स्वर-समुदाय जिससे किसी एक राग का बोध हो राग की पकड़ कहलाता है। जैसे : नि़रेग— रेमंग—(प) रे नि़रेसा— (यमन)।

जाति :- जाति उसे कहते हैं, जिससे राग में प्रयोग किये जाने वाले स्वरों की संख्या का बोध हो। एक राग में कम से कम पाँच और अधिक से अधिक सात स्वर प्रयोग किये जाते हैं। अतः संख्या की दृष्टि से राग तीन प्रकार के होते हैं। जैसे : पाँच स्वर लगने वाले औड़व जाति के,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छः स्वर लगने वाले षाड़व जाति के और सात स्वर लगने वाले सम्पूर्ण जाति के होते हैं। जैसे औड़व जाति का राग भूपाली, षाड़व जाति का राग मारवा और सम्पूर्ण जाति का राग भैरवी।

वर्ज स्वर :- जिन स्वरों का प्रयोग किसी विशिष्ट राग में या राग के आरोह-अवरोह में नहीं होता है वे वर्ज स्वर कहलाते हैं। जैसे भूपाली राग में 'म' और 'नि' वर्ज स्वर हैं अथवा आसावरी के आरोह में 'ग' वर्ज स्वर है।

वादी स्वर :- राग में प्रयोग होने वाले सभी स्वरों में जिस स्वर का प्रयोग सबसे अधिक होता है वह स्वर उस राग का वादी स्वर कहलाता है। जैसे यमन राग का वादी स्वर 'ग', भैरवी का 'म' आदि। वादी स्वर को राजा के साथ तुलना किया गया है।

संवादी स्वर :- राग में, जो स्वर वादी स्वर से कम किन्तु अन्य स्वरों की अपेक्षा अधिक प्रयोग किये जाते हैं संवादी कहलाता है। जैसे यमन राग का 'नि' स्वर और भैरवी का 'सा'। संवादी मंत्री के साथ तुलना किया गया है।

अनुवादी :- वादी-संवादी के अतिरिक्त राग में प्रयोग किये जाने वाले अन्य सभी स्वर अनुवादी कहलाते हैं। उदाहरण स्वरूप भैरवी राग में 'म-सा' के अतिरिक्त सभी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वर अनुवादी हैं। अनुवादी स्वर को प्रजा के साथ तुलना किया गया है।

विवादी स्वर :- विवादी स्वर उसको कहते हैं जिस स्वर के प्रयोग से राग की शुद्धता में हानि होती है पर कुशलता पूर्वक प्रयोग से राग में रंजकता बढ़ती है। अवश्य विवादी स्वर का प्रयोग राग में बहुत ही अल्प परिमाण से किया जाता है। जैसे :- भैरव राग में कोमल 'नि' और भैरवी में शुद्ध 'रे' आदि। विवादी स्वर को राग में शत्रु के रूप में रखा गया है।

आलाप :- किसी राग के स्वरों को विलंबित लय में विस्तार करने को आलाप कहते हैं। आलाप दो प्रकार से किया जाता है। 'अ'कार से और बोल से अथवा नोम तोम से।

तान :- किसी राग के स्वरों को द्रुत गति में विस्तार करने को तान कहते हैं। तान के कई प्रकार हैं : जैसे अलंकारिक, सपाट, छुट, वक्र आदि।

बोल आलाप या बोल तान :- जब गीत के शब्दों को लेकर आलाप अथवा तान करते हैं तब उसे बोल आलाप या बोलतान कहते हैं।

मुर्की :- द्रुत गति में तीन स्वरों को अर्द्धवृत्त बनाकर गाने की क्रिया को मुर्की कहते हैं। जैसे रेनिसा अथवा धमप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आदि। मुर्की लिखने का नियम : सा या प रेनि धम

कर्ण :- गाते-बजाते समय आगे अथवा पीछे के स्वरों को स्पर्श मात्र करने को कर्ण कहते हैं। कर्ण को स्पर्श-स्वर भी कहते हैं। कर्ण लिखने का नियम-ग, ग म रे आदि।

मीड़ :- किन्हीं दो स्वरों को इस प्रकार गाने या बजाने को मीड़ कहते हैं जिनके बीच में कोई रिक्त स्थान न रहे। मीड़ लिखने का नियम- सा-म या प-ग

वक्र स्वर :- गाते-बजाते समय जिस स्वर का प्रयोग सीधा न होकर टेढ़ा अर्थात घूमकर हो उसे वक्र स्वर कहते हैं। जैसे सारे साग रेम या निध सांनि रेंसां आदि।

खटका :- चार या चार से अधिक स्वरों की एक गोलाई बनाते हुए स्वरों के द्रुत प्रयोग को खटका कहते हैं। जैसे : रेसानिसा या पमगम आदि। जिस स्वर को खटका देना होता है उसे कोष्ठक से लिखा जाता है। जैसे-(म)

लय :- संगीत में समान गति को लय कहते हैं। लय तीन प्रकार के हैं : विलंबित, मध्य और द्रुत। लय जब धीमी रहती है तब विलंबित, जब साधारण रहती है तब मध्य और जब तेज रहती है तब उसे द्रुत लय कहते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मात्रा :- संगीत में समय नापने के लिये मात्रा बनाया गया है या ये भी कह सकते हैं कि गायन का समय नापने का माप या प्रमाण को मात्रा कहते हैं। दूसरे शब्दों में दो तालियों के बीच का समय एक मात्रा कहलाता है।

ताल :- विभिन्न मात्राओं के विविध समूहों को ताल कहते हैं। जैसे : एकताल, झपताल, तीनताल आदि।

विभाग :- सुविधा के लिये प्रत्येक ताल को कुछ छोटे-छोटे विभागों में विभाजित किया गया है,जिन्हें विभाग कहते हैं।

सम :- किसी भी ताल को दो प्रकार से दिखाया जा सकता है। एक तो ताली से, दूसरा हाथ के इशारे से। किसी भी ताल के प्रथम मात्रा पर पड़ने वाली ताली को सम कहते हैं। सम को लिखने के लिये 'x' चिन्ह प्रयोग करते हैं।

ताली अथवा भरी :- सम के अतिरिक्त ताल के अन्य विभागों के प्रथम मात्रा जिसको हाथ से आघात द्वारा ध्वनि उत्पन्न करके दिखाया जाता है उसे ताली अथवा भरी कहते हैं। जैसे तीनताल में दूसरी और तीसरी ताली।

खाली :- ताल के जिस विभागों के प्रथम मात्रा पर हाथ के आघात द्वारा ध्वनि न करके केवल हाथ हिला दिया जाता है उन्हें खाली कहते हैं। जैसे एकताल में दूसरे और चौथे विभागों के प्रथम मात्रा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ १४५ का शेष

राग काफी

रेगं सारे प –	पम धप नि प	ग रे – ग	सा रे नि़ सा
काऽ ऽऽ फी ऽ	राऽ ऽऽ ऽ ग	सु जा ऽ न	गा ऽ वो ऽ
०	३	×	२
रेग सारे प –	पम धप नि प	ग – मग पम	ग – सा रे
काऽ ऽऽ फी ऽ	राऽ ऽऽ ऽ ग	दो ऽ नोंऽ ऽऽ	गं ऽ धा र
नि धप म प	नि नि सां –	धनिसांरेंगंरेंसांनि	धप मगरेसानिसा
निऽऽ षा द	क र त ऽ	संऽ ऽऽ पूऽ रऽ	नऽ माऽ नोऽ ऽऽ
०	३	×	२

राग तोड़ी

गमं ध मंध प	सारे ग रेगसा	ध़ – नि़ सा	रे रे ग –
तोऽ ऽ ऽऽ ड़ी	राऽ ऽ गऽ नी	गा ऽ य स	ब गु नि ऽ
०	३	×	२
ध़ नि़ सा रे	ग रे ग –	रे ग मं ध	मं ध प –
मं ध नि सां	रें गं रें सां	धनिसांरें गंरें सांनि	धप मंग रेध रेसा
		संऽ ऽऽ पूऽ ऽऽ	रऽ नऽ माऽ निऽ
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग आसावरी

नि॒ ध॒ ग॒ रे	रे म प प	ग॒ रे सा रे	नि॒ ध॒ सा सा
नि॒ ध॒ ग॒ ऽ	को ऽ म ल	गं ऽ धा र	नि षा ऽ द
०	३	×	२
रे म प प	प नि॒ ध॒ प	प ध॒ म प	ग॒ रे म प
ब र जि त	आ रो ह न	में ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
	नि॒)		
प मं॒ रें सां	सां रें ध॒ प	सारेमपध॒सांनि॒ध॒	पध॒ मप ग॒ध॒ रेसा
आ ऽ सा ऽ	व री रा ग	औऽ ऽऽ ड़ऽ वऽ	संऽ पूऽ रऽ णऽ
०	३	×.	२

भैरवी

पध॒नि॒सांरें सांसां	रें नि॒ ध॒ ध॒	प नि॒ ध॒ म	ध॒ पमध॒ ग॒रे सा
कोऽ ऽऽऽ म ल	सु र न सों	भै ऽ र वी	रा ऽऽऽ गऽ नी
०	३	×	२
ध॒ नि॒ सा ग॒	रे सा मग॒ प	मं मं रें नि॒	ध॒ ध॒ सां सां
प्रा ऽ त स	म य केऽ ऽ	रा ऽ नी ऽ	मा नि गु नि
०	३	×	२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi